मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक पत्र

वर्ष : 3 | अंक : 03 | पृष्ठ : 60 | मूल्य : नि:शुल्क | इंदौर–उज्जैन | शनिवार 1 अक्टूबर 2022 | आश्विन/कार्तिक मास (8), विक्रम संवत् 2079 | इ. संस्करण

पांडव जब वन–वन भटक रहे थे तो भगवान श्री कृष्ण ने द्रौपदी को करवा चौथ के दिव्य व्रत के बारे में बताया था। इसी व्रत के प्रताप से द्रौपदी ने अपने सुहाग की लंबी उम्र का वरदान पाया 34

रामचरितमानस मात्र हिन्दुओं का ही ग्रंथ नहीं, युग विशेष का काव्य भी नहीं वरन् विश्वव्यापी सदैव सामयिक बनी रहने वाली कालजयी रचना है। तुलसीदास मात्रा कवि नहीं थे, वे युगद्रष्टा संत पुरुष थे..... 42

समय परमात्मा से भी महान है भक्ति साधना द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार कई बार किया जा सकता है, लेकिन गुजरा हुआ समय पुनः नहीं मिलता..... 25

दीपावली का पर्व हम सभी को सत्य कर्म, सद्भावना, मर्यादा एवं आपसी प्रेम के अतिरिक्त बाह्य एवं आंतरिक अंधकार को मिटाने का सुंदर संदेश देता है। यह एक लौकिक पर्व है। 36

नवरात्रि में मुख्यतः दुर्गा के तीन रूपों महालक्ष्मी–महाकाली–माँ सरस्वती को पूजते हैं। दुर्गा का अर्थ है दुर्ग के समान कठोर, शक्तिशाली व रहस्यमयी एवं शरणागत् को अटूट सुरक्षा देने वाली। 05

महात्मा गांधी स्वतंत्र भारत में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे वह एक ऐसा राज्य देखना चाहते थे जिसमें सभी समान हों, सभी को समान अधिकार हों। 13

अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक विजयदशमी का त्यौहार संपूर्ण विश्व को धर्म और सत्य के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा देता है। 26

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. शकुंतला कालरा (दिल्ली)

सह सम्पादक
डॉ. दिग्विजय शर्मा (आगरा)

उपसम्पादक
सुश्री इंदु सिंह ''इन्दुश्री'' (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?
क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज– कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनाएं आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2022

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह पूर्णतः निः शुल्क है।

रचनाएँ ई–मेल: **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

संपादकीय

डॉ. शकुंतला कालरा
संपादक (अध्यात्म संदेश)
एसोसियेट प्रोफेसर
मैत्रेयीकॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

वर्ष-दर-वर्ष समय गुज़रता जाता है लेकिन महत्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्ति और उनसे जुड़े प्रसंग इतिहास सदा याद रखता है। लोक-संस्कृति वह अजस्र धारा है, जो सदियों से प्रवाहमान है। यानि विभिन्न तीज-त्योहार व धार्मिक अनुष्ठान हर ऋतु हर माह में मनाए जाते हैं। जीवन तो सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों के बीच आस्था रखने वाला आलोक है। हमारी संस्कृति उत्सव-प्रिय संस्कृति हैं मनुष्य की इसी उत्सव-प्रियता के कारण पर्व, त्योहार का प्रादुर्भाव हुआ,जो आज भी उसी उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। अक्टूबर माह विशेष पर्व और त्योहारों का है। अक्टूबर का आरंभ शुक्र तारे के अस्त से हो रहा है साथ ही इस माह भद्रकाली जयंती, दुर्गाष्टमी, महानवमी, विजय दशमी (दशहरा), करवाचौथ, अहोई व्रत, दीपावली, अन्नकूट (गावर्धनपूजा) भैयादूज, हलछठ आदि बड़े त्योहार आ रहे हैं। ये सभी पूरे देश में बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं। इसी मास राष्ट्रीय पर्व, गांधी जयंती और श्री शास्त्री जयंती भी बड़े प्रेम व सौहार्द से मनाए जाते हैं।

लोकजीवन का विस्तार प्रकृति की गोद में हुआ है। इसलिए मनुष्य ने प्रकृति को ईश्वरीय सत्ता के रूप में स्वीकार किया है। उसने पेड़-पौधे, जल, अग्नि, सूर्य, चन्द, पृथ्वी आदि को उसी की सत्ता मानकर उसके प्रति उसका आस्था, विश्वास व श्रद्धा का भाव बना हुआ है। करवाचौथ में चाँद की पूजा होती है। करवाचौथ का व्रत पति की लम्बी आयु के लिए पत्नियों द्वारा किया जाता है। यह निर्जला रखा जाता है। शाम को चाँद देखने के बाद ही व्रत को खोला जाता है।

माह के शुरू में दो अक्टूबर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती है जिसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। दोनों महापुरुष लोकप्रिय नेता थे। लोकप्रियता उत्तरोत्तर वर्द्धित होती है। वह किसी पद, प्रभाव की मोहताज नहीं होती, जबकि प्रसिद्धि जीवन-काल में ही समाप्त हो जाती है। लोकप्रियता अर्जित नहीं की जाती यह लोक द्वारा प्रदत्त होती है। वह सामान्य पुरुष को महापुरुष बना देती है। इसी लोकप्रियता ने हमारे दोनों पूज्य नेताओं को महापुरुष बना दिया।

इसके एकदम बाद दुर्गाष्टमी है। इस दिन माँ दुर्गा के 8वें रूप यानि महागौरी की पूजा की जाती है। नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि की पूजा की शुरुआत 26 सितम्बर से होकर 4 अक्टूबर तक चलेगी। शारदीय नवरात्रों के नौ दिन आस्था और भक्ति के साथ भगवती की साधना के भी दिन माने जाते हैं। शास्त्रों की मान्यता है कि देवी इन नौ दिनों में पृथ्वी पर आकर अपने भक्तों को मनवांछित फल देती है। नवरात्रि के नौ दिनों में महादुर्गा के नौ स्वरूपों - शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंधमाता, कात्यायानी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री आदि माता की पूजा-अर्चना की जाती है। इसके बाद आती है महानवमी। यह त्योहार कन्या-पूजन के रूप में मनाया जाता है। कन्या हमारे यहां देवी का रूप मानी गई है। इसके एकदम बाद दशहरा आता है। यह हिंदुओं का पवित्र त्योहार है जो अश्विन मास के शुक्लपक्ष की दशवीं तिथि को मनाया जाता है। भगवान राम ने इसी दिन महाज्ञानी, महाशक्तिशाली लंकापति रावण का वध किया था तथा इसी दिन ही देवी दुर्गा ने नौ रात्रि और दस दिन के युद्ध के उपरांत महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी। यह त्योहार असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। रावण को दशानन कहते हैं। तुलसीदास के रामचरितमानस समेत कई ग्रंथों के अनुसार रावण के दस शीश छह शास्त्र और चार वेदों के प्रतीक हैं। रावण के दस शीश की और भी कई कहानियाँ प्रचलित हैं। दस शीश दस बुराइयों के प्रतीक हैं - काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, घमण्ड, ईर्ष्या, मन, चित्त और अहंकार आदि ये दस मन के विकार हैं। दीपावली के दो दिन पहले धनतेरस आता है इस दिन धन के देवता कुबेर और धन की देवी माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। दीपावली अर्थात् दीपों की पंक्ति। 14 वर्ष के वनवास के बाद श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी के सकुशल लौट आने की प्रसन्नता में पूरी अयोध्या दीपों की रोशनी से जगमग हो उठी थी। आज भी पूरे देश में यह त्योहार उसी रूप में मनाया जाता है। दीपावली शरद ऋतु में मनाया जाने वाला भारत का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण त्योहार है,जो कार्तिक मास की अमावस को मानाया जाता है। अमावस का अंधकार और उसे भेदता दीपों का प्रकाश प्रतीक है अंधकार पर प्रकाश की विजय का। त्योहारों की इस शृंखला में अगला त्योहार आता है गोवर्धन पूजा, जिसमें अन्नकूट भगवान को कई प्रकार के पकवानों के भोग लगाए जाते हैं। अगले ही दिन भैयादूज का त्योहार आता है जो बहन-भाई के पावन प्रेम के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। दीपावली के ठीक छठवे दिन छठ का पर्व आता है। छठ का व्रत सूर्य षष्ठी के रूप में मनाया जाता है जो तीन दिन चलता है। इसे भी निर्जला रखा जाता है और आखिरी दिन सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत पूरा किया जाता है। जीवन के विविध रंगों के साथ समय-समय पर आने वाले राष्ट्रीय और धार्मिक पर्व पूरे देश में जश्न का माहौल बनाते हैं। ये पर्व-त्योहार हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत भी होते हैं।

शक्ति आराधना का पर्व

नवरात्रि

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उ.प्र.

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमस्तस्यै: नमो नम: ।।

नवरात्रि का अर्थ है नौ रात्रियां यानी (रातें)। इन्हीं नौ रात्रियों व दस दिनों में पूरे भारत मे अलग अलग तरह से शक्ति आराधना की जाती है ।

नवरात्रि का पर्व हमारे देश में वैदिक काल से भी पहले से मनाया जाता है। इसकी मुख्य पुस्तक **'श्री दुर्गा सप्तशती'** ऋग्वेद का अंश मानी जाती है। ऋग्वेद में सभी देवी देवताओं का आवाहन ,पूजन व साधना पद्धतियां बताई गयी हैं । इसी क्रम में दुर्गा सप्तशती के मंत्रों के जप हवन पूजन द्वारा साधु सन्तव श्रद्धालु सभी शक्ति की आराधना करते हैं। नवरात्रि वर्ष में दो बार आते हैं। प्रथम चौत्र मास के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तिथि तक। इसी समय हिन्दू नव वर्ष व विक्रम संवत भी प्रारम्भ होता है। दूसरा नवरात्रि अश्विन यानी अक्टूबर माह में पितृ पक्ष के बाद प्रारम्भ होता है। इसे हम शारदीय नवरात्रि भी कहते है, क्योंकि इसी नवरात्रि से शरद ऋतु का आगमन भी होता है। ऐसा माना जाता है कि सर्व प्रथम श्री राम ने लंका युद्ध में रावण का वध करने के लिए चंडीदेवी का हवन पूजन एक सौ आठ नील कमल से किया था और देवी ने स्वयं प्रकट हो कर उन्हें विजय श्री का आशीर्वाद दिया था। इसी लिए इसे विजय पर्व या विजया दशमी भी कहते हैं। इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा के अनुसार आठवें मनु व सूर्य के पुत्र राजा सुरथ का राज्य शत्रुओं ने नष्ट कर दिया था। तब वे समाधि नाम के वैश्य के साथ मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में गए, उन्हें अपनी विपदा सुनाई। तब ऋषि मारकण्डेय ने उन्हें नवदुर्गा की उत्पत्ति, आराधना व शक्ति सिद्धि का मार्ग बताया।

जिसका संक्षिप्त सार ये है कि नव रात्रि की नौ रात्रियों में हम मुख्यत: दुर्गा के तीन रूपों महालक्ष्मी, महाकाली व महासरस्वती की पूजा अर्चना करते हैं। दुर्गा का अर्थ है दुर्ग के समान कठोर, शक्तिशाली व रहस्यमयी, एवं शरणागत को अटूट सुरक्षा देने वाली –

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी।।

(दुर्गा के 32 नामों के स्रोत से श्रीदुर्गासप्तशती)

नवरात्रि का ये उत्सव भारत के विभिन्न भागों में अलग अलग ढंग से मनाया जाता है। गुजरात में नवरात्रों में डांडिया व गरबा नृत्य पूरी रात चलता है। बंगाल में मुख्यत: शा.

रदीय नवरात्रि में महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति स्थापित कर सिंदूर खेला नृत्य व विशेष आरती द्वारा मनाया जाता है। उत्तर भारत में नवरात्रि कलश स्थापन, व्रत उपवास व पुरोहितों द्वारा हवन पूजन कर के अष्टमी व नवमी को कन्या पूजन के साथ मनाया जाता है। इसमें सात या नौ कन्याओं को वस्त्रों व आभूषणों से सजा कर उन्हें स्वादिष्ट भोजन कराया जाता है। जिसमें हलुआ पूरी खीर व चने होते हैं। 'कंगना कोई पहनाए कोई गेंदों के हार, मुकुट कोई पहनाए कोई फूलन करे सिंगार। नव दुर्गा के अलग अलग नाम व रूप हैं। प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चंद्रघंटा, चतुर्थ कुष्मांडा,पंचम स्कन्धमाता, षष्ठम कात्यायनी, सप्तम कालरात्रि, अष्टम महागौरी व नवमं सिद्धिदात्री।

भारत के प्राचीन ऋषियों ने दिन की अपेक्षा रात्रि को अधिक महत्व दिया। इसी कारण होलिका दहन, शिव रात्रि, व दीपावली, नवरात्रि जैसे उत्सव रात्रि में ही मनाने की परंपरा है। लेकिन इसका वैज्ञानिक तथ्य ये है कि दिन में सूर्य की किरणें आवाज की तरंगों व रेडियो एक्टिविटी को आगे बढ़ने से रोक देती है। उसी प्रकार मन्त्रों के जाप की विचार तरंगों में भी रुकावट पड़ती है। इसी कारण ऋषि मुनियों ने इस पूजा के लिए रात्रि से अधिक महत्व दिन का बताया है। उदाहरण के लिए जो आवाज दिन में दूर तक नहीँ जाती वही रात्रि में देर तक व दूर तक गूंजती है ।

एक धार्मिक मान्यता के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में माता दुर्गा धरती पर आती हैं, क्योंकि धरती उनका मायका है। शक्ति के धरा पर आने की खुशी में पूरे देश मे उत्सव मनाया जाता है। नवरात्रों में व्रत का आध्यात्मिक महत्व ये है कि पहले तीन दिन के व्रत से सतोगुण का शमन होता है। जिससे सत्व में वृद्धि से शरीर हल्का व ऊर्जावान हो जाता है। दूसरे तीन दिन व्रत से रजोगुण की निवर्त्ति होती है। जिससे अंतःकरण की शक्तियां जाग्रत हो कर उर्ध्वगामी होती है ।अंतिम तीन दिन में उपवास के द्वारा तमस पर विजय प्राप्त की जाती है। इसीलिए नवरात्रों को विजय पर्व भी कहा जाता है। अपने अन्तस् की व बाहरी बुराइयों को मिटा कर ही विजय पर्व मनाया जा सकता है।

नवरात्रों की नौ देवियां नारी जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को दर्शाती हैं। जैसे जन्म से बचपन तक नारी शैलपुत्री स्वरूपा होती है। फिर वह किशोरी ब्रह्मचारिणी का रूप लेती है। फिर वह चंद्रघंटा यानी पूर्ण युवती हो चुकती है। उसकी कांति व तेज चन्द्रमा के समान शीतल व आनंदमय होते हैं। अनेक शक्तियों, योग्यता व विद्वता से युक्त हो कर वही कुष्मांडा स्वरूप हो जाती है। स्कन्धमाता स्वरूप में वही नारी माँ के समान ममतामयी व बलशाली रूप धारण करती है। छान्दोग्य श्रुति के अनुसार भगवती की शक्ति से उतपन्न कुमार का नाम स्कंध हुआ और वे स्कन्धमाता कहलाई कात्यायन ऋषि की पुत्री कात्यायनी हुई जो सर्व कार्य सिद्धा थीं। वस्तुतः साधारण नारी भी अपनी सन्तान व परिवार के सभी कार्य सिद्ध करती है। सप्तम देवी कालरात्रि हैं जो सभी विघ्नों व विघ्नकर्ताओं का विनाश करती हैं। यहाँ तथ्य ये है कि पति व परिवार की राह में आने वाले विघ्नों व विघ्न कर्ताओं का प्रत्येक स्त्री कालरात्रि के समान ही विनाश करना चाहती है।

देवी का आठवां स्वरूप महागौरी का है जिसकी आराधना अष्टमी तिथि को की जाती है। महागौरी देवी अपने गौर वर्ण व वात्सल्यमयी स्वरूप के कारण सभी के लिए सुग्राह्य व सुलभ है। अब प्रौढ़त्व की दहलीज पा कर ज्यादातर नारी महागौरी स्वरूपा हो जाती है। ईर्ष्या द्वेष छल कपट इन सबसे ऊपर उठ कर वह जीवन में सभी का भला ही करती है। शिवत्व की अधिकता ही नारी को महागौरी बनाती है –

सँहार असुरों का यूँ किया, खेलती ज्यूँ खेल कोई,
माँ तेरी भक्ति के रंग से, शत्रुता तिरोहित हो गयी।

नवी देवी सिद्धि दात्री हैं,यानी जीवन के अंतिम पड़ाव पर आ कर सभी स्त्रियां सिद्धि दात्री स्वरूपा हो जाती हैं अपने पराये के भेदभाव के बिना सभी को अभीष्ट प्रदान करनेवाली नारी सिद्धिदात्री ही है। विश्वेश्वरि तुम विश्व का आधार हो, विश्वरूपा तुम विश्व पालनहार हो।

प्रिय पाठकों नौ दिन व्रत उपवास करके ही शक्ति आराधना का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता है। जिस तरह माता दुर्गा ने संसार से आसुरी वृत्तियों व बुरी शक्तियों को मिटा कर सबका कल्याण किया है, ठीक वैसे ही हमें भी अपनी आत्मिक व आध्यात्मिक शक्तियों को जाग्रत करना चाहिए। नवरात्रों में कन्या पूजन की परंपरा ये सन्देश देती है कि नारी शक्ति स्वरूपा है, नारी कासदैव व सर्वत्र सम्मान होना चाहिए। अगर हम अपने ही घर की बहू बेटियों को सम्मान नहीं देते तो कन्या पूजन की परंपरा सिर्फ लकीर पीटने के समान है। क्योंकि प्रत्येक नारी में दुर्गा का कोई न कोई रूप अवश्य निहित होता है।

दुर्गा सप्तशती में नारी जीवन की हर समस्या का समाधान निहित है। बुद्धि, विवेक, साहस, शौर्य व धैर्य जैसे गुणों का विकास शक्ति आराधना के इस पर्व से होता है। हमें औरों की अपेक्षा स्वयं को विवेकशील व परिष्कृत करना चाहिए–

मीरा से मन सीता सा तप, मैया दे दोनों अधिकार।

'अध्याय दशम दुर्गासप्तशती में जब शुम्भ का दूत देवी के सम्मुख शुम्भ से विवाह का प्रस्ताव रखता है तब वे किस चतुराई से जवाब देती हैं।

किम करोमि यद ना लोचिता पूरा, यो मेजयति संग्रामे
यो मे दर्पम व्यपोहति। सा मे भर्ता भविष्यति।

अर्थात : पराजित जो मुझे संग्राम में करे, अभिमान मेरा खन्ड खंड करे। बलवान मुझसे अधिक रहे, वह एक स्वामी मेरा रहे।

देवी का ये प्रत्युत्तर सन्देश है, समाधान है उन तमाम युवतियों के लिए जो छेड़खानी या बलात्कार का शिकार हो रहीं हैं। आज समय है कि सभी नारियां अपनी आंतरिक शक्तियों को जाग्रत करें और विषम स्थितियों में निर्भय हो कर विवेकपूर्ण ढंग से समस्या सुलझाएं भारत में देवी के इक्यावन शक्तिपीठ हैं जिन्हें सिद्ध पीठ भी कहा जाता है। नवरात्रों में इन शक्तिपीठों का दर्शन व पूजन करने से भी सभी प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं –

देवी के इक्यावन पीठाधार, करूँ प्रणाम सौ सौ बार।
सुखी हो सबका घर संसार, मिले सबको मैया का प्यार।।

जगजननी जगदंबिका

प्रीति मिश्रा
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।
माँ की कृपा से चलता, यह समुचित संसार।।

दुर्गा शोक विनाशिनी, काम क्रोध कर नाश।
झोली खुशियों से भरे, करती नहीं निराश।।
संतों को माँ तारती, करें असुर संहार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

कर जोड़े वंदन करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
मातभवानी कर कृपा, काटो सकल क्लेश।।
दुर्गा, काली रूप धर, आओ सिंह सवार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

काली का जब रूप धरे, काल भी डर जाय।
जैसा जिसका कर्म हो, वैसा ही फल पाय।।
एक हाथ त्रिशूल धरे, एक हाथ तलवार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

पान, सुपारी, नारियल, कंचन थाल सजाय।
मेवा, मिश्री और चना, मां को भोग लगाय।।
हलवा, पूरी, खीर है, माँ का प्रिय आहार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

बिंदी, टीका भाल पर, गल सोने का हार।
पावों मे पायल सजे , चुनरी गोटेदार।।
लाल महावर, चूड़ियाँ, लाल करें श्रृंगार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

अंधन को आँखें मिले, बांझन को संतान।
बालक को विद्या मिले, मिले अभय वरदान।।
वर मुद्रा वरदाती माँ, भरती है भण्डार ।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

करे सवारी सिंह की, आदिशक्ति जगदंब।
माँ भक्तों को तारती, करती नहीं विलंब।।
श्रद्धा के दो पुष्प से, करते हैं सत्कार।
जगजननी जगदंबिका, माँ जग का आधार।।

अष्ट चिरंजीवी वे आठ महा पुरुष जो अमर हैं

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

भारत में जब बड़े आशीर्वाद देते हैं तो सबसे आम आशीर्वाद होता है **'चिरंजीवी भवः'**। चिरंजीवी का अर्थ होता है चिरकाल तक जीवित रहना। इसे आम भाषा में अमर होना कहते हैं। वैसे तो लोग समझते हैं कि अमर का अर्थ होता है जो कभी ना मरे, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।

पुराणों में वर्णित अमर व्यक्तियों के विषय में कुछ लोगों में मतभेद है। कई लोग मानते हैं कि वे सात हैं जिन्हे सप्त चिरंजीवी कहा जाता है तो कुछ लोगो इन्हे आठ मानते हैं जिन्हे अष्ट चिरंजीवी कहा जाता है। सप्त चिरंजीवियों के विषय में एक श्लोक आता है –

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः।।

अर्थात : अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य एवं परशुराम सप्त चिरंजीवी हैं।

इसी श्लोक के आधार पर सप्त चिरंजीवियों का निर्धारण किया जाता है किन्तु वास्तव में ये श्लोक अधूरा है। इसके बाद का श्लोक इसे पूरा करता है। ये है –

सप्तैतान् स्मरेन्नित्यम् मार्कडेयम् तथाष्टम्।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः।।

अर्थात : इन सातों के नित्य स्मरण के साथ आठवें मार्कण्डेय का भी स्मरण करने से भक्त निरोगी और दीर्घायु बनता है।

इस श्लोक में जो महर्षि मार्कण्डेय को जोड़ा गया है उसी कारण इन चिरंजीवियों की संख्या आठ हो जाती है। इन दोनों श्लोकों को मिला दें तो ये इस प्रकार हो जाता है –

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्चैव सप्तैते चिरंजीविनः।।
सप्तैतान् स्मरेन्नित्यम् मार्कडेयम् तथाष्टम्।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः।।

जैसा कि मैंने पहले बताया, अमर होने का अर्थ ये नहीं कि वो कभी मरेगा ही नहीं। इन आठ व्यक्तियों में से अश्वत्थामा, व्यास एवं कृपाचार्य युगांतजीवी हैं, अर्थात वे वर्तमान चतुर्युग के कलियुग के अंत तक जीवित रहेंगे। अन्य पांच अर्थात बलि, हनुमान, विभीषण,

परशुराम एवं मार्कण्डेय कल्पान्तजीवी हैं, अर्थात उनकी आयु इनसे भी अधिक हैं और वे कल्प के अंत तक जीवित रहेंगे।

यहाँ ये भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सप्त या अष्ट चिरंजीवी दीर्घायु व्यक्तियों का एक समूह है जिसका विशेष महत्त्व है। अन्यथा संसार में और भी कई व्यक्ति हुए हैं जिनकी आयु इनसे भी अधिक मानी गयी है। जैसे कि महर्षि लोमश, काकभुशुण्डि, सप्तर्षि, मानसपुत्र इत्यादि।

अश्वत्थामा : इन्हे रूद्र का अंशावतार माना जाता है। ये महर्षि भरद्वाज के पौत्र और गुरु द्रोण के पुत्र थे। इनकी माता का नाम कृपी था जो कृपाचार्य की बहन थी। कहा जाता है कि ये अपने मस्तक पर एक दिव्य मणि के साथ ही जन्में थे। वो मणि इन्हे सदैव निरोगी और शक्तिशाली बनाये रखती थी। महाभारत में इनकी वीरता के विषय में बहुत विस्तार पूर्वक लिखा गया है। श्रीकृष्ण के अतिरिक्त ये एकमात्र ऐसे योद्धा थे जिनके पास नारायणास्त्र था। इन्हे कहीं अतिरथी तो कहीं महारथी कहा गया है। इन्हे अमरता का वरदान इनके पिता द्रोण ने दिया था। महाभारत के अंत में जब अश्वत्थामा और अर्जुन का युद्ध हुआ तो दोनों ने ब्रह्मास्त्र चला दिया। महर्षि व्यास और देवर्षि के कहने पर अर्जुन ने तो अपना ब्रह्मास्त्र वापस ले लिया किन्तु अश्वत्थामा को ये विद्या नहीं आती थी। उसने उस ब्रह्मास्त्र को उत्तरा के गर्भ पर चला दिया जिससे उसका पुत्र परीक्षित मृत पैदा हुआ। बाद में श्रीकृष्ण ने उसे जीवित किया। अश्वत्थामा के इस कृत्य पर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए। वे उसे मार तो नहीं सकते थे किन्तु उन्होंने उसकी मणि उससे छीन ली और उसे युगांत तक भटकने का श्राप दे दिया। कहीं-कहीं ऐसा लिखा है कि उन्हें ३००० वर्षों तक भटकने का श्राप मिला था।

बलि : ये दैत्यराज प्रह्लाद के पोते और विरोचन के पुत्र थे। अपने दादा और पिता की भांति ये भी महान विष्णु भक्त थे। इन्होने अपने प्रताप से देवताओं को स्वर्ग से च्युत कर दिया था और फिर वे स्वर्ग पर सदा के लिए अधिकार प्राप्त करने के लिए अपने गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से एक महान यज्ञ करने लगे। जब उस यज्ञ में अंतिम हविष्य पड़ने ही वाला था कि श्रीहरि ने वामन अवतार लेकर इनसे तीन पग भूमि का दान माँगा। ये महादानी थे इसीलिए अपने गुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी इन्होने उन्हें तीन पग भूमि देने की प्रतिज्ञा कर ली। बाद में वामनदेव ने विराट स्वरुप लेकर एक पग से पृथ्वी और दूसरे पग से आकाश को नाप लिया। तब महादानी दैत्यराज बलि ने उन्हें अपना तीसरा पग अपने शीश पर रखने को कहा। उनकी दानवीरता देख कर भगवान वामन अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तीसरा पग उनके शीश पर रख कर उन्हें पाताल तक धकेल दिया। साथ ही उन्होंने बलि को अनंतकाल तक पाताल का राज्य प्रदान किया। ऐसी मान्यता है कि वर्ष में एक दिन महाबली पृथ्वी पर आते हैं और उसी उपलक्ष्य पर केरल में ओणम का पर्व मनाया जाता है।

व्यास जी : ये महर्षि पराशर और सत्यवती की संतान थे। इन्हे भगवान विष्णु के २४ अवतारों में से एक माना जाता है। साथ ही महाभारत में इन्हे भगवान ब्रह्मा का भी अवतार कहा गया है। इनकी गिनती हिन्दू धर्म के सर्वकालिक महान ऋषियों में की जाती है। इन्होने ने ही १८ महापुराण और पंचम वेद कहे जाने वाले महाभारत की रचना की। कहते हैं कि महाभारत जैसी उत्कृष्ट रचना देख कर ब्रह्मदेव ने उन्हें अमरता का वरदान दिया था। इन्होने ही कुरुवंश की रक्षा की थी और यही धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं विदुर के जनक थे। यही नहीं, गांधारी ने भी अपने १०० कौरव इन्ही की कृपा से प्राप्त किये थे। इन्होने ही ब्रह्मा द्वारा रचित वेदों का वर्गीकरण किया और इसी कारण इन्हे वेदव्यास के नाम से जाना गया।

हनुमान जी : पवनदेव के औरस पुत्र हनुमान भी रुद्रावतार हैं। श्रीराम अवतार को सार्थक बनाने के लिए इन्होने २४वें कल्प के त्रेता में जन्म लिया था। ये श्रीराम के अनन्य भक्त थे। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण इनकी लीलाओं से भरा पड़ा है। पृथ्वी पर इन्होने वानर राज केसरी और अंजना के पुत्र के रूप में जन्म लिया। बलशाली तो ये ऐसे थे कि बचपन में सूर्यदेव को निगलने का प्रयास कर बैठे। उस समय उन्हें बचाने के लिए इंद्र ने इन पर वज्र प्रहार किया जिससे इनकी ठोड़ी टूट गयी और ये हनुमान कहलाये। अनेकों देवों से इन्होने वरदान प्राप्त किये और अजेय हो गए। ये वानरराज सुग्रीव के मंत्री थे और इन्होने ही श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता करवाई थी। माता सीता का पता लगाने के लिए इन्होने एक ही छलांग में १०० योजन समुद्र लाँघ लिया और अकेले ही सम्पूर्ण लंका को जलाकर लौटे। लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिए इन्होने पूरे पर्वत शिखर को ही उखाड़ लिया था। इन्हे अष्ट सिद्धि और नव निधि का वरदान प्राप्त है जिससे इन्हे कोई परास्त नहीं कर सकता। मनुष्यों, राक्षसों और देवताओं की तो बात ही क्या, श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ में इन्होने स्वयं भगवान शंकर के साथ युद्ध कर उन्हें संतुष्ट किया था। श्रीराम ने इन्हे कल्प के अंत तक राम कथा के प्रचार का आशीर्वद दिया था। कहते हैं कि कलयुग में गोस्वामी तुलसीदास ने भी बजरंगबली के दर्शन किये थे और उन्ही की प्रेरणा से उन्होंने श्री रामचरितमानस की रचना की।

विभीषण : ये महर्षि विश्रवा और कैकसी के पुत्र और महाबली रावण और कुम्भकर्ण के छोटे भाई थे। ये भी श्रीराम के अनन्य भक्त थे और सदैव उनका ही स्मरण करते रहते थे। ये सच्चरित्र और निर्मल हृदय थे और इन्होने सदैव रावण को उचित मार्गदर्शन देने का प्रयास किया। राक्षस कुल से विपरीत स्वाभाव के होने के कारण रावण ने इन्हे अपमानित कर लंका से निष्कासित कर दिया। बाद में ये श्रीराम की शरण में गए और श्रीराम ने इन्हे लंका का राजा घोषित किया। लंका युद्ध में इन्होने वानर सेना की बड़ी सहायता की जिससे श्रीराम ने रावण का वध किया और विभीषण को लंका का राज्य सौंपा। उन्होंने ने ही विभीषण को चिरंजीवी होने का वरदान भी दिया। कई स्थानों पर लिखा है कि जब रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण की तपस्या से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए तो उन्होंने रावण और कुम्भकर्ण को तो अमरता का वरदान नहीं दिया किन्तु विभीषण को प्रभु का सच्चा भक्त जान कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान दिया।

कृपाचार्य : ये महर्षि शरद्वान के पुत्र थे। शरद्वान का तप भंग करने के लिए इंद्र ने जानपदी नामक एक अप्सरा उनके पास भेजी जिससे उन्हें कृप और कृपी नाम के दो जुड़वाँ पुत्र-पुत्री प्राप्त हुए। तप भंग होने के कारण शरद्वान ऋषि ने उन दोनों को एक वन में

छोड़ दिए। उस वन से महाराज शांतनु ने इन दोनो को प्राप्त किया और इनका पालन पोषण किया। बड़े होने के बाद कृपाचार्य कुरुवंश के कुलगुरु के पद पर आसीन हुए और कृपी का विवाह द्रोणाचार्य से हुआ। कृपाचार्य कौरवों और पांडवों के प्रथम गुरु भी थे। कहा जाता है कि इन्होने अपने तप से अमरत्व को प्राप्त किया था और युद्ध में वे अवध्य थे। पितामह भीष्म ने इन्हे अतिरथी कह सम्बोधित किया था। महाभारत युद्ध की समाप्ति पर कौरव सेना के बचे तीन योद्धाओं में ये एक थे। अन्य दो अश्वत्थामा और कृतवर्मा थे। जब युधिष्ठिर राजा बनें तो उन्होंने पुनः कृपाचार्य को कुलगुरु के पद पर नियुक्त किया। अगले मन्वन्तर अर्थात सर्वाणि मनु के शासनकाल में कृपाचार्य सप्तर्षियों में से एक होंगे।

परशुराम : ये भगवान विष्णु के छठे अवतार थे और महर्षि भृगु के कुल में इनका जन्म हुआ। इनके पिता महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका थी। ये महर्षि विश्वामित्र के नाती थे। इन्होने अपने तप से त्रिदेवों को प्रसन्न किया और उनसे कई वरदान प्राप्त किये। महादेव ने इन्हे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया और सभी प्रकार के दिव्यास्त्र के अतिरिक्त **'विद्युतभि'** नामक एक विकराल परशु भी दिया जिस कारण ये परशुराम के नाम से प्रसिद्ध हुए। जब कर्त्यवीर्य अर्जुन और जमदग्नि में विवाद हुआ तो परशुराम ने युद्ध में सहस्त्रार्जुन का वध किया। बाद में उनके पुत्रों ने महर्षि जमदग्नि की हत्या कर दी। इससे परशुराम इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने २१ बार पृथ्वी से क्षत्रियों का समूल नाश कर दिया और सम्यक पंचक में उनके रक्त से पांच सरोवर भर दिए। बाद में महर्षि कश्यप ने उन्हें समझा-बुझा कर क्षत्रियों के प्राण बचाये। श्रीराम ने जब अवतार लिया तो उनका वास्तविक स्वरुप पहचान कर इन्होने संन्यास धारण किया। महाभारत में ये भीष्म, द्रोण एवं कर्ण के गुरु थे। हर कलियुग के अंत में जब कल्कि अवतार होता है तो भगवान परशुराम ही उनका गुरुपद सँभालते हैं।

मार्कण्डेय : ये भृगुवंशी विधाता के पौत्र और महर्षि मृकण्ड और मरुद्मति के पुत्र थे। ये अल्पायु थे और इनकी कुंडली के अनुसार इनकी मृत्यु केवल १६ वर्ष में होनी थी। ये जानकर मार्कण्डेय बहुत छोटी आयु से ही महादेव की आराधना करने लगे। जब ये १६ वर्ष की आयु के हुए तो इन्हे लेने यमदूत आये किन्तु इनके तेज को देख कर भयभीत हो गए। तब स्वयं यमराज इनके प्राण लेने आये। उन्हें आया देख कर मार्कण्डेय ने शिवलिंग को पकड़ लिया और महादेव का स्मरण करने लगे। तब यमराज ने अपना पाश इनके गले में डाला और इन्हे बलपूर्वक खींचने लगे। उसी समय मार्कण्डेय ने महामृत्युंजय मन्त्र की रचना की जिससे स्वयं भगवान शंकर वहां प्रकट हुए और यमराज के वध को ही उद्यत हुए। बाद में यमराज ने उनसे क्षमा याचना की और महादेव की कृपा से मार्कण्डेय चिरंजीवी बने। इन्होने ने ही उर्वशी का अभिमान भी भंग किया था। कहते हैं कि प्रलय के समय मार्कण्डेय सभी जीवों और वनस्पतियों के साथ सुरक्षित रहते हैं और प्रलय के बाद सबको पुनः स्थापित करते हैं। इनकी आयु बहुत अधिक बताई गयी है और इसी कारण लगभग सभी पुराणों में हमें **'मार्कण्डेयउवाच'** अर्थात 'मार्कण्डेय ने ऐसा कहा,' ये वाक्य अवश्य मिलता है।

माँ दुर्गा के दोहे

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

माता जगदम्बे नमन्, सदा झुका मम् माथ।
जननी तेरा नित रहे, मेरे सिर पर हाथ।।

नौ रूपों में आप तो, रहतीं हरदम भव्य।
रोशन तेरी दिव्यता, महिमा हर पल श्रव्य।।

साँचा है दरबार माँ, है कितना अभिराम।
जिसने भी श्रद्धा रखी, बनते उसके काम।।

मातारानी नेहमय, देती हैं आलोक।
सिंहवाहिनी की दया, करे परे हर शोक।।

नवरातें मंगल करें, शुभ करती हैं नित्य।
दिवस उजाला कर रहे, बनकर के आदित्य।।

ब्रम्हचारिणी माँ तुम्हें, बारंबार प्रणाम।
तुम से ही बनते सदा, मेरे बिगड़े काम।।

हाथ कमंडल तुम लिए, करतीं रहतीं जाप।
प्रबल शक्ति, आवेग है, प्रखर आपका ताप।।

संयम को मैं साधकर, शरण आपकी आज।
माता हे! सुविचारिणी, सब पर तेरा राज।।

माता हरना हर व्यथा,देना जीवनदान।
चलूँ धर्मपथ, नीतिपथ,कर पूरण अरमान।।

सदा मातु तुम में भरा, ज्ञान, भक्ति, तप, योग।
हरतीं हो तुम मातु नित, काम, क्रोध अरु रोग।।

जयंति पर विशेष

ईमानदारी और सादगी के प्रतीक थे शास्त्री जी

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र.

देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर को शारदा प्रसाद और रामदुलारी देवी के घर उत्तर प्रदेश में मुगलसराय शहर के पास रामनगर में हुआ था। नेहरू जी के निधन के बाद शास्त्री जी देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी के ईमानदारी और सादगी–पूर्ण जीवन के अनेक किस्से है –

पहला वाक्या जिक्र कर रहा हूं, जब शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री थे, एक बार उनके बेटे सुनील शास्त्री जी ने रात कही जाने हेतु सरकारी गाड़ी लेकर चले गए और जब वापस आए तो लाल बहादुर शास्त्री जी ने पूछा कहा गए थे, सरकारी गाड़ी लेकर इस पर सुनील जी कुछ कह पाते की इससे पहले लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि सरकारी गाड़ी देश के प्रधानमंत्री को मिली है ना की उसके बेटे को, आगे से कही जाना हो तो सरकारी गाड़ी का प्रयोग ना किया करो, शास्त्री जी यही नहीं रुके उन्होंने अपने ड्राइवर से पता करवाया की गाड़ी कितने किलोमीटर चली है और उसका पैसा सरकारी राज कोष में भी जमा करवाया।

हमारे देश में आजकल जन प्रतिनिधियों के परिजनों के साथ उनके करीबी लोग भी उन्ही के सरकारी गाड़ी में घूमते हैं अपने व्यक्तिगत कार्यो के लिए।

दूसरा वाक्या जिक्र कर रहा हूं, लाला लाजपतराय ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे गरीब देशभक्तों के लिए सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी बनायीं थी जो गरीब देशभक्तों को पचास रुपये की आर्थिक मदद प्रदान करती थी, एक बार जेल से उन्होंने अपनी पत्नी ललिता जी को पत्र लिखकर पूछा कि क्या सोसाइटी की तरफ से 50 रुपये की आर्थिक मदद मिलती हैं उन्हें, जवाब में ललिता जी ने कहा हाँ जिसमे से 40 रुपये में घर का खर्च चल जाता है। शास्त्री जी ये पता चलते ही बिना किसी देर किये सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी को पत्र लिखा कि मेरे घर का खर्च 40 रुपये में हो जाता हैं, कृपया मुझे दी जानी वाली सहयोग 50 रुपये से घटा कर 40 रुपये कर दी जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा देशभक्तों को भी आर्थिक सहयोग मिल सकें।

आज का युग में तो यदि जन प्रतिनिधियों के सैलरी बढ़ोत्तरी की बात हो तो क्या सत्ता पक्ष, क्या विपक्ष दोनों एक मत हो इस मांग पर अपना समर्थन दे देते हैं, भले ही राष्ट्रहित और समाज हित के मुद्दों पर ये लड़ते देखे जाए। ये भी नहीं सोचते आज के वर्तमान जनप्रतिनिधि की वह तो सरकारी पैसे से मौज से जी रहे है और देश का किसान, मजदूर इत्यादि गरीबी,

महंगाई और अभाव की जिंदगी जी रहे हैं।

किस्सों के दौर में आगे चलते है तो एक किस्सा और जुड़ा है शास्त्री जी से, शास्त्री जी जब प्रधानमंत्री थे और उन्हें मीटिंग के लिए कही जाना था। जब वह कपड़े पहन रहे थे तो उनका कुर्ता फटा था जिसपर परिजनों ने कहा आप नया कपड़ा क्यों नहीं ले लेते हैं। इस पर पलट कर शास्त्री ने कहा की मेरे देश के अब भी लाखों लोगो के तन पर कपड़े नहीं है, फटा हुआ तो क्या हुआ इसके ऊपर कोट पहन लूंगा, और फटा कपड़ा इस तरह कुछ दिन और काम में आ जायेगा।

ऐसे थे हमारे शास्त्री जी, आज के जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों के सूट लाखों में आते हैं इन्हे इससे फर्क नहीं पड़ता की देश के लाखों लोगो की वार्षिक आय भी नहीं होगी लाखों रुपये।

कथनी और करनी में समानता रखते थे शास्त्री जी, बात सन 1965 का जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुंच गयी थी। घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्धविराम की अपील की उस समय हम अमेरिका की पीएल–480 स्कीम के तहत हासिल लाल गेहूं खाने को बाध्य थे हम भारतीय। अमेरिका के राष्ट्रपति ने शास्त्री जी को कहा कि अगर युद्ध नहीं रुका तो गेहूं का निर्यात बंद कर दिया जाएगा। उसके बाद अक्टूबर 1965 में दशहरे के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में शास्त्री जी ने देश की जनता को संबोधित किया। उन्होंने देशवासियों से एक दिन का उपवास रखने की अपील की और साथ में खुद भी एक दिन उपवास का पालन करने का प्रण लिया। देश के सीमा के रक्षक जवान और देश के अंदर अन्नदाता के लिए जय जवान, जय किसान का नारा दिया।

10 जनवरी 1966 को ताशकंद में भारत के प्रधानमंत्री शास्त्री जी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के बीच बातचीत करने का समय निर्धारित थी। लाल बहादुर शास्त्री और अयूब खान तय किये गये निर्धारित समय पर मिले। बातचीत काफी लंबी चली और दोनों देशों के बीच शांति समझौता भी हो गया। ऐसे में दोनों मुल्कों के शीर्ष नेताओं और प्रतिनिधि मंडल में शामिल अधिकारियों का खुश होना उचित था। लेकिन उस दिन की रात शास्त्री जी के लिए मौत बनकर आई। 10–11 जनवरी के रात में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की संदिग्ध परिस्थितों में मौत हुई। ताशकंद समझौते के कुछ घंटों बाद ही भारत के लिए सब कुछ बदल गया। विदेशी धरती पर संदिग्ध परिस्थितियों में भारतीय प्रधानमंत्री की मौत से सन्नाटा छा गया। शास्त्री जी की मौत के बाद तमाम सवाल खड़े हुए, उनकी मौत के पीछे साजिश की बात भी कही जाती है, क्योंकि, शास्त्री जी की मौत के दो अहम गवाह उनके निजी चिकित्सक आर एन चुग और घरेलू सहायक राम नाथ की सड़क दुर्घटनाओं में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई तो यह रहस्य और गहरा हो गया।

देश के नागरिकों को चाहिए की शास्त्री जी के मौत की निष्पक्ष जांच की मांग करें सरकार से, यही शास्त्री जी के प्रति देश वासियों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

नारी शक्ति को नमन

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
उत्तर प्रदेश

नारी के जीवन में, हमें दिखते विभिन्न रंग,
सदैव साथ निभाती, रहकर पुरुष संग–संग।
ममतामयी रूप धरकर, जन्मदात्री माँ बन,
पालनहार माँ प्रेरणा दे, हम जीत लेते जंग।।

बहन बन कर नारी, हमें रक्षा धर्म सिखाती,
संगिनी बनकर जीवन भर, साथ निभाती।
बेटी बनकर कुल का, नाम करती है रोशन,
घर के आँगन को बेटी, फूलों–सा महकाती।।

नारी जीवन का हर रुप लगे सुरभि–सलोना,
नारी से हमारे घर का, सुरभित हो हर कोना।
संस्कार, सभ्यता एवं संस्कृति की नारी पर्याय,
नारी दमक के आगे, फीके लगते चांदी–सोना।।

नारी शक्ति को हम, आंके कदापि नहीं कम,
सर्वत्र अब नारी, दिखा रही अपना दम–खम।
ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, राजनीति या खेल हो,
सफल हो रही नारियाँ, स्थितियाँ भले विषम।।

नारी का हमें करना चाहिए, दिल से सम्मान,
श्रम से मुश्किलों को, नारी बना रहीं आसान।
उनके धैर्य, साहस और शक्ति को करूँ नमन,
उन्हें उड़ने के लिए दें, हम पूरा–पूरा आसमान।।

जयंति पर विशेष

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के संत सिपाही

महात्मा गांधी

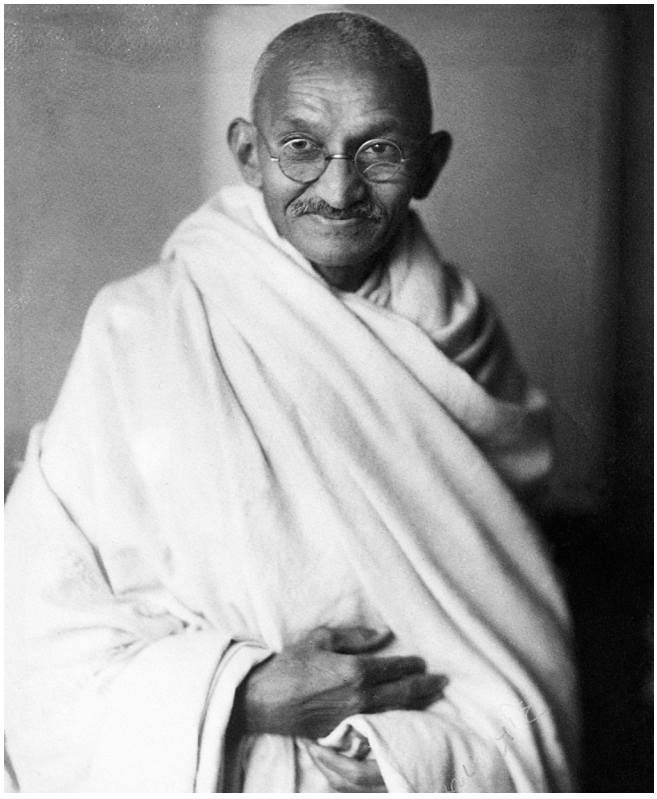

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

वैसे तो हर वर्ष अक्टूबर माह का महत्व इस बात में है कि यह माह त्योहारों का माह होता है। बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक विजय दशमी दशहरा इसी माह में मनाया जाता है तो दीपों का त्योहार दिवाली भी इसी माह में आता है। अगर हम वर्ष 2022 के अक्टूबर माह को देखें तो विजय दशमी दशहरा ऐसी माह में 5 अक्टूबर को है तो दिवाली 24 अक्टूबर को और भैया दूज 26 अक्टूबर को है। त्योहारों के अलावा, इस माह का महत्व इस बात में भी है कि भारत मां के दो महान सपूत महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती 2 अक्टूबर को ही मनाई जाती है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को ऐसी दिशा दे कर एक अनूठा इतिहास रच दिया था कि जिस अंग्रेजी साम्राज्य में विश्व में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, अपने अहिंसक असहयोग आंदोलन से महात्मा गांधी ने उनका भारत से बोरी बिस्तर गोल कर दिया और अंग्रेजों को भारत को स्वतंत्रता प्रदान करनी पड़ी। अभी तक के विश्व इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ था।

भारत मां के इस सपूत का जन्म 2अक्तूबर, 1869 में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। वह इंग्लैंड से कानून की शिक्षा प्राप्त कर वकील बन गये और वकालत के सिलसिले में उन्हें दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा और उन्हें वहां आरम्भ से ऐसी अप्रिय स्थितियां देखनी और झेलनी पड़ी कि वे वहां की अत्याचारी व्यवस्था के विरोध में कूद पड़े। उन्होंने जब वहां प्रवासी भारतीयों की दशा देखी तो तभी से उन्होंने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आंदोलन शुरू कर दिया और लगभग वह बीस वर्ष तक वहां रहे, तब तक उनका जीवन आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका था और जब वे भारत लौटे तो यहां भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए उन्होंने स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों से जो आजादी दिलाई, वह किसी अस्त्र शस्त्र से नहीं, बल्कि असहयोग आंदोलन और अहिंसा के माध्यम से दिलाई। यद्यपि भारत के अनेक स्वतंत्रता सेनानी उनसे इस बात से सहमत नहीं थे कि आजादी अहिंसा के माध्यम से आ सकती है परंतु सच्चाई और अहिंसा

में महात्मा गांधी का इतना अटूट विश्वास था कि उन्हें उनके इस लक्ष्य से कभी कोई नहीं डिगा सका। जब चौरी – चोरा कांड हुआ तो महात्मा गांधी ने उस हिंसक घटना से आहत होकर उस समय किए जा रहे आंदोलन को ही वापस ले लिया जिसके कारण उनसे कई स्वतंत्रता सेनानी नाराज हो गये किंतु वह अपने फैसले से टस से मस नहीं हुए। उसी असहयोग आंदोलन के कारण गांधी जी को अंग्रेजी सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। 10 मार्च, 1922 को उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और इसमें उन्हें 6 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई और उन्हें जेल भेज दिया गया। इस सजा में से उन्होंने 2 वर्ष ही जेल में बिताए थे कि उन्हें फरवरी 1924 में आंतों के ऑपरेशन करवाने के लिए रिहा कर दिया गया।

इस बीच इंडियन नेशनल कांग्रेस में वैचारिक मतभेद के कारण विभाजन हो गया। एक दल का नेतृत्व चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू कर रहे थे और दूसरे दल का नेतृत्व चक्रवर्ती और सरदार पटेल करने लगे। इसके अलावा, महात्मा गांधी ने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध तथा हिंदू और मुसलमानों के बीच वैमनस्य और हिंसा के कारण कई बार आमरण अनशन किया।

यहीं नहीं, महात्मा गांधी का अहिंसक आंदोलन केवल अंग्रेजी साम्राज्य के विरोध में नहीं था उन्होंने समाज में फैली अस्पृश्यता, शराब,अज्ञानता और गरीबी के विरुद्ध भी सत्याग्रह छेड़ दिया। वे दिसंबर, 1928 आते आते अंग्रेजों से स्वराज की मांग रखने के लिए वातावरण तैयार कर रहे थे। कोलकाता में कांग्रेस के एक अधिवेशन का आयोजन किया गया जिस में एक प्रस्ताव पारित कर अंग्रेज सरकार से भारतीयों को स्वराज प्रदान करने की मांग की गई। अंग्रेजों से उसकी कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर महात्मा गांधी के नेतृत्व में कई आंदोलन चलाते चलाते उनका चरम जा कर 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में पूरा हुआ जिसमें जन जन ने हिस्सा लिया और जल्दी ही अंग्रेज हुक्मरानों को अहसास हो गया कि अब भारत में और अधिक समय तक राज करना मुमकिन नहीं होगा और भारत 1947 में आजाद हो गया।

महात्मा गांधी ने देश को आजाद कराने के लिए हमेशा अहिंसा का सहारा लिया और अहिंसा के बल पर ही देश को आजाद कराया। साथ ही सत्य के इस अटूट आग्रही ने देश में सांप्रदायिक सद्भाव बनाने के लिए भी अथक प्रयास किए यहां तक कि जब देश आजाद हुआ और पंडित नेहरू संसद के केंद्रीय कक्ष में आजादी का स्वागत कर रहे थे और देश आजादी का जश्न मना रहा था तब भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आजादी के किसी जश्न में हिस्सा नहीं ले रहे थे। उस समय वह हिंदू मुसलमानों के बीच भड़की हिंसा को बुझाने का प्रयास कर रहे थे। कहा जाता है कि महात्मा गांधी ने देश को अंग्रेजों के आधिपत्य से अहिंसा के बल से आजाद तो करा लिया किन्तु देश में साम्प्रदायिक हिंसा पर वह नियंत्रण नहीं रख सके और आजादी की लड़ाई जीत कर भी वह हार गये क्योंकि कि वह देश के विभाजन को नहीं रोक सके। जब दंगों को रोकने के लिए वे नौअखली (अब बंगला देश में) पहुंचे तो जिस स्थान पर वे ठहरे थे, वहां पर भी पत्थर बरसाए गए। उनके पोते तुषार गांधी ने इतिहास के उस काले अध्याय को याद करते हुए अपनी एक पुस्तक में लिखा, 'जब आधी रात को समूचा राष्ट्र 'नियति से साक्षात्कार का स्वर सुन रहा था तों स्वतंत्रता संग्राम के यह अमर सेनानी देश के एक भाग में शांति स्थापना करने की अपील कर रहे थे। एक अन्य विद्वान लेखक होरेस अलेक्जेंडर, जो गांधी के विचारों और दर्शन के प्रबल पक्षधर थे, ने अपनी पुस्तक में लिखा, उस समय महात्मा गांधी अपने जीवन के एक निहायत कठिन कार्य को करने का प्रयास कर रहे थे अर्थात् वह हिंदू मुस्लिमों में शांति स्थापना की अपील कर रहे थे। बाद में उन्होंने सितंबर, 1949 को कोलकाता में आमरण अनशन रखते हुए कहा कि वह तभी कुछ खाएंगे जब हिंसा का यह जुनून रुकेगा। उन्होंने वह आमरण अनशन छठे दिन तोड़ा जब लोगों ने वचन दिया कि वे शांति बनाए रखेंगे। महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता के बाद 15 नवंबर, 1947 को अपने एक भाषण में 'करो या मरो' का वचन दोहराते हुए कहा कि अगर हम सांप्रदायिक हिंसा के पागलपन से बाहर नहीं आते तो वर्षों के संघर्ष से मिली आजादी हाथ से गवा बैठें ये।

महात्मा गांधी स्वतंत्र भारत में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे वह एक ऐसा राज्य देखना चाहते थे जिसमें सभी समान हों, सभी को समान अधिकार हों। महात्मा गांधी भारत के लिए इंग्लैंड की संसदीय शासन प्रणाली को अपनाने के विरुद्ध थे। उनका कहना था कि यदि भारत इंग्लैंड की संसदीय शासन प्रणाली को अपनायेगा तो वह तबाह हो जायेगा। उनका यह भी कहना था कि ब्रिटेन की इस समय दयनीय स्थिति भी इसी संसदीय शासन प्रणाली के कारण है क्योंकि यह शासन प्रणाली एक 'बांझ महिला' या 'वेश्या' की तरह है। इसके अंतर्गत जो जन प्रतिनिधि चुने जाते हैं वह पाखंडी और स्वार्थी होते हैं। यह प्रणाली केवल दलहित की बात सोचती है, उससे जनता की सेवा नहीं हो सकती। वैसे वल्लभ भाई पटेल और यहां था कि बी.आर. अंबेडकर जैसे नेता भी इस प्रणाली के विरुद्ध थे और आजकल हम देखते ही हैं कि जनप्रतिनिधि या तो अपने दल के अनुशासन में बंधे रहते हैं या फिर सत्ता के लालच में बिक तक जाते हैं और जो जनता उन्हें चुनाव के समय जनादेश देती है, उसके विरुद्ध भी अक्सर सत्ता के लालच में चले जाते हैं। महात्मा गांधी का राम राज्य सत्य और मानवीय मूल्यों की परिकल्पना करता है। आज का भारत अभी भी महात्मा गांधी के उस राम राज्य का इंतजार कर रहा है।

'भगवान् के सामने जो इंसान झुकता है
वो सब को अच्छा लगता है,
लेकिन जो सबके सामने झुकता है
वह इंसान भगवान् को अच्छा लगता है!'

GSS FOUNDATION
Goraksh Shaktidham Sevarth Foundation

भारत रत्न
महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी
एवं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी
की जयंती पर्व पर इन्दौर (मध्यप्रदेश) में

द्वितीय

अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह

25 दिसंबर 2022
को संपन्न होने जा रहा है

भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों से
सारस्वत सम्मान हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित हैं।

यह सारस्वत सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, चिकित्सकों, लघु-उद्योगपतियों, लेखकों, कवियों, शिक्षकों, शोधार्थियों को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी अविस्मरणीय प्रतिभा-सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

आमंत्रित प्रतिभागियों को समारोह मंच पर आकर्षक सम्मान पत्र,
मोमेंटो एवं शाल प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 30 नवंबर 2022

प्रविष्टि का प्रारूप हमारी वेबसाईट (www.gssfoundation.org) पर भी उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ
Ph. : 0731-4918681, M. : 7415410516 | ईमेल : info.gssfoundation.org

मुख्य प्रायोजक

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

www.gssfoundation.org | इंदौर (म.प्र.) 452009

श्री राम हमारे आदर्श

सौम्या पाण्डेय 'मूर्ति'
ग्रेटर नोएडा

धरती पर जब भी पाप बढ़ता है तब अखण्ड ब्रह्मांड के रचयिता, कर्ता–धर्ता, पालनहार श्री नारायण अवतार लेते हैं। अपने प्रत्येक अवतार में नारायण न केवल धरणी को पाप के बोझ से मुक्त करते हैं अपितु उनका प्रत्येक रूप अपने आचरण के कारण भी सर्वमान्य एवं पूजनीय हैं। इसी कड़ी में श्री हरि ने जब त्रेता युग में

'श्री राम' के रूप में अंशावतार धारण किया तो वे एक आदर्श के रूप में स्थापित हुए। श्री राम का धरती पर व्यतीत किया गया प्रत्येक क्षण न केवल मर्यादित एवं आदर्श युक्त जीवन का प्रतिरूप है, अपितु उन्होंने प्रत्येक जीवन धर्म का आदर्श रूप में पालन करते हुए एक प्रतिमान स्थापित किया जो आज भी वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय है।

सर्वविदित है कि उनके समान पुत्र, शिष्य, भाई, पति, सखा, मित्र, एवं राजा आज तक न कोई हुआ है एवं न ही हो सकता है क्योंकि आदर्श के जो कीर्तिमान उन्होंने स्थापित किये हैं उन तक लेशमात्र भी पहुँचना किसी मनुष्य के जीवन को धन्य कर सकता है ।

श्री राम जी की अवतार यात्रा का सर्वप्रथम भाग उनका शिष्योचित व्यवहार है, जिसे उन्होंने पूर्ण श्रद्धा से निभाया, पहले गुरु वशिष्ठ के आश्रम में तत्पश्चात गुरु विश्वामित्र के साथ उनके यज्ञ के आयोजन को सफल बनाने के अतिरिक्त उन्हीं की आज्ञा से श्री राम ने जनक जी की प्रतिज्ञा का मान रखते हुए धनुष भंग किया व सीता जी के साथ स्वयंवर भी किया। मानवीय दृष्टिकोण से यदि देखें तो गुरु शिष्य मर्यादा के पालन का इससे सुंदर उदाहरण मिलना असंभव है।

इसके पश्चात एक पुत्र के रूप में श्री राम इतने आज्ञाकारी रहे कि पिता के वचन की मर्यादा रखने के लिए सहर्ष वन को प्रस्थान कर गए। चौदह वर्षो का वनवास एक आसान कार्य नहीं था वो भी उस आयु में जब उन्होंने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश ही किया था। यहाँ सीता माता का त्याग भी उल्लेखनीय है जो इस यात्रा में उनकी सहचारिणी बनीं एवं लक्ष्मण जी का भी जो उनके सेवक रूप में उनके साथ रहे यह दोनों उनके अवतार कालीन यात्रा को आदर्श रूप में परिपूर्ण करने में सहायक रहे।

इसके बाद आता है श्री राम का सखा रूप, जिसमें वो निषाद राज के साथ अपनी मित्रता निभाते हैं व मित्र भाव में जात–पात, ऊंच–नीच के सभी भेद को मिटा देते हैं। इसी कड़ी में आगे सुग्रीव जी से प्रभु राम की मित्रता भी महत्वपूर्ण जिसके लिए उन्होंने राजा बाली का छल से वध किया व बाद मे उसका पश्चाताप भी किया। यहाँ उल्लेखनीय है कि उस काल में इस प्रकार की पहल श्री राम ने ही करी व सभी मनुष्यों के एक समान महत्व को दर्शाया।

श्री राम एक सर्वश्रेष्ठ भ्राता के रूप में भी सदैव पूजे जाते हैं। यह जानते हुए भी कि माता कैकेयी अपने पुत्र भरत को राजा बनाने के लिए ही उन्हें वनवास प्रदान करवा रहीं थीं, उन्होंने न केवल भरत के प्रति अपना वही स्नेहभाव रखा जो पहले से था साथ ही प्रसन्नतापूर्वक अपना राजपाट उन्हें सौंपने के लिए भी बिना एक पल बिताए सहर्ष तैयार हो गए। यहाँ भरत जी व चारों भाइयों का एक दूसरे के प्रति प्रेम भी आदर्शानुकूल है जो कि एक प्रकार से भ्रातृ प्रेम का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण भी है।

इन सभी रूपों में आदर्श आचरण करते हुए श्री राम ने एक पति के रुप में भी सीता जी के प्रति समर्पण में भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी। सीता जी के अपहरण के पश्चात किस तरह से उन्होंने उन तक पहुँचने का उद्यम किया व रावण के साम्राज्य का अंत करके उन्हें वापस लाए। यहाँ यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि उन्होंने सामाजिक मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए सीता जी की अग्नि परीक्षा भी ली परन्तु उनके हृदय में सीता जी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री के प्रति आसक्ति न जगी एवं श्री राम देवताओं व राजाओं का एकमात्र ऐसा उदाहरण हैं जिन्होंने पूर्ण मर्यादा के साथ एक पत्नी व्रत का नियमपूर्वक पालन किया। उस काल का ये भी एक सर्वोच्च उदाहरण है।

श्री राम एक राजा के रूप में इतने अधिक आदर्शवादी थे कि उनके राजकीय काल को रामराज्य के नाम से जाना जाता है। इससे सुंदर शाशनकाल का कोई उदाहरण न उसके पूर्व का मिलता है न पश्चात का, रामराज्य ही सर्वोत्तम राज काज का एक मात्र उदाहरण है।

श्री राम वस्तुतः अवतार रूप में आदर्शों के ऐसे कीर्तिमान स्थापित कर गए कि उसके बाद के प्रत्येक काल में आज भी जब भी किसी आदर्श उदाहरण का नाम लिया जाता है तो श्री राम का नाम ही समक्ष उपस्थित होता है। राम हमारे मन में बसे हैं। जनमानस को यदि किसी नाम से संयमित किया जा सकता है तो वो है श्री राम का नाम।

राम हमारी आस्था से जुड़े हुए हैं आज भी प्रत्येक माता श्री राम जैसा पुत्र चाहती है तो भाई उनके जैसे भाई की कामना करता है, स्त्री पति रूप में राम का ही अंश चाहती हैं तो गुरु भी श्री राम जैसा शिष्य। कोई मित्र व किसी भी प्रकार से हीन मनुष्य जब कोई सहारा ढूढ़ता है तो उसे भी श्री राम ही चाहिये क्योंकि उन्होंने ही अस्पृश्यता का भेद भी मिटाया था 'माता शबरी के आश्रम जाना व उनका उद्धार करना' इसका सर्वोच्च उदाहरण है। एक संतान अपने जीवन को निर्देशित करने के लिए पिता के रूप में जिस आदर्श की परिकल्पना करती है वो श्री राम ही हैं। श्री राम एक ऐसा व्यक्तित्व हैं जो शत्रुता का भी सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं क्योंकि युद्ध भी उन्होंने मर्यादा के साथ ही लड़ा था एवं विजय भी प्राप्त की थी।

श्री राम हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं, वो हमें बताते हैं कि यदि हम चाहें तो बिना किसी अवरोध के हम अपना जीवन मर्यादित रूप से जी सकते हैं, श्री राम हमारी प्रेरणा हैं, हमारा मार्गदर्शन हैं, हमारे आराध्य हैं व सबसे बड़ी बात हमारे आदर्श हैं।

राम दशरथ सुवन

डॉ. सुनीता संह 'सुधा'
लेखिका, कवियत्री, गीतकार
वाराणसी

राम एक दशरथ सुवन, एक ब्रह्म स्वरूप ।
एक सृष्टि उत्पत्ति वसु, एक परमात्म भूप ।।

राम नाम तो एक है, परपरिभाषित चार ।
नित्य जपे जो भी सुजन, उतरे सिर दुख भार ।।

राम नाम कर श्वास जप, आत्म भरे परितोष ।
घट-घट उसका वास है, मिटे सभी भव दोष ।।

तरणि प्रभा बेला नमन, बढ़े शक्ति सम्मान ।
भक्ति ओज समरस भरे,भाव नेह मन ध्यान ।।

मणिकांचन गुण प्राप्त हो, निर्णायकता तेज ।
भोर पुष्प की गंध जो, रखता नित्य सहेज ।।

सदाचार सद्भाव मन, विनम्रता धर नेह ।
अनुशासित जीवन करो, सुन्दरतम् हो देह ।।

सोच नहीं 'आरंभ' का, निश्चय कर अब आज।।
करो लगन से मेहनत, पूर्ण सभी हो काज ।।

कुतिया बिल्ली बंदरी, सुअरी मानुष रूप ।
जन्म मिले 'प्रारब्ध' से, पुण्य कर्म ही भूप ।।

'आदि' शक्ति जगदंब माँ, करो नित्य कल्याण।
सदविवेक अंर्तभरो, मिले जन्म निर्माण ।।

'अंत' नहीं है बात का, शुरू हुई जब बात ।
बात-बात पर बात धर, बीत गई घन रात ।।

तीन भाग जीवन सदा, शुरू मध्य अरु 'अंत'।
भूला मत भगवान को, सबका है वह कंत ।।

डॉ. चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख

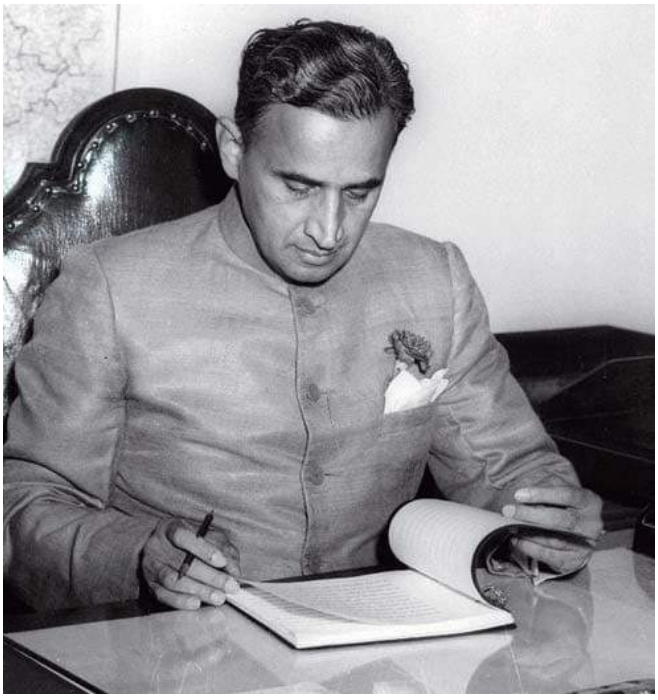

डॉ. साधना गुप्ता
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
झालावाड़, राजस्थान

परिचय : डॉ. चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख का जन्म 14 जनवरी, 1896 को रायगढ़ जिला, महाराष्ट्र में द्वारकानाथ देशमुख और भागीरथी बाई के घर हुआ। इन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक शिक्षा प्राप्त की। सन् 1918, में इंडियन सिविल सर्विस में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विशेष योगदान : इन्होंने रिजर्व बैंक को निजी शेयर धारकों के बैंक से एक राष्ट्रीय बैंक के रूप में बदले जाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। देशमुख ने बैंकों की गतिविधियों को संयोजित करने के लिए ऐसा कानूनी ढाँचा तैयार करके दिया जो बिना किसी, बाधा के लम्बे समय तक चल सके। इसी के आधार पर ऋण नीतियाँ स्थापित की गई और इण्डस्ट्रियल फाइनेंस कारपोरेशन ऑफ इण्डिया का गठन हो सका। ऐसा संवैधानिक ढाँचा बैंकिंग उद्योग के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। चिन्तामन देशमुख ने ग्रामीण वित्तीय ऋण भी तय किया जो रिजर्व बैंक के ऋषि ऋण कार्यक्रमों से तालमेल बैठाने में सफल हुआ। देशमुख की इस सूझबूझ भरी युक्ति की बड़ी प्रशंसा की गई और कहा गया कि इससे पूरी व्यवस्था में जो आमूलचूल परिवर्तन आया है, वो लाभकारी है।

पद : बिर्टिश शासन काल में आई.सी.एस. अधिकारी, भारतीय रिजर्व बैंक के तीसरे गवर्नर और स्वतंत्र भारत के तीसरे वित्त मंत्री रहे। 1949 ई. में आई.सी.एस. से सेवानिवृत्त होने के बाद वे भारतीय संसद के सदस्य और 'योजना आयोग' के सदस्य बनाये गए। 1950 में उन्हें देश के वित्त मंत्री रूप में नेहरू जी के मंत्रिमंडल में सम्मिलित किया गया। महाराष्ट्र प्रदेश के निर्माण के आंदोलन के समय इन्होंने यह पद त्याग दिया। देशमुख 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' के अध्यक्ष और दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी बनाये गए थे।

अन्य जानकारी : बहुभाषाविद् आपका संस्कृत भाषा में कविता संग्रह प्रकाशित हुआ।

उपाधि : कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. ऑफ साइंस की उपाधि 1957 में प्राप्त की। ब्रिटिश राज ने उन्हें 'सर' की उपाधि दी थी।

पुरस्कार : देशमुख को सन् 1959 में गवर्नमेंट सर्विसेस के क्षेत्र में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से तथा सन् 1975 में भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

मृत्यु : 2 अक्टूबर, 1982 को हैदराबाद, आंध्रप्रदेश में हुई ।

हर बाधा के आगे हल खोजने के कला पारखी :
चिंतामणि देशमुख

सजे स्वप्न नयन मध्य, अस्तित्व को तलाशने,
जुनून का कद जब, ख्वाहिशों से बड़ा बने।
बुद्धि की तीक्ष्णता, आत्मविश्वास संगी रहे,
अंधियारे के द्वार रोशनी, बन वही जले।।

संक्रांति मकर शुभ दिन, उल्लास सुनहरा छाया,
द्वारिका–भागीरथी आंगन, शिशु स्वर लहराया।
'चिंतामणि' संज्ञा, स्वत्व अस्तित्व भाव भाया,
बन बड़े खजाने का स्वामी, देश का गौरव बढ़ाया।।

बना ज्ञान को शस्त्र, रेत से जवाहरात सृजन सिखलाया,
सन् 1918, इंडियन सिविल सर्विस, प्रथम स्थान पाया।
ब्रिटिश शासन– आई.सी.एस.अधिकारी,'सर' ताज सजाया,
सैकेट्री– द्वितीय गोलमेज, ज्ञापन से लोहा मनवाया।।

मिला रिजर्वबैंक गवर्नर जनरल पद, महनीय कार्य किया,
बना राष्ट्रीय बैंक, निजी शेयरधारक का समाधान किया।
लक्ष्य दौड़ता है रग में जब, वह रुकता न थमता है,
विश्वास दिलाया यूं जग को, हर बाधा के आगे हल है।।

बन भारत का वित्तमंत्री, विकास को गतिमान किया,
वित्तिय संरचना में, सामाजिक नियंत्रण को स्थान दिया।
पाकर यू.जी.सी. अध्यक्ष पद, शिक्षा में सुधार किया,
नाना भाषाविज्ञ, संस्कृत काव्य संकलन सृजित किया।।

बदलाव के लिए जीना, खतरों से टकराना सिखलाया,
स्तम्भ समाज के – परम्परा, प्रतिभा अनुशासन को अपनाया।
पाकर 1959 में रेमन मैग्सेसे, भारत का मान बढ़ाया,
देश का गौरव बन, चिंतामणि देशमुख आया।।

यू.पी.चौपई

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'
गंगानगर, मेरठ
उ.प्र. 250001

'ज्ञानबोध' या 'संकट मोचन'।
देख जुड़ा जाते हैं लोचन।।
काशी के 'केदार' निराले।
गंगा तट पर भोले भाले।।

गंगा तट के घाट बिछौने।
लकड़ी कारोबार, खिलौने।।
'रामानुज' 'रैदास' 'कबीरा'
'तुलसी','नानक', 'बुद्ध' फकीरा ।।

हैं 'चौतन्य देव' मृदुभाषी।
राम कथा के सब अभिलाषी।।
'चेत सिंह का किला' मनोहर ।
काशी की है एक धरोहर।।

है 'अशोक का लाट' पुराना।
ऐतिहासिकी, रखा खजाना ।।
शिक्षा का मन्दिर, भू–शोभा।
आस्थाओं के मन को लोभा ।।

गंगा में नावों का रेला ।
सुबह–शाम है लगता मेला ।।
पंडों का है घाट सुहाना ।
मस्त कबूतर चुगते दाना ।।

'काशी' 'गंगा' का बिछा, फैला–फैला 'पाट'
यह 'चौरासी' 'योनियाँ', यह 'चौरासी' 'घाट'

भारतीय संस्कृति में दशहरा के विभिन्न रूप

कृष्ण कुमार यादव
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी
परिक्षेत्र, वाराणसी, उ.प्र.

भारतीय संस्कृति में उत्सवों और त्यौहारों का आदि काल से ही महत्व रहा है। सामान्यतः त्यौहारों का सम्बन्ध किसी न किसी मिथक, धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा होता है। अपने देश भारत में तो ऋषि एवम् मौसम के साथ त्यौहारों का अटूट सम्बन्ध देखा जा सकता है। रबी और खरीफ फसलों की कटाई के साथ ही साल के दो सबसे सुखद मौसमों वसंत और शरद में तो मानों उत्सवों की बहार आ जाती है। शारदीय नवरात्र में माँ के जगराता के बीच दुर्गा पूजा पंडालों के मनोरंजक कार्यक्रम और रामलीला के साथ–साथ गरबा और डांडिया की धूम रहती है। चूँकि इस दौरान खेतों में कटाई हो चुकी होती है अतः दूर–दराज के अंचलों से लोग सपरिवार सज–धजकर बाजारों एवं मेलो में आते हैं और लजीज व्यजंनों का लुफ्त उठाते हुए खूब खरीददारी करते हैं। इसी समय मेलों के बहाने दूर–दराज के मित्रों और रिश्तेदारों से भी मुलाकातें हो जाती हैं। घर की चहरदीवारियों में कैद महिलाएं भी इस अवसर पर बाहर निकलकर त्यौहारों व उत्सवों का पूरा लुफ्त उठाती हैं। त्यौहारों को केवल फसल एवं ऋतुओं से ही नहीं वरन् दैवी घटनाओं से जोड़कर धार्मिक व पवित्र भी बनाया गया है। यही कारण है कि भारतीय पर्व और त्यौहारों में धार्मिक देवी–देवताओं, सामाजिक घटनाओं व विश्वासों का अद्भुत संयोग प्रदर्शित होता है।

दशहरा पर्व भारतीय संस्कृति में सबसे ज्यादा बेसब्री के साथ इंतजार किये जाने वाला त्यौहार है। दशहरा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द संयोजन 'दश' व 'हरा' से हुयी है, जिसका अर्थ भगवान राम द्वारा रावण के दस सिरों को काटने व तत्पश्चात रावण की मृत्यु रूप में राक्षस राज के आंतक की समाप्ति से है। यही कारण है कि इस दिन को विजयदशमी अर्थात अन्याय पर न्याय की विजय के रूप में भी मनाया जाता है। दशहरे से पूर्व हर वर्ष शारदीय नवरात्र के समय मातृरूपिणी देवी नवधान्य सहित पृथ्वी पर अवतरित होती हैं– क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री रूप में मां दुर्गा की लगातार नौ दिनों तक पूजा होती है। ऐसी मान्यता है कि नवरात्र के अंतिम दिन भगवान राम ने चंडी पूजा के रूप में माँ दुर्गा की उपासना की थी और मां ने उन्हें युद्ध में विजय का आशीर्वाद दिया था। इसके अगले ही दिन दशमी को भगवान राम ने रावण का अंत कर उस पर विजय पायी, तभी से शारदीय नवरात्र के बाद दशमी को विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है और आज भी प्रतीकात्मक रूप में रावण–पुतला का दहन कर अन्याय पर न्याय के विजय की उद्घोशणा की जाती हे। सर्वप्रथम राम चरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान राम के जीवन व शिक्षाओं को जन–जन तक पहुँचाने के निमित्त बनारस में हर साल रामलीला खेलने की परिपाटी आरम्भ की। एक लम्बे समय तक बनारस के रामनगर की रामलीला जग–प्रसिद्ध रही, कालांतर में उत्तर

भारत के अन्य शहरों में भी इसका प्रचलन तेजी से बढ़ा और आज तो रामलीला के बिना दशहरा ही अधूरा माना जाता है। यहाँ तक कि विदेशों मे बसे भारतीयों ने भी वहाँ पर रामलीला अभिनय को प्रोत्साहन दिया और कालांतर में वहाँ के स्थानीय देवताओं से भगवान राम का साम्यकरण करके इंडोनेशिया, कम्बोडिया, लाओस इत्यादि देशों में भी रामलीला का भव्य मंचन होने लगा, जो कि संस्कृति की तारतम्यता को दर्शाता है।

भारत विविधताओं का देश है, अतः उत्सवों और त्यौहारों को मनाने में भी इस विविधता के दर्शन होते हैं। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा काफी लोकप्रिय है। एक हफ्ते तक चलने वाले इस पर्व पर आसपास के बने पहाड़ी मंदिरों से भगवान रघुनाथ जी की मूर्तियाँ एक जुलूस के रूप में लाकर कुल्लू के मैदान में रखी जाती हैं और श्रद्धालु नृत्य–संगीत के द्वारा अपना उल्लास प्रकट करते हैं। मैसूर (कर्नाटक) का दशहरा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित है। वाड्यार राजाओं के काल में आरंभ इस दशहरे को अभी भी शाही अंदाज में मनाया जाता है और लगातार दस दिन तक चलने वाले इस उत्सव में राजाओं का स्वर्ण –सिंहासन प्रदर्शित किया जाता है। सुसज्जित तेरह हाथियों का शाही काफिला इस दशहरे की शान है। आंध्र प्रदेश के तिरूपति (बालाजी मंदिर) में शारदीय नवरात्र को ब्रह्मेत्सवम् के रूप में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इन नौ दिनों के दौरान सात पर्वतों के राजा पृथक–पृथक बारह वाहनों की सवारी करते हैं तथा हर दिन एक नया अवतार लेते हैं। इस दृश्य के मंचन और साथ ही 'चक्रस्नान' (भगवान के सुदर्शन चक्र की पुश्करणी में डुबकी) के साथ आंध्र में दशहरा सम्पन्न होता है। केरल में दशहरे की धूम दुर्गा अष्टमी से पूजा वैपू के साथ आरंभ होती है। इसमें कमरे के मध्य में सरस्वती माँ की प्रतिमा सुसज्जित कर आसपास पवित्र पुस्तकें रखी जाती हैं और कमरे को अस्त्रों से सजाया जाता है। उत्सव का अंत विजयदशमी के दिन श्पूजा इदप्पुश के साथ होता है। महाराज स्वाथिथिरूनाल द्वारा आरंभ शास्त्रीय संगीत गायन की परंपरा यहाँ आज भी जीवित है। तमिलनाडु में मुरगन मंदिर में होने वाली नवरात्र की गतिविधयाँ प्रसिद्ध हैं। गुजरात में दशहरा के दौरान गरबा व डांडिया–रास की झूम रहती है। मिट्टी के घड़े में दीयों की रोशनी से प्रज्वलित 'गरबो' के इर्द–गिर्द गरबा करती महिलायें इस नृत्य के माध्यम से देवी का आह्मन करती हैं। गरबा के बाद डांडिया–रास का खेल खेला जाता है। ऐसी मान्यता है कि माँ दुर्गा व राक्षस महिषासुर के मध्य हुए युद्ध में माँ ने डांडिया की डंडियों के जरिए महिषासुर का सामना किया था। डांडिया–रास के माध्यम से इस युद्ध को प्रतीकात्मक रूप मे दर्शाया जाता है।

दशहरे की बात हो और बंगाल की दुर्गा–पूजा की चर्चा न हो तो अधूरा ही लगता है। वस्तुतः दुर्गापूजा के बिना एक बंगाली के लिए जीवन की कल्पना भी व्यर्थ है। मान्यताओं के अनुसार नौवीं सदी में बंगाल में जन्मे बालक व दीपक नामक स्मृतिकारों ने शक्ति उपासना की इस परिपाटी की शुरूआत की। तत्पश्चात दशप्रहारधारिणी के रूप में शक्ति उपासना के शास्त्रीय पृष्ठाधार को रघुनंदन भट्टाचार्य नामक विद्वान ने सम्पुष्ट किया। बंगाल में प्रथम सार्वजनिक दुर्गा पूजा कुल्लक भट्ट नामक धर्मगुरू के निर्देशन में ताहिरपुर के एक जमींदार नारायण ने की पर यह समारोह पूर्णतया पारिवारिक था। बंगाल के पाल और सेनवशियों ने दूर्गा–पूजा को काफी बढ़ावा दिया। प्लासी के युद्ध (1757) में विजय पश्चात लार्ड क्लाइव ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु अपने हिमायती राजा नव नवकृष्ण की सलाह पर कलकत्ते के शोभा बाजार की विशाल पुरातन बाड़ी में भव्य स्तर पर दुर्गा–पूजा की। इसमें कृष्णानगर के महान चित्रकारों और मूर्तिकारों द्वारा निर्मित भव्य मूर्तियाँ बनावाई गई एवं वर्मा और श्रीलंका से नृत्यांगनाएं बुलवाई गईं। लार्ड क्लाइव ने हाथी पर बैठकर इस समारोह का आनंद लिया। राजा नवकृष्ण देव द्वारा की गई दुर्गा–पूजा की भव्यता से लोग काफी प्रभावित हुए व अन्य राजाओं, सामंतों व जमींदारों ने भी इसी शैली में पूजा आरम्भ की। सन् 1790 में प्रथम बार राजाओं, सामंतो व जमींदारों से परे सामान्य जन रूप में बारह ब्राह्मणों ने नदिया जनपद के गुप्ती पाढ़ा नामक स्थान पर सामूहिक रूप से दुर्गा–पूजा का आयोजन किया, तब से यह धीरे– धीरे सामान्य जनजीवन में भी लोकप्रिय होता गया। बंगाल के साथ– साथ बनारस की दुर्गा पूजा भी जग प्रसिद्ध है। इसका उद्भव प्लासी के युद्ध (1757) पश्चात बंगाल छोड़कर बनारस में बसे पुलिस अधिकारी गोविंदराम मित्र (डी.एस.पी.) के पौत्र आनंद मोहन ने 1773 में बनारस के बंगाल ड्यौड़ी में किया। प्रारम्भ में यह पूजा पारिवारिक थी पर बाद में इसने जनसामान्य में व्यापक स्थान पा लिया।

दशहरे की परम्परा भगवान राम द्वारा त्रेतायुग में रावण के वध से भले ही आरम्भ हुई हो, पर द्वापरयुग में महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध भी इसी दिन आरम्भ हुआ था। विजयदशमी सिर्फ इस बात का प्रतीक नहीं है कि अन्याय पर न्याय अथवा बुराई पर अच्छाई की विजय हुई थी वरन् यह बुराई में भी अच्छाई ढूंढ़ने का दिन होता है। स्वयं रावण–वध के बाद भगवान राम ने अनुज लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजा था। रावण भगवान शिव का भक्त होने के साथ–साथ महापराक्रमी भी था। इसी तथ्य के मद्देनजर आज भी कानपुर के शिवाला स्थित कैलाश मंदिर में विजयदशमी के दिन दशानन रावण की महाआरती की जाती है। सन् 1865 में श्रृंगेरी के शंकराचार्य की मौजूदगी में महाराज गुरू प्रसाद द्वारा स्थापित इस मंदिर में शिव के साथ उनके प्रमुख भक्तों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। कालांतर में सन् 1900 में महाराज शिवशंकर लाल ने कैलाश मंदिर परिसर में शिव भक्त रावण का मंदिर बनवाया और देवी के तेइस रूपों की मूर्ति भी स्थापित की। तभी से रावण की महाआरती की परम्परा यहाँ पर कायम है। कानपुर से सटे उन्नाव जिले के मौरावां कस्बे में भी राजा चन्दन लाल द्वारा सन् 1804 में स्थापित रावण की मूर्ति की पूजा की जाती है। यहाँ दशहरे के दिन रामलीला मैदान में 7–8 फुट ऊँचे सिंहासन पर बैठे रावण की विशालकाय पत्थर की मूर्ति की लोग पूजा करते हैं, जबकि एक अन्य पुतला बनाकर रावण दहन करते हैं। इसी प्रकार मध्य प्रदेश के मंदसौर में नामदेव वैश्य समाज के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी मंदसौर की थी। अतः रावण को जमाई मानकर उसकी खतिरदारी यहाँ पर भव्य रूप में की जाती

है। यहाँ पर रावण के समक्ष मनौती मानने और पूरी होने के बाद रावण की वंदना करने व भोग लगाने की परंपरा रही है। यहाँ रावण की पैतीस फुट उंची बैठी हुई अवस्था में कंक्रीट मूर्ति स्थापित की गई है। इसी प्रकार जोधपुर के लोगों के अनुसार रावण की पत्नी मंदोदरी यहाँ की पूर्व राजधानी मंडोर की रहने वाली थीं और रावण व मंदोदरी के विवाह स्थल पर आज भी रावण की चवरी नामक एक छतरी मौजूद है। यहाँ किला रोड स्थित अमरनाथ महादेव मंदिर प्रांगण में रावण मंदिर है। जोधपुर में श्रीमाली ब्राह्मण समाज के दवे गोधा गोत्र परिवार के लोग रावण दहन पर शोक मनाते हैं। ऐसी मान्यता है कि रावण दवे गोधा गोत्र से था इसलिए रावण दहन के समय आज भी इनके गोत्र से जुड़े परिवार रावण दहन नहीं देखते और रावण दहन के बाद स्नान कर यज्ञोपवीत धारण करते हैं। मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में स्थित रावणगाँव में रावण को महात्मा या बाबा के रूप में पूजा जाता है। यहाँ रावण बाबा की करीब आठ फीट लंबी पाशाण प्रतिमा लेटी हुयी मुद्रा में है और प्रति वर्ष दशहरे पर इसका विधिवत श्रृंगार करके अक्षत, रोली, हल्दी व फूलों से पूजा करने की परंपरा है। चूंकि रावण की जान उसकी नाभि में बसती थी, अतः यहाँ पर रावण की नाभि पर तेल लगाने की परंपरा है अन्यथा पूजा अधूरी मानी जाती है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में ग्रेटर नोएडा के मध्य स्थित बिसरख गाँव को रावण का पैतृक गाँव माना जाता है। बताते हैं कि रावण के पिता विश्रवामुनि इस गाँव के जंगल में शिव भक्ति करते थे एवं रावण सहित उनके तीनों बेटे यहीं पर पैदा हुए। विजयदशमी के दिन जब चारों तरफ रावण का पुतला फूका जाता है, तो बिसरख गाँव के लोग उस दिन शोक मनाते हैं। इस गाँव में दशहरा का त्यौहार नहीं मनाया जाता है। गाँववासियों को मलाल है कि रावण को पापी रूप में प्रचारित किया जाता है जबकि वह बहुत तेजस्वी, बुद्विमान, शिवभक्त, प्रकाण्ड पण्डित एवं क्षत्रिय गुणों से युक्त था।

आधुनिक युग में जब अमीरी–गरीबी की खाई बढ़ रही है, पर्यावरण समस्या जटिल होती जा रही है तो निश्चिततः हमारा उद्देश्य उत्सवों व त्यौहारों की मूल भावनाओं की तरफ लौटने की ओर होना चाहिए न कि अपनी हरकतों द्वारा इन भावनाओं का मजाक उड़ाने की। त्यौहार सामाजिक सदाशयता के परिचायक हैं न कि हैसियत दर्शाने के। त्यौहार हमें जीवन के राग–द्वेश से ऊपर उठाकर एक आदर्श समाज की स्थापना में मदद करते हैं। समाज के हर वर्ग के लोगों को एक साथ मेल–जोल और भाईचारे के साथ बिठाने हेतु ही त्यौहारों का आरम्भ हुआ। यह एक अलग तथ्य है कि हर त्यौहार के पीछे कुछ न कुछ धार्मिक मान्यताएं, मिथक, परम्पराएं और ऐतिहासिक घटनाएं होती हैं पर अंततः इनका उद्देश्य मानव–कल्याण ही होता है। आज जरुरत है कि इन त्यौहारों की आडम्बरता की बजाय इनके पीछे छुपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों को अहमियत दी जाए तभी व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सभी का कल्याण सम्भव होगा।

दशहरा

सौ. भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

बुराईयों पर अच्छाईयों की विजय का पर्व है दशहरा।
दुर्गुणों पर हमेशा सगुणों की विजय का पर्व है दशहरा।।

मन की मलीनता को दूर करने का पर्व है दशहरा।
मन की निराशाओं को दूर करने का पर्व है दशहरा।।

देवी आराधना से मन की शक्ति बढ़ाने का पर्व है दशहरा।
देवी आराधना से विकार रहित होने का पर्व है दशहरा।।

मानव – मानव मे भक्तिभाव बढ़ाने का पर्व है दशहरा।
मन के रावण को जलाने का पावन पर्व है दशहरा।।

उत्साह और नव शक्ति का प्रतीक है यह पर्व दशहरा।
संघर्ष के बाद सफलता प्राप्ति का प्रतीक है यह पर्व दशहरा।।

जन मन में एकता का संचार करने वाला यह पर्व है दशहरा।
देश को प्रगति की नई राह पर ले जाने का पर्व है दशहरा।।

आशाओं के नव दीप प्रज्ज्वलित कर उत्साह से मनाने का पर्व है दशहरा।
जन – जन मे जागृति लाने का अनुपम पर्व है दशहरा।।

जब भक्ति भोजन में प्रवेश करती है तो भोजन प्रसाद बन जाता है, जब भक्ति पानी में प्रवेश करती है तो पानी अमृत बन जाता है, जब भक्ति घर में प्रवेश करती है तो घर मंदिर बन जाता है, और वही भक्ति जब इंसान के मन में प्रवेश करती है तो वह भक्त बन जाता है।

शक्ति विजय, मर्यादा, व कीर्ति का प्रतीक-

दशहरा

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

भारतीय संस्कृति में लौकिक तथा पारलौकिक दोनों तरह की उन्नति के लिए यथेष्ट शिक्षा– दीक्षा का भी प्रावधान है। भारत की चिरजीवी संस्कृति की विशेषता है कि यहां अध्यात्म के जीवन का मुख्य लक्ष्य स्वीकार करने के लिए हमारे यहां त्योहारों की परंपरा डाली गई है। ये पर्व तथा त्योहार न केवल हमें जीवन को उल्लास और उमंग से भरते हैं अपितु श्रेष्ठ, संयमित, संस्कारित व उद्देश्यपूर्ण बनने की भी प्रेरणा देते हैं।

इन्हीं त्योहारों में खास स्थान है दशहरा का। शौर्य एवं विजय के इस पर्व के साथ अनेक पौराणिक प्रसंग जुड़े हैं, जिनका मतलब यह है कि तपस्या और साधना के द्वारा शक्ति का अर्जन तो कोई भी कर सकता है लेकिन फलित वह हरदम धर्म तथा मर्यादा के पक्ष में ही होती है। इसी वजह से विजयदशमी या दशहरा को शक्ति व मर्यादा का प्रतीक त्योहार माना गया है।

राम कथा प्रसंग के मुताबिक हरण के बावजूद शक्ति अर्थात सीता आसुरी तत्वों की हस्तगत नहीं हुई। यदि नारायणी शक्ति पर असुरों का आधिपत्य हो जाता तो उसका उपयोग ज्यादा अन्याय, आतंक और उपद्रव फैलाने के लिए ही होता। परिणामस्वरूप असुर पक्ष की जीत होती। देवपक्ष की पराजय के रूप में सम्मुख आती, लेकिन शक्ति लंका में रहकर भी मर्यादा पुरुषोत्तम में ही लीन रही। सीता को मुक्त कराने के लिए राम के लंका अभियान की इसी शक्ति की उपासना–आराधना के अभियान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

हालांकि रामकथा के इस कथानक में रावण एवं मेघनाद ने भी उन्हीं दिनों शक्ति अर्जन के लिए आराधना की थी, जिन दिनों राम ने शक्ति पूजा की थी। राम की इस शक्ति पूजा का उदात्त भावपूर्ण तथा विशद विवेचना महाप्राण निराला की कविता राम की शक्ति पूजा में मिलती है। इस बारे में देवी भागवत पुराण में चर्चा है कि युद्ध से पहले पूजा आराधना तथा अग्निहोत्र खत्म करने पर शक्ति दोनों के सामने अवतरित हुई। उन्होंने दोनों साधकों को साक्षात दर्शन दिए लेकिन वरदान दोनों पक्षों को अलग अलग मिले। राम को आशीर्वाद मिला विजई भव अर्थात तुम्हारी जय हो और रावण से कहा– कल्याण मस्तु तुम्हारा कल्याण हो। आशय यह है कि पूजा–आराधना कभी निरर्थक नहीं जाती, लेकिन उसका फल पात्रता के मुताबिक ही मिलता है। साधनहीन होने के बावजूद राम के सत्य और धर्म मर्यादा के पक्ष पर होने की वजह उन्हें विजयश्री हासिल हुई। जबकि सर्वसाधन संपन्न अतुलित एवं वैभव से परिपूर्ण महाशक्तिशाली रावण को केवल पथ से विलग होने की वजह हार का मुंह देखना पड़ा। रावण का कल्याण उसके अहंकार एवं असुरत्व के साथ मिट जाने में ही निहित था, वही आशीर्वाद उसे फलित हुआ।

एक अन्य कहानी के अनुसार इसी दिन भगवती दुर्गा ने महिषासुर और शुंभ–निशुंभ जैसे असुरों का विनाश करके सुरों को निष्कंटक किया था। दशहरा इसी शक्ति की उपासना के समापन और विसर्जन का दिन है। पौराणिक चर्चा के अनुसार महिषासुर तथा शुंभ–निशुंभ

भी शक्ति के आराधक थे। देव सत्ताओं को उन्होंने नवरात्र के दिनों में ही चुनौती दी थी। हांलाकि बाहुबल सैन्यबल तथा कूटनीति में आसुरी शक्तियां, देवशक्तियों के संमुख सबल पड़ती थी, तथापि अधर्मगामी होने के वजह उन्हें देवपक्ष के सामने पराभूत होना ही पड़ा।

यद्यपि सत्य का तत्व दर्शन अत्यंत विस्तार है। उल्लेख में मनीषियों ने लाखों शब्द कहे हैं, हजारों पन्ने रहे हैं, लेकिन उल्लेख का मूल सार यही है कि शक्ति का मर्यादित इस्तेमाल ही सफलता के द्वार खोलता है। मर्यादा का हनन होते ही धनुष की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, यद्यपि सूक्ष्म आशय में यह ध्वंस शक्ति का वरदान ही है। उदाहरण के लिए अग्नि को लें। स्वर्ण के लिए उसका आशीर्वाद तपकर कुंदन के रूप में मिलता है, जो पक्ष मर्यादा का पालन करता है सफलता उसी को प्राप्त होती है और जो इससे विलग होता है, उसको अंततः पराजय ही होती है

मर्यादा का मूर्तिमान स्वरूप हमें श्रीराम के जीवन में दिखाई देता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का समस्त जीवन अपने चिंतन तथा चरित्र से मानवीय गरिमा को अत्यंत उदात्त रूप में चरितार्थ करता है। मानव किस स्तर तक विकसित हो कि उसमें भागवत चेतना प्रगट हो सके। इस सवाल का जवाब राम के चरित्र में मिलता है। बाल्मीकि रामायण का प्रारंभ नारद की जिस जिज्ञासा से होता है, वह समस्त मानक की खोज है। देवर्षि नारद वाल्मीकि से पूछते हैं– संसार में गुणवान, तेजस्वी, धर्मज्ञ, जितेंद्रिय, सत्यवती, दृढ़प्रतिज्ञ, प्रियदर्शी, कीर्तिमान तथा अनिद्य पुरुष कौन है? ऐसा कौन है, जो खुद अजेय होने के बावजूद दूसरों से जीतने की कामना नहीं रखता। इस सवाल के जवाब में ऋषिवर वाल्मीकि उन्हें रामचरितमानस सुना कर कहते हैं कि राम ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं, जिनके हाथ में जाकर शस्त्र तथा शास्त्र दोनों ही धन्य हो जाते हैं। धर्म मर्यादा से ऊर्जा ग्रहण करने वाले राम को अपने विजय के लिए कुछ खास नहीं करना पड़ा। इस बारे में मानसकार ने खुद राम के मुख से कहलाया है। जेहि जय होई, सो स्यंदन आना। अर्थात् जिससे जय होती है, वह रथ दूसरा ही है। उसके सम्मुख रणभूमि में सारे शस्त्र–साधनों से संपन्न रावण का रस खड़ा है, किंतु उसके पास जो रथ है, उसके पहिए, ध्वज पताका, छत्र, आसन, अश्व आदि सब कुछ धर्म की विभिन्न अभिव्यक्तियों से निर्मित है। इन्हीं धर्म मर्यादाओं के भीतर रहने की वजह से ही उन्हें विजय एवं कीर्ति हासिल हुई।

पौराणिक दृष्टांत के मुताबिक अलग–अलग कालों में अलग–अलग अवतारी सत्ताएं अपने प्रयोजन सिद्धि के लिए इस देवभूमि पर आई। इनके साथ विभिन्न संदर्भ जुड़े रहे। जैसे बुद्ध के साथ करुणा का, कृष्ण के साथ कर्म, भक्ति व ज्ञान का, मत्स्य, कच्छप, वराह, वामन तथा नृसिंह आदि अवतारों के साथ विकास सामर्थ्य, अनुकूलन–दान, नीति के संदर्भ संलग्न है लेकिन शक्ति, विजय, मर्यादा तथा कीर्ति का संदर्भ जिस सत्ता से संलग्न है वह राम की ही है। इसलिए जिन्हें माानवधर्म को पूरी पराकाष्ठा में देखना हो, वे दशहरा के इस पावन त्योहार पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अवगाहन करें।

मात ये प्रतिमा तुम्हारी

डॉ. सुमन मिश्रा
झांसी

हृदय में मेरे सजी है ,.....मात ये प्रतिमा तुम्हारी।
दृग बिंदुओं से अर्घ दे,.....आरती तेरी उतारी।।

श्रद्धा ने स्नात करके,.....नेह का दीपक जलाया।
और उर की भावना ने,.....भोग मां तेरा लगाया।।

निलय में तुमको बसाकर,.कर रहा आराधना मन।
श्वास में तुमको रमाकर,....कर रहा है साधना तन।।

व्यंजना अर्पण तुम्हें कर, समसि ने रच दी ऋचाएं।
निखिल को साक्षी बना मन, कर रहा है कामनाएं।।

मम अतल उर में बसी तुम, आज हे आराध्य मेरी।
क्या करूँ तुमको समर्पित, है नही कुछ साध्य मेरी।।

मात सब संताप अपने,...तुम्हें अर्पित कर दिये है।
अश्रु की जलधार में सब,भाव अर्पित कर दिये है।।

मूँद कर पलकें तुम्हारे,..चरण कमलों में झुकी हूँ।
शेष क्या अब पास मेरे, सब निछावर कर चुकी हूँ।।

स्वप्न सब साकार कर दें,.....अर्चना मेरी यही है।
श्सुमनश को अपनी शरण दें, कामना मेरी यही है।।

समय की महत्ता को समझिए

महामंडलेश्वर राज राजेश्वरी पीठाधीश्वर
पूज्य संत श्री राधे जी सरकार
जबलपुर, मध्यप्रदेश

संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसकी प्राप्ति मनुष्य के लिए असंभव हो प्रयत्न और पुरुषार्थ से सभी कुछ पाया जा सकता है। लेकिन एक ऐसी भी चीज है जिसे एक बार खोने के बाद कहीं नहीं पाया जा सकता और वह है – समय। एक बार हाथ से निकला हुआ समय कभी हाथ नहीं आता। कहावत है बीता हुआ समय और कहे गए शब्द कभी वापस नहीं बुलाए जा सकते। समय परमात्मा से भी महान है भक्ति साधना द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार कई बार किया जा सकता है, लेकिन गुजरा हुआ समय पुनः नहीं मिलता।

समय ही जीवन की परिभाषा है, क्योंकि समय से ही जीवन बनता है, समय का सदुपयोग करना जीवन का उपयोग करना है, अथवा समय का दुरुपयोग करना जीवन को नष्ट करना है। समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता वह प्रतिक्षण घंटे दिन महीनों वर्षो के रूप में निरंतर अज्ञात दिशा को जाकर विलीन होता रहता है। फ्रेंकलिन ने कहा है– 'समय बर्बाद मत करो क्योंकि समय से ही जीवन बना है' निसंदेह वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा पूरा सदुपयोग करें । सचमुच जो व्यक्ति अपना थोड़ा सा भी समय व्यर्थ नष्ट कर देता है उन्हें समय अनेकों सफलताओं से वंचित कर देता है।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनकी महानता का एक ही आधार स्तंभ है कि उन्होंने अपने समय का पूरा–पूरा उपयोग किया । एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने दिया । जिस समय लोग मनोरंजन खेल तमाशा में मशगूल रहते हैं, व्यर्थ आलस्य प्रमाद में पड़े रहते हैं, उस समय महान व्यक्ति महत्वपूर्ण कार्यो का सृजन करते रहते हैं । ऐसा एक भी महापुरुष नहीं जिसने अपने समय को नष्ट किया हो , और वह महान बन गया हो।

समय बहुत बड़ा धन है भौतिक धन से भी अधिक मूल्यवान । जो इसे भली प्रकार उपयोग में लाता है , वह सभी तरह से लाभ प्राप्त कर सकता है । वह छोटे से जीवन में भी बहुत बड़ी सफलताएं प्राप्त कर लेता है । वह छोटी सी उम्र में दूसरों से बहुत आगे बढ़ जाता है । समय जितना कीमती और फिर ना मिलने वाला तत्व है उतना उसका महत्व प्रायः हम लोग नहीं समझते। मनुष्य जीवन एवं रुपए पैसों से भी अधिक महत्व समय का है धन का अपव्यय निर्धन बनाता है किंतु जिन्होंने समय का सदुपयोग करना नहीं सीखा और उसे आलस्य तथा प्रमाद में गंवाते रहते हैं उनके सामने आर्थिक विषमता के अतिरिक्त नैतिक तथा सामाजिक बुराइयां और कठिनाइयां उत्पन्न हो जाती हैं। समय का उपयोग धन के उपयोग से कहीं अधिक विचारणीय है क्योंकि उस पर मनुष्य की सुख सुविधा के सभी पहलू अवलंबित हैं। इसलिए हमें अर्थ अनुशासन के साथ साथ नियमित जीवन जीने का प्रशिक्षण भी प्राप्त करना चाहिए।

जो समय व्यर्थ में ही खो दिया गया उसमें यदि कमाया जाता तो अर्थ प्राप्ति होती, स्वाध्याय सत्संग में लगाते तो विचार और सन्मार्ग को प्रेरणा मिलती, और यदि कुछ ना करते केवल नियमित दिनचर्या में लगे रहते तो इस क्रियाशीलता के कारण अपना स्वास्थ्य तो भला चंगा रहता। समय के अपव्यय से मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य ही घटती है, इसलिए ये हमेशा याद रखिए कि नष्ट किया हुआ वक्त मनुष्य को भी नष्ट कर डालता है।

संसार का कालचक्र भी समय के बंधन से मुक्त नहीं है लोक और दिकपाल, पृथ्वी और सूर्य , चंद्र और अन्य ग्रह वक्त की गति से गतिमान है। यदि प्रकृति अपने समय में परिवर्तन कर दे तो संसार की सारी व्यवस्थाएं नष्ट हो जायेंगी। लोग समय का अनुशासन ना रखें तो रेल, डाक, कल कारखाने, ऋषि कमाई आदि सभी ठप्प पड़ जाएं और उत्पादन व्यवस्था में व्यतिक्रम के साथ सामान्य जीवन पर भी उसका कुप्रभाव पड़े। एक तरह से सारी सामाजिक व्यवस्था उथल–पुथल हो जाए। और मनुष्य को 1 मिनट भी सुविधापूर्वक जीना मुश्किल हो जाए। अतः हमको भी अपनी दिनचर्या को अपने कार्यो की आवश्यकतानुसार विभक्त करके उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए।

असत्य पर सत्य की जीत

विजयादशमी उत्सव

षैजू के
अतिथि अध्यापक, हिन्दी विभाग
मार अथानासियस कॉलेज
कोतमंगलम, केरल

हमारे पर्व हमारी संस्कृति व सभ्यता की पहचान हैं। देश में वर्ष भर में अनेकों त्यौहार होते हैं और इन सभी त्यौहारों को मनाने की एक अपनी ही परंपरा व विधि है। सभी त्यौहार मानवता के लिए कोई न कोई संदेश लेकर आते हैं। हमारे त्यौहार लोगों में परस्पर प्रेम व सद्भावना का संदेश देते हैं तथा जीवन में नवीन खुशियों व उल्लास का संचार करते हैं। होली, रक्षाबंधन, दीपावली व विजयादशमी हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार हैं।

विजयादशमी अथवा दशहरा पर्व का हिंदुओं के लिए विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाले यह त्यौहार जनमानस में खुशी, उत्साह व नवीनता का संचार करता है। यह पौराणिक मान्यता है कि इसी दिन अयोध्या के राजा राम ने लंका के आततायी राक्षस राजा रावण का वध किया था। तब से लोग भगवान राम की इस विजय स्मृति को विजयादशमी के पर्व के रूप में मनाते चले आ रहे हैं।

विजयादशमी का यह पर्व अच्छाई की बुराई पर, सत्य की असत्य पर विजय का प्रतीक है। यह त्यौहार हमें संदेश देता है कि बुरा व्यक्ति चाहे कितना ही बलवान व प्रभावशाली क्यों न हो उसका अंत सुनिश्चित है। मृत्यु पर भी विजय पाने वाले रावण का अंत कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अधर्म पर धर्म की विजय दिलाई। विजयादशमी के पर्व को मनाने के लिए उक्त मान्यता के अतिरिक्त भी अनेक मत प्रचलित हैं। बंगाल में उत्तर–पूर्वी भारत की मान्यताओं से भिन्न यह त्यौहार महाशक्तिशालिनी माँ दुर्गा को सम्मान व उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए मनाया जाता है। इस अवसर पर व्रत, पूजा, उपासना, दुर्गा–पाठ आदि के कार्यक्रम होते हैं। इसके अतिरिक्त जगह–जगह पर माँ की सुंदर–सुसज्जित झाँकियाँ निकाली जाती हैं ।

विजयादशमी से नौ दिन पूर्व से ही, अर्थात् आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से ही माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित कर इनकी पूजा आरंभ हो जाती है। दुर्गा सप्तशती के श्लोकों का सस्वर पाठ वातावरण में गूँजने लगता है। कुछ लोग अपने पंडित-पुरोहितों से यह पाठ करवाते हैं तथा भक्तिभाव से आदि शक्ति दुर्गा का महात्म्य श्रवण करते हैं। यह पाठ घर पर स्नानादि कर श्रद्धापूर्वक करने का पुण्य अत्यधिक है, ऐसा शास्त्रों में वर्णित है। दस महाविद्याओं- काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका, इनका स्मरण व ध्यान हमारे समस्त पापों व रुग्णताओं का नाश कर देता है तथा निःस्वार्थ भाव से इन शक्तियों की निरन्तर विधिवत् पूजा-अर्चना, ध्यान, यज्ञ करने से परम सिद्धी प्राप्त होती है ।

" सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।"

विजयादशमी के त्यौहार से कई दिन पूर्व ही इसकी तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती हैं। देश भर में जगह-जगह रामलीला का आयोजन होता है जिसमें राम के जीवन प्रसंगों का जीवंत प्रदर्शन होता है। लोग बड़ी ही श्रद्धा व विश्वास से रामलीला को देखते हैं। इस प्रकार सभी को उनके महान आदर्शों व महान चरित्र की अद्भुत् झाँकी के दर्शन रामलीला के माध्यम से होते हैं। देश की राजधानी दिल्ली में भी इन रामलीलाओं का बड़ा ही भव्य आयोजन होता है। बच्चे, बूढ़े और जवान सभी में रामलीला के प्रति विशेष आकर्षण व उत्साह होता है। विशेष रूप से बच्चे इसे देखकर प्रफुल्लित होते हैं तथा साथ ही साथ भगवान राम के महान चरित्र से उन्हें उत्तम चरित्र निर्माण की प्रेरणा मिलती है ।

यह त्यौहार खुशी, उल्लास व नवचेतना का त्योहार है। इस दिन सड़कों, बाजारों व दुकानों पर विशेष चहल-पहल होती है। अमीर-गरीब सभी इस त्योहार में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। सभी नवीन व स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं। देश भर में मिठाई व पटाखों की दुकानों में विशेष चहल-पहल होती है। किसानों के लिए भी यह अत्यंत खुशी का अवसर होता है क्योंकि इस समय तक खरीफ की फसल काटकर वे इसका आनंद उठाते हैं ।

गाँव-गाँव, नगर-नगर में राम की झांकियाँ निकाली जाती हैं जिसे देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती है। अनेक स्थानों पर लोग एक दूसरे के घरों में जाते हैं व परस्पर गले मिलते हैं। ग्रामीण भारत में तथा छोटे-छोटे शहरों में व्रत, उपवास, आराधना का विशेष महत्व है। गाँवों में दशहरा के अवसर पर छोटे-बड़े मेले लोगों के परस्पर मिलने-जुलने तथा अपनी संस्कृति को प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करते हैं ।

विजयादशमी का पर्व हमारी भारतीय संस्कृति को और भी अधिक गौरवान्वित करता है व इसे महान बनाता है। यह त्यौहार धार्मिक आस्था व विश्वास की शक्ति को दर्शाता है। अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक यह त्यौहार संपूर्ण विश्व को धर्म और सत्य के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा देता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का महान चरित्र जनमानस को जीवन के महान नैतिक मूल्यों की अवधारणा हेतु प्रेरित करता है ।

यह त्यौहार मनुष्य को प्रेम, भाईचारा व मानवता का संदेश देता है। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ मनुष्यों में असंतोष की प्रवृत्ति व स्वार्थ लोलुपता बढ़ती ही जा रही है, इन त्यौहारों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। अतः यह हम सभी का नैतिक दायित्व है कि हम अपनी इस गौरवशाली परंपरा को कायम रखें।

दशहरा का मेला दशहरा से दस दिन पहले से रामलीलाओं का प्रदर्शन किया जाता है। दशहरे का महत्व रामलीलाओं के कारण सुविख्यात है। भारत के हर शहर एवं गाँव में रामलीला दिखाई जाती है। दिल्ली में तो हर कालोनी में रामलीला होती है। परंतु दिल्ली गेट के नजदीक रामलीला ग्राउण्ड की रामलीला सर्वाधिक मशहूर है। वहाँ पर दशहरे वाले दिन प्रधानमंत्री स्वयं रामलीला देखने आते हैं। उनके साथ अन्य मंत्रीगण एवं अधिकारी भी होते हैं। उनके अलावा वहाँ लाखों लोगों की भीड़ होती है। दशहरे के दिन भव्य मेले का आयोजन होता है। उस दिन रावण, कुम्भकर्ण एवं मेघनाद के पुतले जलाए जाते हैं।

दरअसल, अधिकांश लोग तो इन्हीं पुतलों को देखने आते हैं। रामलीला के अलावा, दशहरे के दिन आतिशबाजी भी खूब होती है जो दर्शकों का मन मोह लेती है। कई शहरों में तो आतिशबाजी की प्रतियोगिता होती है जिनमें आगरा शहर प्रमुख है। वहाँ पर कई शहरों से आतिशबाज आते हैं और जिसकी आतिशबाजी सबसे अच्छी होती है, उसे ईनाम दिया जाता है। आतिशबाजी दिखाने के बाद रामचंद्र जी रावण का वध करते हैं। फिर बारी-बारी से पुतलों में आग लगाई जाती है। पहले कुंभकर्ण का पुतला जलाया जाता है। उसके बाद मेघनाद के पुतले में आग लगाई जाती है और सबसे बाद में रावण के पुतले में आग लगाई जाती है।

रावण का पुतला सबसे बड़ा होता है। उसके दस सिर होते हैं और उसके दोनों हाथों में तलवार और ढाल होती है। रावण के पुतले को श्रीराम अग्निबाण से जलाते हैं। रावण के पुतले में आग लगने के पश्चात् सभी दर्शक अपने-अपने घरों को चल पड़ते हैं।

उपसंहार : हमारे हिन्दू समाज में दशहरा का दिन अत्यंत शुभ दिन माना जाता है। इस दिन मजदूर-श्रमिक लोग अपने काम के यंत्रों की पूजा करते हैं और लड्डू बाँटकर खुशी जाहिर करते हैं। दशहरे का पर्व असत्य पर सत्य एवं बुराई पर अच्छाई की विजय माना जाता है। इस दिन श्री राम ने बुराई के प्रतीक रावण का वध किया था। अतः हमें भी अपनी बुराइयों को त्यागकर अच्छाइयों को ग्रहण करना चाहिए तभी यह दिन सार्थक सिद्ध होगा।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

जीवन का सम्मान

अवसाद और वेदना से मुक्त होने की नैतिक जिम्मेदारी

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

स्वाभाविक आत्मसम्मान : स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करते हुए विकास की दिशा में अग्रसर होना जीवन की गतिशीलता का प्रमाण होता है। जीवन में सम्मान को महत्व प्रदान करना मनुष्य की गौरवशाली परंपरा का जीवंत उदाहरण है। सामाजिक परिवेश के अन्तर्गत् जब व्यक्तिगत् योगदान का मूल्याँकन किया जाता है तब वास्तविक विश्लेषण में स्वाभाविक आत्मसम्मान की स्थिति को केन्द्र में रखा जाता है। वर्तमान स्थितियों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताते हैं कि स्वयं के स्वाभाविक आत्मसम्मान की रक्षा करने में व्यक्ति अन्ततः असफल होता जा रहा है। अन्तर्मन की व्यथा को छिपाने के विभिन्न प्रयास व्यक्तिगत् जीवन में जारी हैं लेकिन इस कार्य की निरन्तरता को बनाये रख पाना हमेशा संभव नहीं हो पाता है। इस बात में दो मत नहीं है कि आज के परिदृश्य में 'आत्मसम्मान' मनुष्यता को बचाये रखने के लिए सबसे कारगर अस्त्र है। सामान्यतः व्यक्तिगत् व्यवहार के समय अन्य लोगों के विचार एवं नजरिये की चिन्ता करने की स्थिति को अपने आचरण के संदर्भ में देखा जाता है। कई बार स्वाभाविक आत्मसम्मान की मनःस्थिति बाहरी दबाव को स्वीकार नहीं कर पाती है और विरोधाभाषी व्यवहार किसी न किसी रूप में प्रकट हो जाता है। जीवन के सम्मान की श्रेष्ठ स्थिति उस समय बाधित हो जाती है जब अवसादग्रस्त मानसिकता धीरे–धीरे अपना नकारात्मक प्रभाव स्वाभाविक आत्मसम्मान पर डालने लगती है। व्यक्तिगत् स्तर पर सजगतापूर्ण व्यवहार का अनुपालन निश्चित रूप से अन्तःकरण को वेदना की अवस्था में परिवर्तित नहीं होने देता है। प्रत्येक स्थिति में जीवन का सम्मान होना चाहिए तभी मानव जाति के विकसित स्वरूप तक पहुँचना संभव हो सकेगा। प्रायः आन्तरिक उथल–पुथल की मनःस्थिति मानसिक अवसाद एवं अन्तःकरण की वेदना से व्यक्ति को मुक्त होने नहीं देती है। स्वयं के द्वारा जीवन का सम्मान करते हुए इस प्रक्रिया की बाधाओं से छुटकारा पाने के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदारी वहन करनी होगी तभी व्यावहारिक उत्तरदायित्व के बोध को स्वाभाविक आत्मसम्मान के संदर्भ में अनुभव किया जा सकता है।

अवसादग्रस्त मानसिकता : जीवन में सम्मान का बोध इस बात का निरन्तर एहसास कराता रहता है कि व्यक्तिगत् जीवन आनंद से परिपूर्ण है। यदि मन:स्थिति के विश्लेषण की आवश्यकता पड़ती है तब सकारात्मक परिदृश्य के अन्तर्गत् परिणाम संतुष्टि के साथ प्रसन्नता को प्रकट करने में सक्षम होना चाहिए। कर्मगत् स्थितियों का अवलोकन इस रहस्य को उजागर करते हुए अपने मनोभाव को व्यक्त कर देता है जिसमें मानसिक अवस्थाओं की विविधता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है। व्यक्तिगत् संतुष्टता की मूलभूत इकाई कर्म के प्रति आदर–भाव को अभिव्यक्त करती है जिससे आन्तरिक आस्था के स्तर का पता चल जाता है। कार्य संतुष्टि के स्तर में कमी आने का अर्थ है, कार्य में मन न लगना अथवा परिस्थितिगत् वातावरण से स्वयं को अलग करके देखना या प्रतिफल से उदासीन रहने जैसी मानसिक अवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो इससे छुटकारा पाना अत्यन्त मुश्किल कार्य होता है। नकारात्मक मन:स्थिति से मुक्ति प्राप्त करने हेतु मनोबल को बढ़ाना पड़ता है जिससे नवीन उर्जा का संचार होने लगे और सृजनात्मक वैचारिक शक्ति का निर्माण हो सके। जीवन के उतार–चढ़ाव के मध्य कई विरोधाभाषी स्थितियाँ अपना अस्तित्व प्रकट करती हैं जिनसे मुकाबला करना आसान नहीं है, लेकिन संघर्ष करने के अतिरिक्त कोई उपचार भी समाधान के रूप में परिलक्षित नहीं होता है। जीवन को पूर्ण सम्मान का दर्जा देने की इच्छा सभी व्यक्तियों के भीतर होती है परन्तु अवसादग्रस्त मानसिकता के कारण चाहते हुए भी ऐसा कर पाना मुमकिन नहीं होता है। व्यक्तिगत् जीवन में कई बार स्वयं के कर्मो से मन का उच्चाट्न यदि हो गया तो दुबारा मन की स्थिरता को हासिल करना संभव नहीं हो पाता है।

व्यावहारिकता के परिवेश का आँकलन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि जिस व्यक्ति, व्यवस्था एवं स्थिति को आदर्श मानकर उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास तथा आस्था निर्मित होने के पश्चात् यदि विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होती है तब मन:स्थिति को अवसाद से बाहर निकालना पीड़ादायी हो जाता है। स्वयं के प्रति सकारात्मक मनोभाव को जागृत करते हुए एक आशावादी दृष्टि विकसित करनी होगी तभी अवसादग्रस्त मानसिकता से मुक्त होते हुए जीवन का सम्मान कर पाने में सफलता प्राप्त हो सकेगी।

वेदनापूर्ण अन्त:करण : व्यक्तिगत् स्वभाव एवं संस्कार के कारण जब किसी विपरीत परिस्थिति का जन्म होता है तब स्वयं के साथ, परिवार तथा समाज के मध्य सन्तुलन बनाये रखना दुष्कर हो जाता है। जीवन के व्यापक परिवेश में मर्यादा के अनुकूल व्यवहार के मानक लगभग सभी स्थितियों में स्वीकार कर लिए जाते हैं लेकिन इसके अतिरिक्त के प्रति प्राय: सहानुभूति की गुंजाईश नहीं होती है। सामाजिक जीवन के अन्तर्गत् सर्वाधिक महत्वपूर्ण मसला संवेदना के स्वरूप का होता है जिसके आहत् होने से अन्त:करण, वेदनापूर्ण अवस्था में परिणित हो जाता है। व्यक्तिगत् जीवन की निष्ठा जिस नीति द्वारा निर्धारित होती है उसमें सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक बाधाओं का बन्धनकारी अवरोध विद्रोह पैदा कर देता है जो अन्तत: वेदना का रूप धारण कर लेता है। बाह्य जगत् के अन्तर्गत् अभिव्यक्ति की विशिष्ट स्थितियों में कभी–कभार अन्त:करण की वेदना परिलक्षित होती है जिसे अनायास ही किसी आवरण से ढँकने का प्रयास किया जाता है। सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण करने पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि व्यक्तिगत् पीड़ा को जब सार्वजनिक अपमान में रूपान्तरित कर दिया जाता है उस स्थिति में अन्त:करण वेदना से छलक उठता है। वर्तमान परिवेश में मानव जाति को वेदनापूर्ण अवस्था से बाहर निकालना आवश्यक है तभी वह जीवन के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोंण विकसित करने में कामयाब हो सकेगा। मानव जीवन के दु:खद पहलुओं को कुरेदने का प्रयास जब एक मनोवैज्ञानिक द्वारा किया जाता है तब अतीत के घावों पर मरहम लगाने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। व्यक्तिगत् जीवन की दर्द भरी दास्तान, जिसे व्यक्ति द्वारा स्मृतियों में दस्तावेज के रूप में रखा जाता है जो कभी किसी स्थिति अथवा परिस्थिति में प्रत्युत्तर के काम आ सके। अन्त:करण की स्थिति जब वेदना से भरी होती है तब अतीत एवं वर्तमान के साथ–साथ भविष्य को आधार बनाकर, जीवन के सम्मान को बनाये रखने हेतु कई संदर्भो और प्रसंगों का सहारा लिया जाता है। व्यक्तिगत् पीड़ा जो अन्त:करण में गहरी वेदना के रूप मे बैठ चुकी है उससे मुक्ति दिलाने तथा जीवन को एक नई दिशा प्रदान करने हेतु मार्गदर्शन एवं परामर्श के द्वारा अनवरत् प्रयास करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि व्यक्तिगत् मान्यताओं एवं विश्वास के स्थायित्व की जड़ों तक पहुँचने में सफलता मिल जाए तो निश्चित रूप से अन्तर्जगत् में युगान्तकारी परिवर्तन लाया जा सकता है जो जीवन का सम्मान करने में मददगार साबित हो सकेगा।

आन्तरिक विरोधाभास : सामान्यत: जीवन की नियमित गति में कोई अवरोध उत्पन्न होता है तो व्यक्तिगत् रूप से इसका विरोध किया जाता है। प्रारम्भिक तौर पर आरोपित विषय–वस्तु अथवा घटनाक्रम में स्वयं की भागीदारी से किसी भी प्रकार के सम्बन्ध की स्थिति को पूर्णत: व्यक्ति द्वारा नकार दिया जाता है। जीवन की गतिशीलता को स्वीकार करना स्वभावगत् प्रक्रिया होती है परन्तु कर्मगत् मर्यादा का उल्लंघन व्यक्तिगत् छवि को धूमिल कर देता है। यदि जीवन का सम्मान बनाये रखने की अभिलाषा अन्त:करण में विद्यमान है तो निश्चित रूप से जीवन के सिद्धांत एवं व्यवहार के मध्य किसी अन्तराल के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह जाता है। स्वयं के जीवन की निर्मलता के लिए मन, वचन और कर्म की पवित्रता का समावेश व्यावहारिक आचरण की नींव को बनाये रखने में कारगर भूमिका निभाता है। सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में जिस यथार्थवादी सत्य का अनुपालन तथा उसके क्रियमाण की जिम्मेदारी व्यक्तिगत् इकाई के लिए अनिवार्य होती है उसी अनुपात में दूसरे व्यक्तियों की विशुद्धता को संरक्षित करने में स्वयं की नैतिक जिम्मेदारी को उत्तरदायी ठहराने की आवश्यकता होनी चाहिए। जीवन के प्रति सम्मान के भाव का व्यावहारिक स्वरूप अपनी अस्मिता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए सदा प्रयासरत रहता है परन्तु मानसिक अवसाद एवं अन्त:करण की वेदना का दबाव इस उज्जवल स्थिति को अस्त–व्यस्त कर देता है। व्यक्तिगत् जीवन के अन्तर्गत् विरोधाभाष से मुक्त रह पाना प्राय: संभव नहीं हो पाता है केवल इस स्थिति के निर्माण को सकारात्मक प्रयास के माध्यम से न्यूनतम् किया जा सकता है। कई बार व्यक्तिगत् जीवन

के संदर्भ में ऐसे निर्णय ले लिए जाते हैं जिनका हमारे समग्र विकास से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता हैं और एक निश्चित समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् उनकी उपयोगिता पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया जाता है। सामान्य दृष्टिकोंण से विचार करने पर यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि जिस परिस्थिति के कारण निर्णय लिया गया था वह उचित था लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में वह निर्णय हमारे लिए एक समस्या बन कर रह गया है। जीवन के सम्मान को बनाये रखने हेतु वर्तमान में उठाये जाने वाले कदमों के प्रति पूर्ण सतर्कता बरतने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा जीवन में आन्तरिक विरोधाभास उत्प. न्न होने से सही एवं उपयुक्त निर्णयन पर पहुँचना अत्यन्त कठिन हो जाता है। व्यक्तिगत् जीवन की विरोधाभासी स्थितियों का आँकलन करते समय व्यक्ति तथा घटनाओं के संदर्भ को एकत्रित किया जाए तो किसी निश्चित विचार तक पहुँचने में इनका योगदान मुख्य रूप से रहता है तथा विचारगत् भाव का सबल पक्ष जीवन के सम्मान को बनाये रखने में अन्ततः सफल हो जाता है।

व्यावहारिक उत्तरदायित्व : मानवीय पक्ष को केन्द्र में रखकर यदि व्यक्ति को नैतिक जिम्मेदारी की अनुभूति करायी जाए तो निश्चित ही चिन्तन से क्रियमाण की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त हो जाएगा। स्वयं के द्वारा स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना और इस स्थिति को जीवन की शुचिता से जोड़ने का गुणात्मक प्रयास किया जाना जीवन के सम्मान का आधार होता है। जीवन में परिस्थितिगत् विरोधाभाष कुछ समय के लिए मानसिक अवसाद की स्थिति उत्पन्न करने में भले ही सफल हो जाएँ लेकिन जीवन का सम्मान करने की जिम्मेदारी, व्यक्ति को इस व्याधि से मुक्त होने के उपाय खोजने में सफलता प्रदान करा देती है। व्यक्तिगत् जीवन के विविध पक्षों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बताने में सक्षम होता है जिसके अन्तर्गत् स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध क्षणों की वास्तविकता का व्यावहारिक स्वरूप, हर्ष एवं विषाद के रूप में स्पष्ट हो जाता है। कई बार आपसी सम्बन्धों के भीतर खुशनुमा माहौल हृदय को आनंदित अवस्था में पहुँचा देता है परन्तु इसी विश्वसनीयता के मध्य व्यक्तिगत् स्वार्थपूर्ण मनोदशा का निर्माण अन्तःकरण में वेदना की स्थिति निर्मित कर देता है। जीवन के व्यवहार का विश्लेषण इतना सूक्ष्म होता है कि सभी स्थितियों पर नजर रखते हुए नियन्त्रण स्थापित कर लेना संभव नहीं हो सकता है। सामान्य तौर पर नकारात्मक परिणाम के लिए कोई भी स्वयं को उत्तरदायी नहीं ठहराता है बल्कि दूसरे व्यक्तियों को इस विरोधाभाषी परिस्थिति के लिए जिम्मेदार मान लिया जाता है जबकि सच्चाई कुछ और ही बयान कर रही होती है। जब व्यक्तिगत् मूल्याँकन को पारदर्शी तरीके से स्वीकार करने की स्थिति निर्मित होती है तब स्वयं के द्वारा दूसरों के मनोभाव को ठेस पहुँचाने की मानसिकता का पता चल पाता है। यदि कोई व्यक्ति हमारे निजी व्यवहार से असंतुष्ट होकर मानसिक अवसाद में पहुँच जाता है तब हमें यह पता चलता है कि व्यावहारिक जीवन में की गयी भूल किसी को कितना कष्ट पहुँचा सकती है। स्वयं की अभिव्यक्ति के संदर्भो अथवा व्यावहारिक जगत् में किये जाने वाले कार्यो के विभिन्न प्रसंगों का निष्पक्ष मूल्याँकन किया जाए तो यह ज्ञात हो जाएगा कि कितने लोगों के अन्तःकरण को हमारे द्वारा वेदना पहुँचायी गयी है। जीवन का सम्मान करने की अभिलाषा द्वारा व्यक्तिगत् एवं सार्वजनिक जीवन की गरिमा को पूर्ण संवेदना के साथ स्वीकार करते हुए अपने व्यवहार को निर्धारित किया जाना चाहिए जिससे एक दूसरे की भावनाओं का आदर किया जा सके। इस प्रकार व्यक्तिगत् उत्कर्ष की अवधारणा के द्वारा मानसिक अवसाद एवं अन्तःकरण की वेदना से मुक्त होने की नैतिक जिम्मेदारी को स्वीकार करते हुए जीवन के सम्मान को व्यावहारिक उत्तरदायित्व के साथ महत्वपूर्ण उपलब्धि मानना चाहिए।

इकीगाई : जीवन में आशाओं और अपेक्षाओं की प्राप्ति

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)
संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

हम सभी एक सुखी और पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। हालाँकि, जीवन के दौरान, हम कई स्थितियों का सामना करते हैं जो हमें दुखी, भ्रमित या तनावग्रस्त बनाती हैं। हम में से अधिकांश लोग एक सुखी और सफल जीवन जीने का उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। यह जापानी किताब इकीगाई लंबे और स्वस्थ जीवन जीने के जापानी रहस्यों का खुलासा करती है। यह हमें ऐसा करियर चुनने में भी मार्गदर्शन करती है जो हमारे जीवन में समृद्धि लाएगा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान को हिरोशिमा और नागासाकी की बमबारी से बड़ा नुकसान हुआ था। इस घटना के बाद जापान सबसे मजबूत देशों में से एक के रूप में उभरा जो अमेरिका के सामने भी खड़ा हो सकता है। न केवल तकनीक इकीगाई बल्कि जापानी लोगों का औसत जीवन काल भी सराहनीय है। जापान में अधिकांश लोग के इकीगाई सिद्धांत का पालन करते हैं। इकीगाई शब्द दो शब्दों 'इकी' से बना है, जिसका अर्थ है 'जीवन' और' कई' , जिसका अर्थ है 'आशाओं और अपेक्षाओं की प्राप्ति'। इकीगाई का एक और अर्थ है 'सुबह बिस्तर से उठने का कारण' होना।

इकीगाई क्या है और उपयोग कैसे कर सकते हैं?

इकीगाई हमारे बारे में कुछ ऐसा बताता है जो की अद्वितीय है, कुछ ऐसा जो हमारे अंदर है और हमें खोजने की जरूरत है। यदि हम अपने इकीगाई को खोजने में सक्षम हैं तो हम जीवन में अपना उद्देश्य पा सकते हैं। यह हमें सही करियर पथ चुनने में भी काफी मदद कर सकता है। अपनी इकीगाई खोजने के लिए इन चरणों का पालन करें

आप जो करना पसंद करते हैं उसे खोजें। आप जो कुछ भी करना पसंद करते हैं और आप उसे अच्छी तरह से कर सकते हैं वह आपका (पैशन) जुनून है। अपने जुनून को खोजना अपने इकीगाई को खोजने की दिशा में पहला कदम है। अगर आपको कोई ऐसी चीज मिल जाए जिसमें आप अच्छे हैं और आप उस काम को करके पैसा भी कमा सकते हैं, तो वह आपका पेशा (प्रोफेशन) होना चाहिए। पेशा होना आपकी इकीगाई खोजने की दिशा में दूसरा कदम है। अगर आप कुछ ऐसा करके पैसा कमा सकते हैं जिसकी दुनिया को जरूरत है या जिससे दुनिया के लोगों का लाभ हो तो वह आपका वोकेशन है। अगर आप कुछ ऐसा कर रहे हैं जिसकी दुनिया को अभी जरूरत है और आपको यह काम करना पसंद है, तो यह आपका मिशन है। आपकी इकीगाई इन सभी 4 गुणो से मिलकर बनी है। जैसा कि आप देख सकते हैं कि चार गुण भी एक दूसरे के साथ ओवरलैप करते हैं और केंद्र में आपकी इकीगाई है। यदि आप जो कुछ भी कर रहे हैं उससे आपको उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर मिल रहा है, तो आपको अपनी इकीगाई मिल गई है।

आपकी इकीगाई को खोजने में आपकी जीवनशैली की प्रमुख भूमिका होती है। पुस्तक लंबे और स्वस्थ जीवन जीने के कुछ सिद्ध तरीके भी बताती है इकीगाई जापानी द्वीप ओकिनावा के संदर्भ में लिखी गयी पुस्तक है जहां लोगों की औसत आयु 90 वर्ष है। इन लोगों का साक्षात्कार लेने पर वे निम्नलिखित जीवनशैली में बदलाव का सुझाव देते हैं–

इकीगाई पुस्तक में बताये गए 10 नियम–

अपने आप को अच्छे दोस्तों से घेरें।

धीमी गति से जीवन जियें ।

खाना खाते वक्त अपना पेट पूरी तरह से न भरें।

अपने शरीर को सुडोल बनाएं ।

वर्तमान में रहें।

हमेशा मुस्कुराएं।

सक्रिय रहें, सेवानिवृत्त न हों।

प्रकृति के साथ जुड़ें।

आभारी रहना सीखें।

अपने इकीगाई को ढूंढे और उसका पालन करें।

तनाव – हमेशा तनाव से दूर रहें। तनाव मुक्त होने के लिए हमें समय–समय पर धीमा और आराम करने की आवश्यकता है। जीवन को एक दौड़ की तरह मत समझो। हालाँकि, थोड़ा तनाव अच्छा है क्योंकि यह दर्शाता है कि आप जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं।

खान–पान – जापानी लोग स्वास्थ्य के प्रति बहुत जागरूक होते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि वे हमेशा संतुलित आहार लें। लंबी उम्र के लिए हमें अपना पेट 80 प्रतिशत तक ही भरना चाहिए। उनके आहार में फल, सब्जियां और मछली शामिल हैं। वे हमेशा अपने कैलोरी सेवन के प्रति सचेत रहते हैं।

जीवनशैली – आप जो कुछ भी करते हैं उसमें अपना प्रवाह खोजें यह अभ्यास एक पल में जीने पर केंद्रित है। एक समय में केवल एक ही चीज पर ध्यान केंद्रित करें। यदि हम केवल एक चीज पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो यह हमारी उत्पादकता को बढ़ाता है और कार्य में समय भी कम लगता है। इसके अलावा, हमें ऐसी गतिविधियाँ अधिक करनी चाहिए जिनका हम आनंद ले सकें। यह हमें जीवन में अपने उद्देश्य का पालन करने में मदद करता है।

आत्म विकास – स्वस्थ जीवन जीने के लिए हम सभी को कुछ आदतों को विकसित करना चाहिए। प्रतिदिन टहलना, ध्यान, योग, सूर्य नमस्कार, पर्याप्त नींद लेना, जल्दी सोना, सोने से पहले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग न करना इसके कुछ उदाहरण हैं। साथ ही धीमी गति से जीवन जीने की कोशिश करें। हमेशा जल्दी में रहने से हमारे जीवन की गुणवत्ता का नाश होता है। इसके अलावा, जब तक हो सके सक्रिय रहें। कई जापानी लोग कभी सेवानिवृत्त नहीं होते हैं।

इकीगाई पुस्तक का सार सारांश के अलावा इस पुस्तक में ऐसा और बहुत कुछ है जिससे आपका जीवन और खुशहाल और संपूर्ण बन सकता है। पुस्तक से याद रखने योग्य उद्धरण

"धीरे चलो और तुम बहुत दूर चले जाओगे।" "एक खुश व्यक्ति भविष्य की चिंता करने की बजाये वर्तमान से बहुत संतुष्ट रहता है।"

"जिसके पास जीने का कारण है वह किसी भी तरह आगे बढ़ता जायेगा ।"

दीपावली

डॉ. विद्यासागर मिश्र 'सागर'
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आओ एक दीपक जलायें उनके भी नाम,
साँसे जिनकी थमी हैं देश रखवाली में।

आरती उतारें बलिदानियों की बार बार,
दीपक जलाएँ हम पूजा वाली थाली में।

दीपक जलाएँ एक, क्रांतिकारियों के नाम,
फेंकाथा जिन्होंने बम शत्रुओं की पाली में।

वन्दे मातरम बोलकर हुए जो शहीद,
'सागर' जलाएँ दीप उनके दिवाली में।।

संग्रहों में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ काव्य रचना एवं सर्वश्रेष्ठ लघु कथा को चयन समिति द्वारा चयनित रचनाकारों को प्रथक–प्रथक

प्रोत्साहन राशि का चेक, शाल एवं सम्मान पत्र

प्रदान कर 25 दिसम्बर 2022 को इंदौर (मध्य प्रदेश) में आयोजित होने वाले **अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह** में पुस्तक विमोचन के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा।

दोनों पुस्तकों हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं — अन्तिम तिथि 15 नवम्बर 2022

- आपकी रचनाएँ स्वरचित, अप्रकाशित एवं मौलिक होनी चाहिये।
- आपके द्वारा प्रेषित चार रचनाओं में से चुनी गयी दो रचनाओं का प्रकाशन किया जायेगा।
- प्रकाशित पुस्तक की पाँच प्रतियाँ लेखक को डाक द्वारा निशुल्क उपहार स्वरूप प्रेषित की जायेगी।
- आप अतिरिक्त पुस्तकें भी मंगवा सकते हैं जो प्रकाशक संस्था आपको लागत मूल्य पर उपलब्ध करायेगी।
- पुस्तक विवरण : साईज – 5.25x8.5 इंच, हार्डबाउण्ड, रंगीन आवरण (लेमिनेटेड), इनर ब्लैक एवं व्हाईट होगा।
- यह पुस्तक आई.एस.बी.एन. के साथ प्रकाशित की जायेगी।

विशेष :

- काव्य रचना 20 पंक्तियों से अधिक नहीं हानी चाहिये (कम से कम चार रचनाएँ प्रेषित करनी आवश्यक है, जो एक या अधिक विषयों पर आधारित हो सकती है)।
- प्रत्येक लघु कथा शब्द सीमा अधिकतम 250 शब्द होनी चाहिये (कम से कम चार लघु कथाएँ प्रेषित करनी आवश्यक है, जो एक या अधिक विषयों पर आधारित हो सकती है)।
- रचनाओं का मुद्रण लेखक / लेखिका के नाम एवं फोटो के साथ किया जाएगा।
- लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाईल में टाईप करा कर ही भेजें। साथ में पी.डी.एफ. फाईल भी अपलोड करें।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें : 7415410516

दाम्पत्य प्रेम का उत्सव है

करवा चौथ

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास,
कैण्ट प्रधान डाकघर, नदेसर,वाराणसी

करवा चौथ सुहागिनों का एक व्रत मात्र नहीं है, बल्कि दाम्पत्य प्रेम का उत्सव भी है। रिश्तों की डोर को मजबूत रखने का एहसास भी है। चौदहवीं का चाँद की खूबसूरती उपमा अपने यहाँ खूब दी जाती है, पर करवा चौथ के चाँद की बात ही निराली होती है। इस दिन तो उनकी बड़ी मनुहार होती है और चाँद भी खूब लुका–छिपी खेलता है। वैसे भी चाँद की शीतलता और मधुरता का स्वभाव दाम्पत्य प्रेम के लिए जरुरी है। जीवन साथी को चाँद की उपमा दी जाती है और चांदनी को प्रेम की। ऐसे में करवा चौथ के साथ चाँद का तादात्म्य और भी गहरा हो जाता है। करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्यौहार है, जिसे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में बहुत श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। करवा चौथ के दिन श्री गणेश, मां गौरी और चंद्रमा का पूजन किया जाता है। पूजन करने के लिए बालू की वेदी बनाकर सभी देवों को स्थापित किया जाता है। कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाये जाने वाले इस त्यौहार में सुहागिन स्त्रियाँ अपने पति की लंबी आयु, स्वास्थ्य व सौभाग्य की कामना करते हुए व्रत रखती हैं। इस पर्व पर महिलाएं हाथों में मेहंदी रचाकर, चूड़ी पहन व सोलह श्रृंगार कर अपने पति की पूजा कर व्रत का पारायण करती हैं। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पहले करीब 4 बजे के बाद शुरू होकर रात में चंद्रमा दर्शन के बाद संपूर्ण होता है। इस दिन पत्नियाँ निराहार रहकर चन्द्रोदय की प्रतीक्षा करती हैं और रात में चन्द्रमा को अर्घ्यश देने के उपरांत ही अपना व्रत तोड़ती हैं। करवा चौथ के व्रत का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। कहते हैं कि जब पांडव वन–वन भटक रहे थे तो भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को इस दिव्य व्रत के बारे बताया था। इसी व्रत के प्रताप से द्रौपदी ने अपने सुहाग की लंबी उम्र का वरदान पाया था। भारत देश में वैसे तो चौथ माता जी के कई मंदिर स्थित है, लेकिन सबसे प्राचीन एवं सबसे अधिक ख्याति प्राप्त मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गाँव में स्थित है। चौथ माता के नाम पर इस गाँव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया। चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीमसिंह चौहान ने की थी।

करवा चौथ व्रत से कई कहानियां जुडी हुई हैं। इनमें से सर्वप्रमुख एक साहूकार के सात बेटों और उनकी एक बहन करवा से जुडी हुई है। इस कहानी के अनुसार सभी सातों

भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। यहाँ तक कि वे पहले उसे खाना खिलाते और बाद में स्वयं खाते थे। एक बार उनकी बहन ससुराल से मायके आई हुई थी। शाम को भाई जब अपना व्यापार-व्यवसाय बंद कर घर आए तो देखा कि उनकी बहन बहुत व्याकुल थी। सभी भाई खाना खाने बैठे और अपनी बहन से भी खाने का आग्रह करने लगे, लेकिन बहन ने बताया कि उसका आज करवा चौथ का निर्जल व्रत है और वह खाना सिर्फ चंद्रमा को देखकर उसे अर्घ्या देकर ही खा सकती है। चूँकि चंद्रमा अभी तक नहीं निकला है, इसलिए वह भूख-प्यास से व्याकुल है। सबसे छोटे भाई को अपनी बहन की हालत देखी नहीं गई और वह दूर पीपल के पेड़ पर एक दीपक जलाकर चलनी की ओट में रख देता है। दूर से देखने पर वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चतुर्थी का चाँद उदित हो रहा हो। इसके बाद भाई अपनी बहन को बताता है कि चाँद निकल आया है, तुम उसे अर्घ्य देने के बाद भोजन कर सकती हो। बहन खुशी के मारे सीढ़ियों पर चढ़कर चाँद को देखती है, उसे अर्घ्य देकर खाना खाने बैठ जाती है। वह पहला टुकड़ा मुँह में डालती है तो उसे छींक आ जाती है। दूसरा टुकड़ा डालती है तो उसमें बाल निकल आता है और जैसे ही तीसरा टुकड़ा मुँह में डालने की कोशिश करती है तो उसके पति की मृत्यु का समाचार उसे मिलता है। ऐसे में वह व्याकुल होकर तड़प उठती है। ऐसे में उसकी भाभी उसे सच्चाई से अवगत कराती है कि करवा चौथ का व्रत गलत तरीके से टूटने के कारण देवता उससे नाराज हो गए हैं। सच्चाई जानने के बाद करवा निश्चय करती है कि वह अपने पति का अंतिम संस्कार नहीं होने देगी और अपने सतीत्व से उन्हें पुनर्जीवन दिलाकर रहेगी। वह पूरे एक साल तक अपने पति के शव के पास बैठी रहती है। उसकी देखभाल करती है। उसके ऊपर उगने वाली सूईनुमा घास को वह एकत्रित करती जाती है।

एक साल बाद फिर करवा चौथ का दिन आता है। उसकी सभी भाभियाँ करवा चौथ का व्रत रखती हैं। जब भाभियाँ उससे आशीर्वाद लेने आती हैं तो वह प्रत्येक भाभी से श्यम सूई ले लो, पिय सूई दे दो, मुझे भी अपनी जैसी सुहागिन बना दो ऐसा आग्रह करती है, लेकिन हर बार भाभी उसे अगली भाभी से आग्रह करने का कह चली जाती है। इस प्रकार जब छठे नंबर की भाभी आती है तो करवा उससे भी यही बात दोहराती है। यह भाभी उसे बताती है कि चूँकि सबसे छोटे भाई की वजह से उसका व्रत टूटा था अतः उसकी पत्नी में ही शक्ति है कि वह तुम्हारे पति को दोबारा जीवित कर सकती है, इसलिए जब वह आए तो तुम उसे पकड़ लेना और जब तक वह तुम्हारे पति को जिंदा न कर दे, उसे नहीं छोड़ना। ऐसा कहकर वह चली जाती है। सबसे अंत में छोटी भाभी आती है। करवा उनसे भी सुहागिन बनने का आग्रह करती है, लेकिन वह टालमटोल करने लगती है। इसे देख करवा उन्हें जोर से पकड़ लेती है और अपने सुहाग को जिंदा करने के लिए कहती है। भाभी उससे छुड़ाने के लिए नोचती है, खसोटती है, लेकिन करवा नहीं छोड़ती है। अंत में उसकी तपस्या को देख भाभी पसीज जाती है और अपनी छोटी अँगुली को चीरकर उसमें से अमृत उसके पति के मुँह में डाल देती है। करवा का पति तुरंत श्रीगणेश-श्रीगणेश कहता हुआ उठ बैठता है। इस प्रकार प्रभु कृपा से उसकी छोटी भाभी के माध्यम से करवा को अपना सुहाग वापस मिल जाता है। फिल्मों और धारावाहिकों ने करवा चौथ के व्रत को ग्लैमराइज रूप भी दिया है। कुछ ही क्षेत्रों में सीमित इस त्यौहार को इनके चलते देशव्यापी पहचान मिली है। करवाचौथ को लेकर तमाम बातें भी कही जाती हैं। मसलन, मात्र पत्नी द्वारा ही व्रत क्यों रखा जाये या मात्र व्रत रखने से भला कौन सी उम्र बढ़ती है ? सवाल उठने स्वाभाविक भी हैं और इनके तार्किक जवाब देना मुश्किल भी है। अपने देश में व्रत और त्यौहारों की दीर्घ परंपरा रही है और यह भी उतना ही सच है कि अधिकतर त्यौहारों और व्रत का उत्तरदायित्व महिलाओं का ही होता है। कुछ लोग इसे पितृ-सत्तात्मक सोच से जोड़कर देखते हैं, तो कुछेक का मानना है कि पुरुषों में इतना संयम और धैर्य नहीं होता की वे इसे निभा सकें। खैर, तर्क-वितर्कों से परे तमाम परम्पराएँ आज भी समाज को जीवंत रूप देती हैं। आस्था उनका मूल तत्व है।

वस्तुतः करवा चौथ के व्रत को फायदे-नुकसान या बाध्यता की बजाय प्यार और समर्पण के नजरिये से देखने की जरूरत है। अपने रिश्तों में संजीदगी भी व्रत का जरुरी हिस्सा होता है। उम्र का बढ़ना या न बढ़ना अपने हाथ में तो नहीं है, लेकिन प्यार की उम्र जरूर बढ़ती है। सिर्फ पत्नियाँ ही नहीं बल्कि अब तो पति भी अपनी-अपनी तरह से प्यार का इजहार करने में पीछे नहीं रहते। चाहे वो साथ में चाँद का इंतजार हो, छुट्टी लेकर पूरा दिन साथ में बिताना हो, उपहार देना हो या साथ में व्रत रखना हो। ऐसे में व्रत को केवल सिद्धांत रूप में देखना नाकाफी होगा। यह व्रत पति-पत्नी में प्यार, सम्मान, विश्वास को मजबूत करते हुए रिश्तों को प्रगाढ़ बनाता है। करवा चौथ के व्रत और पर्व को समग्रता में देखते हुए अपने वैवाहिक जीवन को और और सुदृढ़ करने की दोतरफा कोशिश जरूर होनी चाहिए। करवा चौथ का पर्व हर साल आता है और पूरे जोशो-खरोश के साथ सेलिब्रेट किया जाता है। करवा चौथ सिर्फ एक त्यौहार ही नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक सन्देश भी छिपा हुआ है। आज समाज में जब रिश्तों के मायने बदलते जा रहे हैं, भौतिकता की चकाचौंध में हमारे पर्व और त्यौहार भी उपभोक्तावादी संस्कृति तक सिमट गए हैं, ऐसे में करवा चौथ के मर्म और मूल को समझने की जरूरत है। करवा चौथ (करक चतुर्थी) अर्थात भारतीय नारी के समर्पण, शीलता, सहजता, त्याग, महानता एवं पतिपरायणता को व्यक्त करता एक पर्व। दिन भर स्वयं भूखा प्यासा रहकर रात्रि को जब मांगने का अवसर आया तो अपने पति देव के मंगलमय, सुखमय और दीर्घायु जीवन की ही याचना करना यह नारी का त्याग और समर्पण नहीं तो और क्या है ? करवा चौथ का वास्तविक संदेश दिन भर भूखे रहना ही नहीं अपितु यह है नारी अपने पति की प्रसन्नता के लिए, सलामती के लिए इस हद तक जा सकती है कि पूरा दिन भूखी-प्यासी भी रह सकती है। करवा चौथ नारी के लिए एक व्रत है और पुरुष के लिए एक शर्त। शर्त केवल इतनी कि जो नारी आपके लिए इतना कष्ट सहती है उसे कष्ट न दिया जाए। जो नारी आपके लिए समर्पित है उसको और संतप्त न किया जाए। जो नारी प्राणों से बढ़कर आपका सम्मान करती है जीवन भर उसके सम्मान की रक्षा का प्रण आप भी लो। उसे उपहार नहीं आपका प्यार चाहिए।

रोशनी का जगमगाता हुआ पर्व

दीपावली

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय बालिका
विद्यालय, लखनऊ

हमारा भारत विभिन्न संस्कृतियों, उत्सवों एवं पर्वों से श्रंगारित देश है। जिनमें से एक पर्व 'दीपावली' है जो हर वर्ष अत्यंत हर्ष एवं उल्लास के साथ देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीराम अपने अनुज श्री लक्ष्मण और पत्नी देवी सीता के साथ चौदह वर्षो के कठिन वनवास को पूर्ण कर अयोध्या वापस लौटे थे और उनके आगमन की खुशी में पूरी अयोध्या नगरी को दुल्हन की तरह सजाया गया था, उसी स्वर्णिम पल को जीवन्त करने हेतु आज भी घर–घर में दीपक जला कर दीपावली का पर्व मनाया जाता है। श्रीराम का संपूर्ण जीवन हमें उच्च आदर्शो से परिपूर्ण जीवन जीने की एवं रिश्तो को इमानदारी से निभाने की प्रेरणा देता है। दीपावली पांच दिवसीय सामाजिक एवं सामूहिक पर्व है जो अंधेरी काली अमावस की रात को असंख्य दीप प्रज्ज्वलित कर समाज को एक सूत्र में पिरोने का संदेश देती है। यह उत्सव धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

दीपावली का धार्मिक पहलू अत्यन्त महत्वपूर्ण है, मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु ने त्रेता युग में भगवान राम के रूप में जन्म लेकर अहंकारी लंकापति रावण का वध कर संपूर्ण समाज को बुराई पर अच्छाई का संदेश दिया था। धार्मिक ग्रंथ रामायण में उनके जीवन से मिली शिक्षाओं को ग्रहण कर उनका पालन कर एवं आने वाली नई पीढ़ी में भी उन गुणों के निर्माण करने की प्रेरणा मिलती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सम्पूर्ण जीवन हर युग में अनुकरणीय रहा है।

दीपावली के अध्यात्मिक पहलू पर ध्यान दें तो आज समाज में सर्वत्र कटुता, शत्रुता, नफरत एवं ईर्ष्या का समावेश होता जा रहा है ऐसे में दीपावली प्रेम, एकता एवं सौहार्द का संदेश देती है साथ ही सम्पूर्ण समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर जाने हिलमिल कर साथ रहने की प्रेरणा देती है।

दीपावली पर्यावरण शोधन का संदेश भी देती है। वर्षा ऋतु के समापन और शरद ऋतु के आगमन से पूर्व घरों में होने वाली वार्षिक सफाई समाज को स्वच्छ एवं स्वस्थ रहने की प्रेरणा देते हैं जिससे घरों में सकारात्मक ऊर्जा का निवास रहता है इसके साथ ही वातावरण में मौजूद कीट, पतंगे, कीटाणु एवं बहुत से विषैले जीवों से होने वाले दुष्प्रभाव को घी और तेल के असंख्य दीपों को प्रज्ज्वलित कर समाप्त किया जा सकता है।

दीपावली के अवसर पर नया सामान खरीदने की परम्परा है जिसमें कपड़े, गहनें ,वाहन, बर्तन, मिट्टी के दिये, खील चूरा एवं मिठाई आदि बहुत बिकता है। इस अवसर पर सभी अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ ना कुछ खरीदते हैं, जिससे व्यापार में वृद्धि होती है जो देश की आर्थिक उन्नति का परिचायक है। यही कारण है कि यह पर्व अमीर और गरीब सभी के लिए महत्वपूर्ण है

दीपावली का पर्व घरों तक सीमित नहीं रहता है और ना ही किसी पंथ, समाज, जाति एवं धर्म तक ही सीमित रहता है बल्कि इसे समाज के सभी वर्ग एवं जाति के लोग सामूहिक रूप से बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाते हैं क्योंकि यह विभिन्न संस्कृतियों से परिपूर्ण पूरे भारत में मनाया जाने वाला पर्व है। ऐसी मान्यता है कि जिस देश में जितने ही अधिक पर्व एवं उत्सव मनाए जाते हैं वह देश सांस्कृतिक रूप से उतना ही धनी एवं उन्नत होता है। इस कथन की कसौटी पर भारत विश्व का सर्वाधिक जीवंत देश माना जाता है क्योंकि यहां पर हर दिन कोई न कोई त्यौहार एवं पर्व मनाया जाता है।

दीपावली का पर्व कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से प्रारंभ होकर शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक मनाया जाने वाला पूरे पांच दिन का त्यौहार है। त्रयोदशी को वैद्य धन्वंतरि का पूजन कर निज राष्ट्र हेतु स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना की जाती है, वहीं मुख्य द्वार पर तेल का दीपक जलाकर यमराज के निमित्त पूजन दर्शन करते हैं, मान्यता यह भी है इस दिन यमुना नदी में स्नान करना और दीप दान करना विशेष फलदाई होता है। इसी दिन नए बर्तन, वाहन, आभूषण आदि खरीदने का भी प्राविधान है इस पर्व को धनतेरस भी कहते हैं। धनतेरस के अगले दिन को नरक चौदस अर्थात छोटी दीवाली के रूप में मनाया जाता है। यह दिन राक्षस नरकासुर पर भगवान कृष्ण की जीत की खुशी के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन घर की सफाई कर भगवान कृष्ण की उपासना एवं पूजन हेतु समारोह का आयोजन होता है। पर्व के तीसरे दिन को बड़ी दीपावली के रूप में मनाया जाता है, इस दिन सुख समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी एवं बुद्धि और ज्ञान के देव श्री गणेश जी का आशीर्वाद पाने के लिए इनके पूजन का विधान है। जलते हुए दीपक अंधकार को दूर कर जीवन में आशा एवं प्रसन्नता का संचार करते हैं और सुखमय जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। इस दिन बच्चे विभिन्न प्रकार की फुलझड़ी और पटाखे जला कर अपनी खुशी का प्रदर्शन करते हैं। दीपावली के पर्व की श्रृंखला में चौथा दिन गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है, इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है जिसमें तरह-तरह के व्यंजन बनाकर भगवान कृष्ण को समर्पित किये जाते हैं, मान्यता है कि इस दिन भगवान कृष्ण ने गोकुल वासियों की क्रोधित देवराज इंद्र के द्वारा की गई भयंकर बारिश से रक्षा करने हेतु गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा पर उठाकर सात दिनों तक बारिश का सामना करते रहे अंततः इंद्र को हार मानकर बारिश बंद करनी पड़ी अतः यह पर्व अहंकार पर श्रद्धा एवं विश्वास की विजय के रूप में मनाया जाता है। दीपावली का पांचवा दिन भाई-बहन के प्रेम भरे बन्धन को दर्शाता हुआ भाई दूज का पर्व मनाया जाता है, इस दिन बहनें अपने भाइयों को टीका करती हैं, आरती उतारती हैं उनका मुंह मीठा करती हैं और उनके सुख समृद्धि की कामना करती हैं और भाई भी उन्हें यथाशक्ति उपहार देकर अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं इस दिन का मुख्य महत्व मृत्यु के देवता यमराज और उनकी बहन यमुना नदी के प्रेम की कहानी है ।

दीपावली का पर्व हम सभी को सत्य कर्म, सद्भावना,मर्यादा एवं आपसी प्रेम का सुन्दर संदेश देता है। यह एक लौकिक पर्व है, यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं बल्कि अन्तरिम अंधकार को मिटाने का संदेश भी देता है ,जब सम्पूर्ण समाज इसके संदेश को आत्मसात कर लेगा तभी इसे मनाने की सार्थकता है। यूं तो हर जलता हुआ दीपक मानव को प्रेरणा देता है कि जीवन की राहें कितनी भी कठिन हो कभी पलायन न करे और सकारात्मक एवं नवीनतम राह को प्रज्ज्वलित करने का संकल्प लें।

समष्टि रूप में स्वास्थ्य संपदा, रूप संपदा, धन संपदा, शस्य संपदा, शक्ति सम्पदा तथा उल्लास और आनंद को परिवर्धित करने वाले दीपावली पर्व का धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व अनुपम एवं वर्तमान में अनुकरणीय है, जिसके कारण यह पर्व सदैव पर्वराज के रूप में हम सभी के हृदय में विराजमान रहेगा। आप सभी को दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दीपोत्सव

– योगी शिवनन्दन नाथ

संपूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का त्यौहार सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण दीपोत्सव है। इस दिन 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर भगवान श्री राम पत्नी सहित और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या अपने राज्य वापस लौटे थे। अयोध्या वासियों का हृदय अपने प्रिय राजा के आगमन की सूचना पाकर प्रफुल्लित हो उठा था। श्री राम के स्वागत के लिए समस्त अयोध्या वासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि दीपक के प्रकाश से जगमगा उठी। तब से आज तक यह दीपोत्सव, प्रकाशवर्ष, हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है।

त्योहार या उत्सव हमारे सुख और हर्षोल्लास के प्रतीक हैं, जो परिस्थिति के अनुसार अपने रंग रूप और आकार से भिन्न होते हैं। त्योहार मनाने के विधि विधान भी भिन्न हो सकते हैं किंतु इनका अभिप्राय आनंद प्राप्ति या किसी विशिष्ट आस्था का संरक्षण होता है। सभी त्योहारों से कोई ना कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी हुई है और इन कथाओं का संबंध तर्क से न होकर अधिकतर आस्था से होता है। यह भी कहा जा सकता है कि पौराणिक कथाएं प्रती. कात्मक होती है। इस पर्व के साथ पांच पर्व जुड़े हुए हैं। दीपावली का त्यौहार दीपावली से दो दिन पूर्व आरंभ होकर दो दिन पश्चात समाप्त होता है।

दीपावली का शुभारंभ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष त्रयोदशी के दिन से होता है उसे धनतेरस कहा जाता है इस दिन आरोग्य के देवता धन्वंतरि की आराधना की जाती है। इस दिन घी के दीए जलाकर देवी लक्ष्मी का आवाहन किया जाता है। इस दिन नए नए बर्तन आभूषण खरीदने की प्रथा है। दूसरे दिन चतुर्दशी को नरक चौदस के रूप में मनाया जाता है। इसे छोटी दीपावली भी कहा जाता है। इस दिन एक पुराने दीपक में सरसों के तेल व पांच अन्न के दाने डालकर इसे घर की नाली की ओर जला कर रखा जाता है। यह दीपक यम दीपक कहलाता है। तीसरे दिन अमावस्या को दीपावली का त्यौहार पूरे भारतवर्ष के अतिरिक्त विश्व भर में बसे भारतीय, हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस दिन देवी लक्ष्मी व गणेश की पूजा की जाती है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न तरीकों से यह पर्व मनाया जाता है। असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है दीपावली। यह नेपाल और भारत के सर्वाधिक सुखद त्योहारों में से एक माना गया है। इस दिन से नेपाल संवत में नव वर्ष प्रारंभ होता है। जैन मतावलंबियों के अनुसार 24 वे तीर्थकर महावीर स्वामी को इस दिन मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इसी दिन उनके प्रथम शिष्य गौतम गणधर को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण त्यौहार है। इसी दिन अमृतसर में सन 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ था। इसी दिन सन् 1619 में सिक्खों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

एक अन्य दंतकथा के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने इसी दिन नरकासुर राक्षस का वध कंस के कारागार से 16000 कन्याओं को मुक्त कराया था। स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीप. ावली के दिन ही हुआ। दीपावली के दिन गंगा तट पर इन्होंने ओम कहते हुए जल समाधि ली थी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने भारतीय संस्कृति के जन नायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व समाज में उल्लास,भाईचारे व प्रेम का संदेश लाता है। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाया जाने वाला पर्व है, जो स्वयं में धार्मिक सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टता रखता है।

भीड़

श्रीमती शोभा रानी तिवारी
इंदौर, मध्य प्रदेश

'मन्नू ने कहा... 'मम्मी हम रावण देखने जाएंगे'। तभी राजू ने मम्मी से पूछा...'हम हर वर्ष रावण का पुतला जलाते हैं, लेकिन वह हर बार और अधिक शक्तिशाली होकर प्रगट हो जाता है आखिर क्यों मम्मी'? 'रावण मरता क्यों नहीं'?

'मम्मी ने बताया बेटा.. रावण बुराई का प्रतीक है', जो आज तक हर इंसान के मन में चोरी, डकैती, कालाबाजारी, भ्रष्टाचारी के रूप में विद्यमान है'। तभी मुन्नी ने आवाज दी...'भैया चलो ना जल्दी से'..

'ठीक है मुन्नी' जब तीनों जाने लगे तो मम्मी ने कहा... 'बेटा वहां भीड़ होगी .. तुम तीनों एक–दूसरे का हाथ पकड़े रहना, वर्ना भीड़ में खो जाओगे तो मुश्किल हो जाएगी'।

'जी मम्मी' कहकर तीनों चले गए।

वहां रावण का पुतला देखा.... जो बड़ी–बड़ी आंखो से डरा रहा था। बड़े–बड़े दांत दिखाकर चिढ़ा रहा था। काली मूंछों पर ताव देकर कहा रहा था, कि तुम लोग मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हो। वहां राम और लक्ष्मण के वेश में दो बालक आए थे। जब राम ने बाण चलाया ..तो रावण जलने लगा। तभी बम की आवाज से मुन्नी डर गई, और एक चिंगारी छिटककर भीड़ में आ गिरी। लोग इधर–उधर भागने लगे... तभी राजू, मन्नू और मुन्नी का हाथ छूट गया, वे अलग–अलग हो गए, अब राजू क्या करें? ,वह तो घबरा गया।

कुछ देर बाद मन्नू तो मिल गया, लेकिन मुन्नी नहीं मिल रही थी। राजू ने भीड़ कम होने का इंतजार किया, जब भीड़ कम हुई तो, मन्नू की निगाह मुन्नी पर पड़ी, वह एक कोने में बैठी रो रही थी, और भैया–भैया कहकर आवाज लगा रही थी। राजू और मन्नू दोनों दौड़कर मुन्नी के पास पहुंचे, और उसे गले से लगा लिया।

घर जाकर सारी बातें मम्मी को सुनाई और संकल्प किया कि अब हम भीड़ में कभी नहीं जाएंगे।

प्रकाश पर्व पर अपने अंर्तमन को आलोकित करें नेत्रदान के संकल्प द्वारा

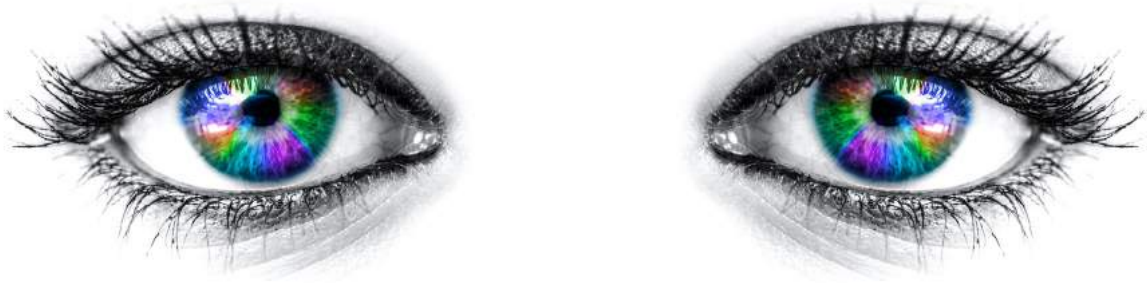

सीताराम गुप्ता
पीतम पुरा, दिल्ली

दीपावली स्वच्छता और प्रकाश का पर्व है। दीपावली को प्रकाशोत्सव कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि प्रकाश चाहे भौतिक जगत का हो अथवा हमारे अंतर्मन का प्रकाश का इस पर्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अंतर्मन का प्रकाश तो आनंदित करता ही है भौतिक जगत का प्रकाश भी कम आनंदित नहीं करता। अंतर्मन का प्रकाश जहां सद्वृत्तियों द्वारा उत्पन्न एवं अनुभव किया जा सकता है वहीं बाह्य जगत के प्रकाश को अनुभव करने के लिए चर्म चक्षुओं का होना अनिवार्य है। चर्म चक्षुओं के अभाव में प्रकाश ही नहीं सारे संसार का सौंदर्य निरर्थक है। एक नेत्रविहीन व्यक्ति इस सुंदर संसार के अद्वितीय व अपरिमित सौंदर्य का आनंद नहीं उठा सकता।

इस संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जो न केवल दीपावली के प्रकाश का आनंद नहीं उठा सकते अपितु वे प्रकृति के किसी भी प्रकार के सौंदर्य को देखकर उससे आनंदित नहीं हो सकते। पूरा जीवन ही उनके लिए एक अंधकारमय दीर्घ रात्रि बनकर रह जाता है। यदि ऐसे लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही इस सुंदर संसार को देखकर आनंदित हो सकें तो कितना अच्छा हो! लेकिन क्या ये संभव है? यदि संभव है तो कैसे संभव है? हां ये संभव है लेकिन तभी जब उनके नेत्रों की ज्योति लौट आए। और ये तभी संभव है जब कोई अपने नेत्रों की ज्योति उन्हें भेंट कर दे। और इसको संभव बनाने के लिए मात्र हमारे एक संकल्प की आवश्यकता है। वह संकल्प है नेत्रदान का संकल्प। हमारे जीवन के बाद हमारी आंखें किसी दूसरे की आंखों को रोशन कर सकें इसके लिए हमें नेत्रदान करने का संकल्प लेना होगा।

मरने के बाद प्रायः शरीर के अंगों का कोई उपयोग नहीं हो पाता। पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार कर दिया जाता है अथवा उसे दफ्ना दिया जाता है। प्रायः कहा जाता है कि खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है। ये शरीर भी साथ नहीं जाता। ऐसे में इसका सदुपयोग हो जाए तो क्या बुराई है? आंखें दान करने का संकल्प लेकर तो देखिए उसी से लगेगा कि मरने के बाद भी शरीर का सदुपयोग हो रहा है और बिल्कुल खाली हाथ नहीं जा रहे हैं। जिस दिन ऐसा करेंगे जीवन सार्थक लगने लगेगा। एक बेकार से बेकार अथवा नकारा से नकारा व्यक्ति भी नेत्रदान का संकल्प लेकर अपने जीवन को उपयोगी व सार्थक बना सकता है। सोचिए कितनी प्रसन्नता होगी उस व्यक्ति को जब वो पहली बार इस संसार के सौंदर्य को देख पाएगा? क्या ये नेत्रदान करने का संकल्प लेने वाले के लिए कम प्रसन्नता की बात होगी?

नेत्रदान करने का संकल्प मात्र किसी के अंतर्मन को आलोकित करने के लिए पर्याप्त होगा। यदि हम मरने के बाद अपनी आंखों को दान करने का संकल्प ले लें तो हमारे ऊपर तो कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन किसी की सूनी आंखें जीवनभर के लिए रोशन हो जाएंगी, उसका जीवन सुंदर हो जाएगा, इसमें संदेह नहीं। प्रायः जब हमारे पास अधिक भोजन आदि होता है तो हम उसको खराब होने से पहले किसी न किसी जरूरतमंद को दे देते हैं। यदि हम अपने नेत्रों को अंत्येष्टि के दौरान शरीर के साथ नष्ट हो जाने से पूर्व दान कर दें तो किसी जरूरतमंद का जीवन संवर सकता है। वो भी इस संसार से विदा होने से पूर्व हमारी ही तरह कुछ समय तक संसार के सौंदर्य का आनंद उठा सकता है। अपने आत्मीयजनों के स्पर्श के साथ-साथ उन्हें देखकर भी आनंदित हो सकता है। जहां तक दान की बात है दान का हर धर्म में महत्त्वपूर्ण स्थान है और नेत्रदान से बड़ा दान और क्या होगा? नेत्रदान के संकल्प का सीधा-सा अर्थ है कि हम धार्मिक ही नहीं संवेदनशील भी कम नहीं हैं।

महर्षि दधीचि ने राक्षसों का संहार करने के लिए अस्त्र बनाने के लिए अपनी अस्थियों तक को दान कर दिया था। नेत्रदान करने के लिए हमें जीवन का त्याग करने अथवा जीते जी अन्य कुछ करने की जरूरत नहीं। यह तो देहावसान के बाद ही संपन्न होने वाली क्रिया है। हमारे संकल्प के अनुसार हमारे मरने के बाद हमारी आंखें किसी अन्य को प्रत्यारोपित कर दी जाएंगी। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण क्या हो सकता है कि हम वो चीज दान कर रहे हैं जिसको नष्ट हो जाना है। जिसका हमारे या हमारे परिवार के लिए कोई मूल्य नहीं। हमारे विवेकपूर्ण संकल्प के कारण ऐसी वस्तु जो हमारे लिए किसी काम की नहीं लेकिन किसी अन्य के जीवन को रोशन कर दे इससे अधिक प्रसन्नता की बात हमारे लिए ही नहीं हमारे परिवार के सदस्यों के लिए भी नहीं हो सकती।

यदि हम नेत्रदान का संकल्प लेते हैं तो हमें न केवल इस बात से संतुष्टि मिलेगी व उस संतुष्टि से प्रसन्नता होगी कि हमारी आंखों से अन्य कोई भी देख सकेगा अपितु हम अपने देहावसान के उपरांत भी इस सुंदर संसार को देखते रहने का अवसर पा सकेंगे। हमारा नेत्रदान का संकल्प इस सुंदर संसार को देखने की हमारी अवधि को बढ़ा देगा। कहा गया है कि यदि स्वयं प्रसन्न रहना है तो दूसरों के जीवन में प्रसन्नता लाने का प्रयास कीजिए। जब हमारे चारों और प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तो हमारी प्रसन्नता भी निश्चित हो जाएगी। यदि हम दूसरों के जीवन में रोशनी भरने का प्रयास करेंगे तो हमारा अपना जीवन स्वयं प्रकाशित हो जाएगा। बाह्य प्रकाश हमें केवल उतने समय तक आनंद प्रदान कर सकता है जितने समय तक हम रोशनी करते हैं लेकिन किसी दूसरे के जीवन में प्रकाश भर देने का संकल्प जीवन भर हमारे अपने अंतर्मन को प्रकाशित करता रहेगा।

प्रकाशोत्सव के अवसर पर दूसरों के जीवन को प्रकाशित करने का निर्णय लेना सचमुच बहुत बड़ी बात होगी। कुछ लोग कई गलतफहमियों का शिकार होते हैं अतः नेत्रदान करने के लिए आगे नहीं आते। कुछ लोग इस अंधविश्वास के शिकार होते हैं कि मरने के बाद किसी अंग के अभाव में अंतिम संस्कार करने पर उन्हें मोक्ष नहीं मिलेगा अथवा अगले जन्म में वे उस अंग से विहीन ही रहेंगे। यह अत्यंत भ्रामक सोच है। ऐसा कुछ नहीं होता। मोक्ष तो उसी दिन मिल जाएगा जिस दिन हम नेत्रदान जैसा महत्त्वपूर्ण व लोकोपयोगी संकल्प ले लेंगे।

कहते हैं हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें अगला जन्म मिलता है। हम मनुष्य के अतिरिक्त किसी अन्य योनि में भी जन्म ले सकते हैं। मैं पुनर्जन्म में दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं करता लेकिन नेत्रदान करने पर मृत्यु के उपरांत भी इस सुंदर संसार को अपनी आंखों से देखते रहने का अवसर मिलना क्या मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म से कम होगा? यदि हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं तो इतना तो अवश्य स्वीकार करेंगे कि यदि हम नेत्रदान जैसा उत्कृष्ट दान करते हैं तो इस सद्कर्म के फलस्वरूप भी पुनर्जन्म में मनुष्य के रूप में जन्म लेने की संभावना भी अवश्य ही प्रबल हो जाएगी। ■

त्याग दिए सब सपने
कुछ अलग करने के लिए,
राम ने बहुत कुछ खो दिया
श्री राम बनने के लिए।

ईश्वर से यह कभी मत कहो
कि समस्या विकट है,
बल्कि समस्या से कह दो
कि ईश्वर मेरे निकट है।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

रामचरितमानस की प्रासंगिकता

डॉ. शकुंतला कालरा
संपादक (अध्यात्म संदेश)
एसोसियेट प्रोफेसर
मैत्रेयीकॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

आधुनिक युग जहाँ भौतिक सुख–सुविधओं का युग है, साथ ही समस्याओं और तनावों से घिरे जीवन का भी प्रतिनिधित्व करता है। आज भारत ही नहीं समस्त विश्व अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। समस्याओं से डरना या भागना किसी भी समस्या का हल नहीं है, यह समझाया है हमारे युग–पुरुष श्री राम ने और कर्मयोगी श्री कृष्ण ने। इसलिए आज रामचरितमानस और गीता विश्व्यापी बन गई हैं। तुलसीदास के रामचरितमानस में कथानायक राम का चरित न केवल भक्तों का रंजन करता है वरन् वह जीने की कला भी सिखाता है। उनकी लीलाएँ संदेश देती हैं। वे जनमानस की प्ररेक हैं। जीवन के किस मोड़ पर किस प्रकार का निर्णय लेना है, रामचरितमानस इसका मार्ग–दर्शन करता है। रामचरितमानस मात्र हिन्दुओं का ही ग्रंथ नहीं, युग विशेष का काव्य भी नहीं वरन् विश्वव्यापी सदैव सामयिक बनी रहने वाली कालजयी रचना है। तुलसीदास मात्रा कवि नहीं थे, वे युगद्रष्टा संत पुरुष थे **'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कर हित होई।''** विचारधारा के पोषक संत ने हरयुग की समस्याओं को अपने ज्ञान–चक्षुओं से देख लिया था। 21वीं सदी में जाति, धर्म एवं भाषागत समस्याएँ होंगी, उत्तरकांड में तुलसीदास ने इसका उल्लेख पहले ही कर दिया था। सत्संग और सद्विचार के अभाव में भौतिक सुख एवं ऐन्द्रिय सुख को सर्वोपरि समझने वाली मनुष्य की अंधी दौड़ उसे अनेक समस्याओं के मकड़जाल में फांसती जा रही है। आज की समस्याओं के कारण और निवारण दोनों रामचरितमानस में हैं। रामचरितमानस की प्रासंगिकता को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं, वह स्वयंसिद्ध है।

सामान्य कवि किसी एक देश, काल और समाज तक अपने को सीमित रखते हैं जबकि सार्वभौम कवि की लोक–सापेक्षता को संसार युगों तक स्मरण करता रहता है जन–भाषा में प्रणीत तुलसी की कविता जन–जन की भारती बनकर गूँज उठी और राम की कृपा से काल की सीमाओं को लांघकर त्रिकाल तक तरंगित होने में समर्थ बन गई।

1. आज की सबसे बड़ी समस्या है विचारों की टकराहट देश को खंड–खंड रूप से देखना। भाषा, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि की टकराहट ने वैमनस्य की दीवार खड़ी कर एक इंसान से दूसरे इंसान के बीच दूरियाँ पैदा कर दी हैं। आज हमारे यहाँ स्कूल या कॉलेजों में धर्म–शिक्षा नहीं दी जाती। यहाँ धर्म का अर्थ उदार लेना चाहिए। धर्म अर्थात् आत्मबोध, आत्मज्ञान। जब आत्मा का ज्ञान हो जाता है तो किसी के साथ कोई वैर–विरोध नहीं रहता–निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहि सन करत विरोध की जब स्थिति आती है तो सारा जड़–चेतन जगत सीयाराममय दिखता है। तब व्यक्ति नानक की तरह सब में एक परामात्मा का ही नूर देखता है। उसे नाम रूप, भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय कहीं दिखाई नहीं देता। कबीर की तरह उसे सब घट मेरा साईया का एहसास होता है।

'सब एक हैं'– इसी दर्शन का विराट रूप है समन्वय– साधना। 21वीं सदी के भारत को इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। एक अखण्ड भारत की स्थापना के लिए तुलसीदास

का रामचरितमानस कल भी प्रासंगिक था आज भी प्रासंगिक है।

समाज, देश और विश्वशांति के लिए आवश्यक है एक दूसरे की विचारधारा के प्रति सम्मान की भावना एवं धर्म के प्रति सहिष्णुता का भाव। तुलसीदास ने अपने युग की विद्रूपताओं को देखते हुए एक दूसरे को जोड़ने के माध्यम के रूप में समन्वय को आधार बनाया है। मध्ययुग में शैव और वैष्णव मतों का संघर्ष जोरों पर था। तुलसीदास ने दोनों में संघर्ष की स्थिति को समाप्त कर सबको समन्वित किया। इस समन्वय-भाव को शिव को अपनी कृति का प्रेरक कहकर व्यावहारिक रूप में भी सिद्ध कर दिया-

संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी।
रामचरितमानस कवि तुलसी।।

रा.च.मा. 1/36/1

उन्होंने रामचरितमानस को अपनी नहीं शिव की रचना माना है-

रचि महेस निज मानस राखा।
पाइ सुसमय सिवा सन भाखा।।

रा.च.मा. 1/35/6

ऐसा कहकर गोस्वामी जी ने शिव और राम की भक्ति में अन्योन्याश्रय संबंध स्थापित कर दिया। इसी प्रकार अपने युग की प्रचलित दो प्रमुख धर्म-साधनाओं ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग में भी समन्वय स्थापित किया है-

भगतहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा,
उभय हरहिं भवसंभव खेदा।।

कहकर विषमताओं का अंत कर लोक को सुखी बनाया। तुलसीदास जानते थे कि लोक तभी सुखी हो सकता है जब लोकमानस में वैमनस्य-विरोध की भावना न हो। तुलसी का यह संदेश विश्व के सत्ताधरियों के लिए पथ-प्रदर्शक है। आज विश्व के स्तर पर धर्मिक एवं राजनीतिक विभिन्न विचारधराओं के कारण जो घुटन, अतृप्ति, अविश्वास, विघटनात्मकता और अराजकता का वातावरण बनता जा रहा है और जिसके परिणाम स्वरूप हिंसा का क्रूर तांडव दिखाई देता है, वह सर्वथा निंदनीय है। आज अपने ही देश में उत्तर और दक्षिण को लेकर कितने विवाद खड़े किए जाते हैं। तुलसी की शरण में चले जाने से वे सारे विवाद खत्म हो जाते हैं। तुलसी ने दिखाया उत्तर का गंगाजल जो रामेश्वर में चढ़ता है वह राममय हो जाता है। राम शिव भक्त हैं। राम दक्षिण में जाकर शिव को प्रसन्न करते हैं। राम का यह अभियान उत्तर-दक्षिण की एकता स्थापित करने का एक प्रयास था। राम के माध्यम से तुलसीदास यह बतलाना चाहते हैं कि कोई भी शत्रु के खेमे में पहुंचने के बाद भी सफलता को प्राप्त कर सकता है। दूसरा संदेश यह दिया है कि समग्र भारत एक है।

2. आज भाषा की लड़ाई देश में विकराल रूप लेती जा रही है। इस समय इस लड़ाई में महाराष्ट्र सबसे आगे है। मुंबई में मराठी भाषा-भाषियों की संकीर्णता और वहाँ से उत्तर भारतीयों को हटाने की जो जंग छिड़ी है, वह जग-जाहिर है। आज हिन्दी को अपने ही लोगों द्वारा अवहेलित और और अपमानित किया जा रहा है। कई राजनीतिक दल सत्ता पाने के लिए भाषा के नाम पर अलगाववाद का राग अलाप रहें हैं। महाराष्ट्र नव-निर्माण सेना के एक नेता ने जिस मराठावाद के नाम पर तोड़-फोड़, आगजनी और हिंसा का वातावरण बनाया वह निश्चय ही महाराष्ट्र की सत्ता पर कब्जा करने की एक योजना ही है।

तुलसीदास के युग में राजभाषा फारसी थी और विद्वतजनों में संस्कृत भाषा का वर्चस्व था। वह पंडितों की भाषा थी। काव्यरचना का माध्यम थी। तुलसीदास ने लोकभाषा में काव्य-प्रणयन करके ग्राम्य बोलियों का उद्धार किया। चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही विरोध सहना पड़ा। उन्होंने इसे भी अपनी समन्वयात्मक दृष्टि से समाप्त करने का प्रयास किया। जनभाषा अवधी में काव्य रचना की और राजभाषा फारसी और उर्दू के शब्दों का विशेष रूप से **'कवितावली'** में प्रयोग किया। संस्कृत भाषा को भी आदर सहित अपनाया। मानस के हर काण्ड के आरंभ में, विनयपत्रिका की स्तुतियों में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है- **''का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँच।''** कहकर भाषा के लिए लड़ने वालों को प्रेम का संदेश दिया है। प्रेम की भाषा सबको समझ आती है किन्तु आज भाषा को लेकर जो उत्पात दिखाई देता है, उसके कारण राजनीतिक हैं। जहाँ प्रेम है वहाँ भाषा गौण है। प्रेम हमारे मन तक पहुँचता है और हमारी आत्मा को आनंदित करता है। प्रेम में हर प्राणी को वश मे करने की ताकत है। किन्तु आज भाषा की लड़ाई में फंस कर मनुष्य परस्पर सौहार्द भूल कर अपना मनुष्यत्व ही खो बैठा है।

पूरे देश में आज हमारी जनभाषा अर्थात् संपर्क-भाषा हिन्दी है। क्या इससे इंकार किया जा सकता है? देश की अखण्डता के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है अपनी एक राष्ट्रभाषा का होना। अंग्रेजी का वर्चस्व इतना बढ़ता जा रहा है कि वह हिन्दी को कहीं अपने उदर में ही न लील ले – हमें सजग रहना है। आज हमारे अप्रवासी भारतीय इस ओर पूर्णतः सजग हैं और हम निष्क्रिय से खतरे की आहट को सुनकर भी अनसुना कर रहे हैं।

विडम्बना देखिए **''जब हम राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र नहीं थे तब तो हमारे पास स्वाधीन भाषा थी। अब हम स्वाधीन हो गए हैं, हमारी भाषाएँ पराधीन हो गई हैं।''** यह कथन है महाकवि एवं मनीषी सच्चिदानंद वात्सायायन अज्ञेय जी का।

तुलसीदास ने जनभाषा में रामचरितमानस लिख कर हमें भाषा की समस्या का निदान दिया है। यदि हम लोगों के दिलों तक पहुँचना चाहते हैं, अपनी बात एक-दूसरे तक पहुँचाना चाहते हैं, तो एक राष्ट्रभाषा के द्वारा ही हम उन तक पहुँच सकते हैं। भारत की स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी तथा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत अधिकांशतः हिन्दी भाषी थे। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, महर्षि दयानंद, डॉ. भीमराम अम्बेडकर, संत विनोबा भावे, काका कालेलकर आदि मनीषियों ने राष्ट्रीय एकता के रूप में 'हिन्दी' को ही मान्यता दी। यदि आज 'भाषा' को वोट की नीति बनाने वाले तथाकथित नेता इन राष्ट्रीय नेताओं से सबक लें तो भाषायी विवाद को सहज ही मिटाया जा सकता है।

काव्य–भाषा ही नहीं तुलसी के काव्य–सिद्धान्त भी किसी एक युग के नहीं अपितु सनातन हैं। उनमें हर युग के कवि एवं आचार्यों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ मानव–मूल्यों की स्थापना का उद्देश्य निहित है। तुलसी के काव्य का उद्देश्य लोकमंगल की साधना है–

कीरति भनति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कर हित होई।।

रा.च.मा. 1/14/5

उपर्युक्त विचारधारा की पोषक वाणी के कारण तुलसीदास एकदेशीय परिधि को पारकर सारी धरती के कवि बन गए लोक–कल्याण की पावन धरा को प्रवाहित करके वह अपने जीवन–काल में ही नहीं जिए वरन् सदा–सदा के लिए अपने को कालजयी एवं प्रासंगिक बना लिया।

3. आज के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद की है। भारत, रूस, चीन, अमरीका, ब्रिट्रेन आदि देश आतंकवाद की समस्या से जूझ रहें हैं। 11 सिंतम्बर को जब आतंकवादियों ने अमेरिका की सबसे ऊँची दो इमारतों को यात्री विमानों से गिराकर उनमें काम करने वाले हजारों अमेरिकियों सहित उड़ा दिया तो तब अमरीका ने आतंकवाद को एक विश्वव्यापी समस्या के रूप में स्वीकार किया और उसके विरुद्ध लड़ने एंव मुकाबला करने हेतु सारे विश्व से संगठित होने का आह्वान किया। आज आतंकवाद से पूरा देश त्रस्त है, दिल्ली–बेंगलूर जैसे महानगरों के बाद 26 नवम्बर 08 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमले ने पूरी मानवता को हिला कर रख दिया। 'रामचरितमानस' में राक्षस–वर्ग को ऐसे ही शक्तिशाली आततायियों के रूप में दिखाया गया है, जिसका शक्ति केन्द्र लंकापति रावण है। उस समय भी नारी–अपहरण की घटनाएँ घटित होती थीं। स्वयं लंकेश द्वारा जगत् जननी सीता का अपहरण समस्त नारी जाति का अपमान था। राजा के साथ उसके आततायी साथी विभिन्न रूप धरण कर अनेक उपायों से विधि और अनुशासन की धज्जियाँ उड़ाते थे–

''करहिं उपद्रव असुर निकाया।
नाना रूप धरहिं करि माया।।''

इन आतंकवादियों ने विभिन्न मायावी रूप धर कर नगर और ग्रामों में आग लगाई–

जेहि–जेहि देस धेनु द्विज पावहिं।
नगर पुर गांव आग लगावहिं।।

मुंबई में ताज और ऑबरॉय होटल में बम–विस्फोट और उससे लगी आग क्या उसी का प्रतिरूप नहीं है? त्रेता–युग के उस आतंकवाद के अड्डों को विश्वामित्र की दूरदृष्टि ने देखा और महान विचारक महर्षि अगस्त्य ने इस अभियान को चेतना दी। राम को दिव्य अस्त्र–शस्त्र दिए। इस आतंकवाद को नष्ट करने के लिए राम वनवासी बने। दण्डकारण्य में अपना ठिकाना बनाए आतंकवादी खरदूषण को उसके हजारों साथियों सहित राम ने मार गिराया। वाल्मीकि–रामायण हो या रामचरितमानस इसमें नारी–सम्मान उल्लेखनीय है। रावण द्वारा सीता के अपहरण के बाद उसका कुल सहित विनाश दिखाकर जनसमाज को सजग किया है। 'महाभारत' में व्यास जी ने दुर्योधन द्वारा द्रोपदी के अपमान का भीषण परिणाम दिखाया है। राम और लक्ष्मण इस राक्षसी संस्कृति के प्रतिनिधि ताड़का, शूर्पणखा एवं अनीतिपथ के राही बालि का वध करते हैं। सीता का हरण करने वाले रावण का, उसके पक्षधर मेघनाद तथा कुंभकर्ण का भी उनकी संपूर्ण राक्षसी–सेना सहित वध करते हैं। इस प्रकार विश्वशांति के सर्वाधिक बाधक तत्त्व आतंकवाद की समस्या का हल तुलसी दास ने दिया है–

''राजकरत बिनु काज ही, करहिं कुचालि समाज।
तुलसी ते दसकंध ज्यों, जरहैं सहित समाज।।''

किंतु आज राजनेता अपने निहित स्वार्थों के कारण देश की आंतरिक सुरक्षा को खोखला और समाज को कमज़ोर कर रहें हैं। उनके पास आतंकवाद से लड़ने के लिए किसी स्पष्ट नीति और नियत का नितांत अभाव है। आज जरूरत है, इस समस्या के खिलाफ एक निर्णायक युद्ध की। किंतु वोट के लालच में हम खुली कारवाई से बचते हैं। यहाँ तक कि कड़े शब्दों का प्रयोग करने में भी कतराते हैं। आखिर आतंकवाद का तमाशा कब तक चलेगा? राजा दशरथ के राज्य में तो राक्षसों ने वन में आतंक मचा रखा था किन्तु आज हर देशवासी चाहे वह कहीं का भी रहने वाला हो, अपने जीवन के प्रति असुरक्षा की भावना से भयभीत है। पूरे देश में 2004 से 2008 इन चार वर्षों के बीच ही आतंकवाद से जुड़ी कुल 24,967 घटनाएँ हुई हैं और हजारों लोग मारे जा चुके हैं। देश में आतंकवाद एक स्थाई समस्या बन गई है।

आज आवश्यकता है राम की रणनीति अपनाने की। जब राम विश्वामित्रा के साथ ऋषि–मुनियों की अस्थियों के ढेर देखते हैं तो द्रवित मात्रा ही नहीं होते बल्कि उन आततायियों को समूल नष्ट करने का दृढ़ संकल्प भी करते हैं। वे समर्थ वीर की भांति भुजा उठाकर प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं कि मैं ऐसे आतंकवादियों से पृथ्वी को पूर्णरूपेण मुक्ति दिलाऊँगा–

''निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाए पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह।।''

रा.च.मा. 3/9 दोहा

श्रीराम आतंकवाद की न कोई जाति मानते हैं न लिंग। आततायी, आततायी ही होता है, इसलिए राम ताड़का को मारने में देरी नहीं करते। एक ही बाण में उसे मार गिराते हैं– **''एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा।''**

इस समय पूरे विश्व में अनेक महिला आतंकवादी सक्रिय हैं। पूर्व प्रधनमंत्री श्री राजीव गांधी की पेरुम्बदूर के सभास्थल में हत्या आत्मघाती महिला द्वारा बम–विस्फोट से ही की गई। **'रामचरितमानस'** का यही संदेश है कि आक्रमणकारी को प्रताड़ित करना अथवा आतातयी का संहार करना अमानवीय नहीं कहा जा सकता है क्योंकि नीच व्यक्ति विनम्रता की भाषा नहीं समझता–

''काटेहिं पइ कदरी फरइ, कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डोटेहिं पइ नव नीच।।''

रा.च.मा. 5/58 दोहा

तुलसीदास ने राम के चरित के द्वारा जीवन–मूल्यों को प्रस्तुत

किया है। जीवन-संघर्ष में शौर्य के साथ धैर्य की भी आवश्यकता है। राम के पास प्रखर शौर्य के साथ असीम धैर्य है। उनका समस्त जीवन इसका साक्ष्य है–

''हिमगिरी कोटि अचल रघुवीरा।''

इस शौर्य के आधर सत्य एवं शील हैं। शील और सत्य के बिना शौर्य तो दस्यु का ध्वसंक रूप होगा। रावण शूरवीर है किंतु शील-विहीन। इसी कारण उसका शौर्य समष्टि के विनाश का निमित्त बना। रावण का कुल सहित विनाश हुआ। उच्चतर जीवन-मूल्यों के साथ जीना और युद्ध करना ही राम का रामत्व है। यदि आज हर सत्ताधरी राम के आदर्श को अपनाता है तो कौन शत्रु उसे जीत सकेगा? शत्रु को अपने दल-बल सहित पराजित होना पड़ेगा।

राम का चरित्र दम और परहित का है। तभी वे भरत के लिए राज्य छोड़कर वन चले गए। राम ने राजसत्ता के लिए रक्तपात के मानवी इतिहास को बदल डाला। वे तो 'बटाऊ की नाई' यानी पथिक के समान लोभ और मोह से सर्वथा मुक्त होकर वनवासी बन गए। भौतिकवादी शक्ति के साम्राज्यवादी युग में रामकथा का यह प्रसंग नितांत प्रासंगिक है। रामकथा के अतिरिक्त ऐसा विलक्षण त्याग अन्यत्रा दुर्लभ है जहाँ चौदह साल तक सिंहासन पर खड़ाऊँ का शासन रहा हो। यह विलक्षण त्याग एवं सौमनस्य राम-संस्कृति का विश्व को सनातन संदेश है।

राम के व्यक्तित्व में समष्टिगत समुत्कर्ष का अद्‌भुत समन्वय व्यावहारिक धरातल पर चरितार्थ हुआ है। अगर त्याग की भावना समाप्त हो जायेगी तो स्वार्थ बढ़ेगा। व्यक्ति को परिवार के लिए बलिदान, परिवार का समाज के लिए बलिदान समाज का राष्ट्र के लिए बलिदान – ये सभी मूल्य हम तुलसीदास से आदर्श के रूप में ले सकते हैं। उस समय राजतंत्र भी प्रजातंत्र था, जबकि आज प्रजातंत्र में राजतंत्र है। पहले राजा को ईश्वर का रूप माना जाता था। ईश्वर का प्रतिनिधि होते हुए भी वह जन-सेवक था। दशरथ ने मंत्रियों से सलाह ली– पंचों की जो सम्मति हो तो मैं राम को राज्य देना चाहता हूँ। बूढ़े नेता यदि आज दशरथ का आदर्श रख लें और कनपटी पर सफेद बाल नजर आने पर राज्य-भार से विमुक्त हो जाएँ तो निश्चय ही यह अनुकरणीय कदम होगा। शासक राज्य को धरोहर के रूप में लें और उसकी रक्षा करते हुए समय आने पर उसे अधिकारी पात्रा को दे दें – यही रामचरितमानस का संदेश है। हमें एकाधिकार को छोड़ना होगा। अपहरण चाहे सम्पत्ति का हो, चाहे दूसरे के राज्य की सीमाओं का अथवा स्त्री का हो उसके पीछे हमारी एकाधिकार की पैशाचिक मनोवृत्ति ही काम करती है। रामचरितमानस हमें इस मनोवृत्ति को छोड़कर **'सर्वे भवन्तु: सुखिन:'** का संदेश देता है।

4. आज अतिशय भोगप्रियता और विषय – सुखों की लालसा मनुष्य के पतन का मूल कारण है। विषयी व्यक्ति किसी भी सीमा तक गिर सकता है। भौतिक सुख-सुविधओं का दास बना मानव आत्मकेन्द्रित बनता जा रहा है। उसे केवल अपनी सुख-सुविधा का ही ख्याल रहता है। छीना-झपटी, संग्रह की प्रवृत्ति इसी का दुष्परिणाम है। यहाँ तक कि घातक अस्त्रा-शस्त्रा का संग्रह भी वह इसीलिए करते हैं कि विषय-सुख में बाधक तत्त्वों को वह भयभीत कर सके और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें मिटा सके। ऐसे व्यक्ति के कोई सिद्धान्त नहीं होते।

युद्ध न करने के सारे समझौते, शिखरवार्त्ताएँ या संधियाँ उनके लिए कोई मायना नहीं रखतीं। नैतिकता का उल्लंघन करने वाले ऐसे देश अपार सम्पत्ति को अपने हाथों में केन्द्रित करने के लिए तबाही की किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। तुलसीदास ने इसका समाधान दिया है मनुष्य में आध्यात्मिक चेतना के विकास के रूप में। जीव जब **'निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहिं सन करहिं विरोध'** का भाव रखता है तो उसे सारी सृष्टि में अपने इष्ट के दर्शन होते हैं। सीयाराममय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी। कबीर की **'सब-घट मेरा सांइया'** की भी यही दृष्टि है। यह दृष्टि व्यक्ति को स्वार्थी से परमार्थी बना देती है और उसकी आवश्यकताओं को रोटी, कपड़े, और मकान तक सीमित कर देती है। हमारी संस्कृति कबीरा इतना दीजिये जामे कुटुंब समाय की है। अनंत इच्छाओं का विस्तार अथवा संग्रह स्वत: समाप्त हो जाता है। रामचरितमानस में ऐसी राममय दृष्टि रखने वाला भक्त स्वसुख की संकीर्ण वृत्ति से ऊपर उठ जाता है–

'राम भगत परहित निरत पर दुखी दयाल'।

सोने की लंका और उसका ऐश्वर्य राम को आकृष्ट नहीं करता। उसे जीतकर वह विभीषण का राजतिलक करते हैं। यदि राम के माध्यम से प्रतिपादित तुलसी की परमार्थवादी दृष्टि लेकर हर देश चले तो युद्ध की कोई संभावना ही न रहे। दूसरे की समीओं में प्रवेश कर उसे हथियाना अनैतिकता की श्रेणी में आता है। यह मानवता का मानवता पर हमला है। मानस का दर्शन सह-अस्तित्व का पोषक है क्योंकि व्यक्ति एक समाज या राष्ट्र से पहले मानव समाज का सदस्य है। 21 वीं सदी का मनुष्य संसार के सुखों को वरेण्य मानता है उसमें भी सत्ता की प्राप्ति को सबसे बड़ी उपलब्धि। भरत का भातृ-प्रेम सत्ता से कहीं ऊपर है। भरत को राम की पादुका प्रिय है, पद नहीं। वह राम की पादुका को 'रा' और 'म' के प्रतीक रूप में ग्रहण कर राजसी सुख एवं भूषण-वसन तृणवत् त्याग कर नंदीग्राम की पर्णकुटी में समाधिस्थ हो जाते हैं। वह 'न्यासी' के रूप में राज्य चलाते हैं। किन्तु आज भौतिकवादी एवं सत्ता-लोलुप व्यक्ति प्रभुत्व की चाह में अपने को मालिक समझ लेता है। पद-प्रतिष्ठा की महत्त्वाकांक्षा से दूर त्यागपूर्वक राज्य-संचालन कर धर्म की जो ज्योति तुलसीदास ने भरत के चरित्रा द्वारा जलाई, वह आज भी मानव का सही पथ-प्रदर्शन कर रही है। यदि हम राम और भरत के इस भातृ-आदर्श को ग्रहण करते हैं तो कभी भी भाई-भाई के बीच द्वन्द्वात्मक रवैया नहीं उपजेगा।

रिश्तों में शील और मर्यादा का निर्वाह ही 'रामचरितमानस' की गरिमा का गूढ़ रहस्य है। किन्तु आज समर्पण और प्रेम जैसे शब्द अपना मूल्य खोते जा रहे हैं। आत्मकेन्द्रित और स्वार्थमयी प्रवृत्ति के कारण परिवार टूट रहे हैं अथवा कलह और टकराव में साँस ले रहे हैं। ये हमारे भारतीय मूल्य नहीं थे। परिवार में सह-संबंध और सह-अस्तित्व था। परिवार के हर सदस्य में अधिकार की

अपेक्षा उत्तरदायित्व की भावना थी। राम के लिए परिवार का हित ही सर्वोपरि था। पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करना, माता की इच्छा को सम्मान देते हुए सहर्ष बनवास के लिए प्रस्थान के पीछे व्यक्तिगत सुख कहीं नहीं है। यदि आज का युवा वर्ग 'मानस' में निरुपित राम के इस आदर्श को ग्रहण करता है तो भाई–भाई के बीच प्रतिस्पर्धा का भाव कभी रिश्तों को मैला नहीं करेगा।

5. तुलसीदास के समय में भारतीय समाज और उसका अभिन्न अंग परिवार विकारग्रस्त और विघटित हो गया था। पारिवारिक मर्यादाएँ उखड़ने लगीं थीं। मूल्यों की उपादेयता हाशिए पर आ गई थी। कौटुम्बिक जीवन में विलास और क्रीड़ा कलह और फूट स्वार्थ और हिंसा जैसे दुर्गुण आने लगे थे। पारस्परिक संबंध चरमरा कर टूटने लगे थे। ऐसी विषम परिस्थिति में तुलसीदास ने मर्यादा की व्यवस्था को अपनाने का सूत्र बताया। यह मर्यादा आती है एक परिवार के रूप में। अनुशासन की भूमि पर टिका परिवार ही समाज को दिशा दे सकता है। 'मानस' ने रामकथा के माध्यम से न केवल परिवार–संगठन का सैद्धान्तिक पक्ष रखा वरन् उसका व्यावहारिक पक्ष भी दिया। 'मानस' का परिवार आदर्श जीवन–मूल्यों एवं प्रेरणाओं का महापुँज है। वह सत्ता नहीं सेवा, प्रपंच नहीं प्रेम, स्वार्थ नहीं परमार्थ, नाम नहीं काम, भेदभाव नहीं समानता, संकीर्णता नहीं उदारता, लोभ नहीं निःस्पृहता आदि उत्तम संस्कारों का अक्षयकोश है।

परिवार यानी गृहस्थाश्रम सम्पूर्ण समाजिक– व्यवस्था का आधर है। नारी द्वारा एक पतिव्रत धर्म के साथ–साथ तुलसीदास ने हिन्दू–समाज के समक्ष पुरुष द्वारा एक पत्नीव्रत की धर्म–संहिता भी प्रस्तुत की है–

सो परनारि लिलार गोसाई।
तजउ चउथि के चंद कि नाई।

रा.च.मा. 5/38/3

परनारी–विषयक प्रवृत्ति की 'मानस' में खुलकर निंदा की गई है। बहुपत्नीत्व समाज के लिए अभिशाप है। राजा दशरथ की दुर्गति और लाचारी दिखा कर तुलसीदास ने इस प्रथा के दुष्परिणामों की ओर पुरुष–वर्ग को सजग किया है।

आज भरतीय जीवन–मूल्य पाश्चात्य रंग में रंगते जा रहे हैं। आदर्शों, सिद्धान्तों और परंपराओं की पकड़ छूटती जा रही है। सभ्यता के नाम पर हम मर्यादा छोड़ते जा रहे हैं। कोई भी युग हो एक पत्नी–प्रथा से यदि खिसेगा तो कुंठाए होंगी। उसका विनाश होगा। तुलसीदास ने दशरथ के माध्यम से बहुपत्नीत्व की वेदना ही नहीं बताई राम के माध्यम से एक पत्नीत्व का समर्थन भी किया है। पश्चिमी सभ्यता का राग अलापने वाली पीढ़ी को मानस के माध्यम से दिया संदेश आज अत्यंत प्रासंगिक है।

6. पर्यावरण–प्रदूषण भी वैश्विक समस्या है आज मनुष्य शहरीकरण और आधुनिकता के मोह में इतना फँसा है कि वह जीवनदायिनी प्रकृति का आवश्यकता से अधिक दोहन करता हुआ स्वयं से उसे दूर करता जा रहा है। विकसित देशों में यह समस्या और भी भयावह है। ओजोन–पर्त में छेद होने के लिए मुख्यतया वह उत्तरदायी है। पर्यावरण के प्रदूषण ने संसार के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। मनुष्य की आर्थिक लिप्सा ने प्रकृति का इस तरह से विध्वंस करना शुरु किया कि आज जो विभीषिका सामने आई है, जो त्रासदी दिखाई देने लगी है, उसके निवारण के लिए सारा संसार चिंतित हो उठा है। आज जंगल साफ होते जा रहे हैं वृक्ष बिलखने लगे हैं, पशु–पक्षी और वन्य जीवों की प्रजातियाँ समाप्त होने लगी हैं, वातावरण धुएँ से भर गया है, फेफड़े शुद्ध वायु को तरस गए हैं, साँस की नलियाँ सिकुड़ गई हैं, कार्बन–डाइ–ऑक्साइड बढ़ने लगी। ग्रीन हाऊस गैसें अपनी पूरी तीव्रता के साथ धरती को तपाने लगीं, तापमान बढ़ता चला गया। मिट्टी रसायन पी–पीकर उर्वरा शक्ति से हाथ धो बैठी। पानी में कचरा, मल और दूषित पदार्थ मिलते गए विकास के नाम पर किए गए, प्रयोग कभी हमें भोपाल–त्रासदी की ओर ले जाते हैं, कहीं धरती खिसकती है, तो कहीं भूकंप आते हैं। कहीं सुनामी की लहरें लील जाती हैं। भारत के संत–मनीषियों ने इस विभिषिका को पहले ही पहचान लिया था। जिस पर्यावरण–चेतना की बात विकसित देश अब कर रहें हैं, वह तो आदिकाल से भारतीय मनीषा का मूल आधार रहीं है। वेद–पुराण उपनिषद्, संस्कृत और सूफी–साहित्य, पंचतन्त्र, जातक–कथाएं सभी में प्रकृति के लोकमंगलकारी स्वरूप का वर्णन है। पर्यावरण की रक्षा और संर्वद्धन, उसका पोषण और पुष्टि, उसकी शुद्धि और पवित्रता हमारे लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी हमारे जीवन की ललक। हमारे ऋषियों–मुनियों और चिंतकों ने लोगों को जो दृष्टि दी उसमें प्रकृति के साथ संगति रखने का भाव प्रबल था। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः' या 'सीयराममय सब जग'** में जिस समष्टि की बात की गई है उसमें जड़–चेतन सब समाहित हैं। वनस्पति–जगत से लेकर संपूर्ण जीव–जगत् सम्मिलित है। तुलसीदास ने पर्यावरण–संरक्षण का सूत्र देते हुए कहा है–फल तोड़कर खाना अच्छा है लेकिन पेड़ काटना अपराध है–

''रीझि रीझि गुरुदेव सिख, सखा सुसाहित साधु।
तोरि खाहु पफल होई भल, तरु काटे अपराधु।।''

समाहार रूप में कहें तो 'रामचरितमानस' के अनुसार व्यक्ति, परिवार या समाज वही सुन्दर और स्वस्थ हो सकता है, जो विवेक द्वारा परिचालित हो। सुमति जिसका मार्गदर्शक हो और आत्मानुशासन जिसका संचालक हो। 'रामचरितमानस' के समान सम्मति–प्रदायक और कोई ग्रंथ विश्व में नहीं। मानस के रूप में तुलसीदास की दिव्यवाणी उनका पवित्र लोकविधेयक संदेश भावी पीढ़ियों के लिए जीवन का विराट संदेश है।

मानव जीवनशैली की गतिशीलता का रहस्य

तथा गुणात्मक परिवर्त्तन हेतु राजयोग की उपयोगिता

डॉ. बी. के. मेधावी शुक्ला
(पूर्व अनुसंधान अध्येता)
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

" मानव जीवन – शैली में पारलौकिक भासना की दिव्यता से आत्म जगत का गुण एवं शक्ति संपन्न बन जाना सुनिश्चित हो जाता है जो आत्मा के लिए गुणात्मक परिवर्तन का आधार स्तम्भ होता है जिससे पवित्र भाव का अभिव्यक्त स्वरुप राजयोग की उपयोगिता को सिद्ध कर देता है। व्यक्तिगत ' जीवन – दर्शन ' में विचार पक्ष का बलशाली होना स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन 'आत्म – दर्शन ' की स्थित्ति में आत्म – अध्ययन से सम्बंधित चिंतन पक्ष चेतना की उत्कृष्टता के लिए निरंतर कार्य करते हैं। श्रेष्ठ जीवन – शैली की व्यापकता चेतना के सम्पूर्ण स्वरुप के परिष्कार को जन्म देने में सिद्धहस्त होती है यह जीवन का व्यवहार पक्ष अव्यक्त स्वरुप से ' परमात्म दर्शन ' के माध्यम से प्रकट होता है जिसे सूक्ष्म भासना से अनुभव किया जाना सहज होता है। चेतना की उत्कृष्टता के द्वारा मानव धर्म के प्रति स्वयं के कर्मगत स्वरुप को सुसंस्कृत करते हुए मानवता की रक्षा का कार्य पूर्ण किया जा सकता है । "

मानवीय संवेदना का व्यापक परिवेश : प्रस्तुत्त आलेख में मानव जीवन शैली के उन अति सूक्ष्म पक्षों की विवेचना की गयी है जो नित – नूतन परिवेश में व्यावहारिकता की कसौटी पर पूर्णतया खरी उतरती हैं। स्वयं की गतिशीलता के मध्य जीवन की समालोचनात्मक व्याख्या करने का नैतिक साहस आखिर कैसे जुटाया जाए और गुणात्मक परिवर्त्तन के उपाय को विचार एवं भाव के स्तर पर निजता के लिए नियम – संयम के रूप में किस प्रकार लाया जाए ? इस व्यवहार को आत्म – सात कर लेने की सहज विधि को विस्तार से व्यक्त किया गया है । एक संवेदनशील मनुष्य का जीवन हम व्यतीत कर सकें, इस श्रेष्ठ मनोभाव की प्राप्ति हो जाए और गर्व से कह सकें कि " बड़े भाग्य मानुष तन पावा ...." यह शुभ भाव स्वयं के जीवन में स्थापित करने के लिए बुद्धि एवं हृदय से अनेकानेक प्रयास करने के पश्चात् भी उस ऊँचाई तक नहीं पहुँचने का पश्चाताप और इस कटु सत्य से उबरने तथा परिवर्तन करने के उपायों पर भी इस आलेख में चर्चा की गयी है जिससे व्यक्ति जीवन की व्यथा एवं गहरे संताप से मुक्त हो सके। जीवन के उजले स्वरुप की प्राप्ति हेतु सामान्यतरू सभी व्यक्ति स्थूलता एवं सूक्ष्मता से विभिन्न स्थितियों को ठीक करने का प्रयत्न करते हैं लेकिन मानव जीवन शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के स्थायित्व को ग्रहण नहीं कर पाते हैं। इन विरोधाभासी स्थितियों से बाहर निकलकर चेतना की उत्कृष्टता के संदर्भ में व्यावहारिक विश्लेषण इस आलेख में किया गया है जिससे मानव को श्रेष्ठ जीवन – शैली के प्रति नैसर्गिक श्रद्धा उत्पन्न हो सके। स्वयं को उच्चता के ' भाव जगत ' में बनाये रखने हेतु राजयोग की उपयोगिता को इस प्रकार से स्पष्ट किया गया है कि व्यक्तिगत जीवन – बंधन एवं संबंध की वास्तविकता को लौकिक और अलोकिक स्वरुप से समझते हुए व्यवहार निभाया जा सके तथा कर्म – बंधन एवं संबंध से जुड़े हिसाब – किताब के मानसिक दबाव से मुक्ति की व्यावहारिक स्थित्ति निर्मित्त हो जाए ।

अतः आत्मिक परिवेश में चेतना की उत्कृष्टता की व्यावहारिकता उस समय उपयोगी बन जाती है जब चेतना एवं चिंतन का परिष्कृत रूप ' अनहद – नाद की निरंतरता ' को प्राप्त कर अहिंसक जीवन – शैली को गौरवान्वित कर देता है जो इस लोक में श्रेष्ठ मानव जीवन के रूप में सदा के लिए पूजनीय बन, समाज के लिए अनुकरणीय हो जाता है ।

मानव धर्म के प्रति चेतना की उत्कृष्टता : जीव जगत के मध्य मानवता का बोध होना और स्वयं को मानव धर्म के प्रति निष्ठावान बनाना चेतना की उच्चता का प्रमाण होता है। मनुष्य की उत्पत्ति से जुड़े पक्ष स्वयं को भाग्यशाली स्वरुप में स्वीकार करते हैं तथा मनुष्यता को बनाये रखने की स्थिति में सफलता प्राप्त कर लेने पर सौभाग्यशाली होने का गौरव महसूस करना ' मानव धर्म ' का विशिष्ट लक्षण होता है। जीवन की विविधता में ' मानव धर्म का निर्वहन ' गुणात्मकता के साथ संपन्न कर लेना ' चेतना की चेतनता ' का सम्मान है जो राजयोग की उपयोगिता को स्वीकार करके आत्मा को गुण एवं शक्ति संपन्न बनाने के प्रति निरंतर आस्थावान रहती है। यदि मानव का सृष्टि पर आगमन हुआ है तो केवल वह स्थूलता के संपर्क, संसर्ग एवं संबंध तक सीमित रह जाए यह स्थि. त्ति मानवीय गरिमा के अनुकूल नहीं है बल्कि चेतना द्वारा सूक्ष्मता का परिदृश्य मुखर होना आवश्यक होता है जिसमें मन, बुद्धि एवं संस्कार का सकारात्मक परिवर्तन महत्वपूर्ण स्थित्ति होती है ।

स्वधर्म की पक्षधरता मानव की रक्षा हेतु मानवता के कर्त्तव्य को सिद्धांत एवं व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरने के लिए बल प्रदान करती है जिससे मानव धर्म के प्रति चेतना की उत्कृष्टता बनी रहे । मानव जीवन – शैली की गतिशीलता में कहाँ और किस प्रकार की स्थिति मनुष्य जीवन के भीतर मानसिक पीड़ा को जन्म दे देती है तथा व्यक्तिगत जीवन दुःखदायी बन जाता है जो सामाजिक स्तर पर भी अन्तर्द्वन्द ही प्रकट करता है। गुणात्मक जीवन – शैली के वास्तविक पर्याय समाधान की प्रवृत्ति की ओर अभिमुखित करते हुए मानव को प्रायः आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता के रहस्य का मानव धर्म के संबंध में स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं । जीवात्मा के द्वारा पूर्णरूपेण राजयोग से सहसंबंध स्थापित कर लेना चेतना की उत्कृष्टता का परिणाम है जो मानव धर्म के प्रति आस्था से जिम्मेदा. री का निर्वहन करने में निपुण होता है और अन्ततः मानव जीवन – शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के बीज को राजयोग के माध्यम से रोपित करने में वृहद उपलब्धि का भागीदार बन जाता है ।

मानव की रक्षा हेतु मानवता का धर्म : सम्पूर्ण जीवन काल में मानवता का पाठ पढ़ने और एक दूसरे मनुष्य के साथ उदारता एवं सम्मान का व्यवहार करने के अनेकानेक उदाहरण से अवगत होने के पश्चात् भी शारीरिक तथा मानसिक स्तर पर सदा व्यवहारगत स्वरुप की ऊँचाई के साथ ' मानव की रक्षा का कर्तव्य ' एक यक्ष प्रश्न की भांति व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्थितियों के लिए अनस. ुलझी पहेली ही क्यों बना हुआ है ? जब एक व्यक्ति आपसी व्यवहार में दूसरे व्यक्ति की अपेक्षाओं पर निरंतर कुठाराघात ही करता रहेगा और अपने लिए सुखद परिणाम की बाट जोहने में जुटा रहेगा तो कैसे और कब वह व्यक्तिगत सुख देने की स्थिति में स्वयं को सक्षम बना सकेगा ? यह विचारणीय पक्ष व्यक्ति की दयनीयता का घोतक है जो उसे बार – बार इस बात के लिए बाध्य करता है कि पहले दूसरा व्यक्ति अच्छा व्यवहार करे तब मैं अपनी निजता की पूंजी से अच्छाई एवं सच्चाई से युक्त व्यवहार प्रस्तुत कर सकूँगा इस मानसिकता की बीमारी से ग्रस्त मानव के लिए कौन मनुष्य जिम्मेदार है और कौन कर्त्तव्य हेतु उत्तरदायी है ?

जीवन के स्वधर्म से उत्पन्न स्थित्ति का मूल्यांकन संतुष्टि पूर्ण तरीके से करने पर पता चलता है कि व्यक्ति ' मानव धर्म ' की ओर किस स्तर पर प्रवृत्त हो सका है तथा इस भाव एवं व्यवहार जगत में गतिशील रहते हुए ' राष्ट्र धर्म ' निभाने की चेष्टाएं क्या मौलिक अधिकार और कर्तव्य के मध्य एक संतुलन स्थापित कर सकेंगी ? मानव की रक्षा हेतु मानवता से युक्त व्यवहार ही भेद दृष्टि से मुक्ति प्रदान कर व्यक्ति की मदद करने में उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं । सामान्य जीवन के अंतर्गत समदृष्टि का विकसित हो जाना मानव जीवन – शैली में गुणात्मक परिवर्तन का आधार होता है जो मानवता के कर्तव्य बोध को व्यवहार में परिवर्तित कर देता है। ज्ञान के व्यापक परिप्रेक्ष्य की जीवन्तता को शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता वर्तमान सन्दर्भ में ' राजयोग को प्रासंगिक ' बनाती है जिसके माध्यम से ज्ञान, गुण एवं शक्ति की सम्पन्नता को ' मानवता' की व्यापकता से सम्बद्ध करके मानव समाज की रक्षा के दायित्व को पूर्ण किया जा सकता है ।

गुणात्मक जीवन – शैली के वास्तविक पर्याय : स्वयं के विकास अनुक्रम में जीवन के विविध पक्षों पर कार्य करना और इस सत्य का परीक्षण करने के लिए सदैव तत्पर रहना कि आखिर मानव की गतिशीलता में गुणात्मकता की स्थिति को कैसे स्वीकार किया जा सकता है ? परिवर्तन की प्रकृति को निजता के विरोध ाभास स्वरुप में मानकर अस्वीकार के देने की प्रवृत्ति को बदलना आवश्यक है तभी गुणात्मक जीवन के प्रति मनःस्थिति में श्रद्धा का विकास सुनिश्चित हो सकता है। मानव जीवन शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन के विभिन्न आयाम यह बतातें हैं कि एक श्रेष्ठ विचार को अपनाने के पश्चात् हमारे मस्तिष्क में कई महत्वपूर्ण विचार होते हैं जिन्हें पुनरू स्मृति पटल पर अंकित करने की कोशिश एक नवीन विचार के प्रति ' विशिष्ट अनुग्रह ' उत्पन्न कर देती है जो गुणात्मक जीवन शैली के वास्तविक पर्याय का व्यावहारिक उदाहरण होता है ।

सामाजिक परिवेश में मानवीय शक्तियों की वृहद् उपयोगिता के विभिन्न परिदृश्य गुणात्मक जीवन : शैली के लिए कार्यरत भी रहते हैं तथा एक उच्च कोटि के विकल्प स्वरुप भावनात्मक एवं विचारगत स्थिति और अवस्था हेतु उनकी तत्परता भी बनी रहती है । जीवन में गुणात्मक परिवर्तन के लिए राजयोग की उपयोगिता चेतना की उत्कृष्टता को जन्म देती है जो मानवीय चिंतन को जीवन जीने की लालसा तक सीमित नहीं रखती बल्कि सम्पूर्णता के अनेकानेक आयाम से जोड़ने का कार्य भी करती है । मानव का आतंरिक विकास सदा गतिशीलता की स्थिति में कार्यरत रहता है जिसमें व्यावहारिकता की कसौटी पर ' पश्चाताप और परिवर्तन ' की स्थितियां कार्य करती हैं जो मानवीय स्वभाव का अभिन्न अंग होती हैं । जीवन में सभी कुछ अच्छा और बहुत अच्छा हो जाए इस

तथ्य के गुणात्मक पक्ष ही अहिंसक जीवन – शैली निर्मित करने के प्रमुख कारक बनकर व्यक्तिगत स्तर एवं व्यक्तित्व गठन की प्रक्रिया को तय करते हैं । किसी भी देश काल एवं परिस्थिति के भीतर मानव की ' प्रवृत्तिगत गुणात्मक जीवन – शैली स्वयं को विकसित करने के संदर्भ में कार्यरत रहती है जिसे वह आत्म – निष्ठा के प्रसंग में स्वयं को संतुष्ट करने हेतु अपने इर्द–गिर्द की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के मध्य ' दैहिक, दैविक एवं भौतिक तपिश ' में से उबरने का प्रयास करता रहता है ।

आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता : मानव जीवन – शैली में गुणात्मक परिवर्तन को स्थापित करने के लिए राजयोग की उपयोगिता पर विचार – विमर्श करते हुए चेतना की उत्कृष्टता का संज्ञान प्राप्त कर आत्मिक स्वरुप को व्यावहारिक रूप में अप. नाना स्वयं की गुणवत्ता का सुखद परिणाम है। एक जीवात्मा होने के नाते धर्म – कर्म के सिद्धांत से जुड़कर उसके प्रति अनुराग से ओत – प्रोत होकर जीवन पद्धतियों में परिवर्तन करने की इच्छा शक्ति आत्मिक उत्थान का महत्वपूर्ण कारक है। सामान्य दृष्टिकोण का विशिष्ट दृष्टिकोण में बदलाव मनुष्य के लिए आत्मिक गौरव की सुखद परिणिति होती है जो व्यक्ति को ' अध्यात्म – पुरुषार्थ ' की ओर गतिशील हो जाने के लिए प्रेरित करती है और स्वयं को उन्नति के शिखर पर स्थापित करना बुद्धिमत्ता के स्तर पर सुनिश्चित हो जाता है । यदि आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता को आत्मसात करने का भाव – जगत अपनी विराटता के स्वरुप को अभिव्यक्त करता है तो संवेदनशील मानव के समीप ' राजयोग – मौन ' के अतिरिक्त शेष कोई विकल्प नहीं बचता है क्योंकि यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आत्मा अपने वास्तविक स्वरुप में स्थित होकर ईश्वरीय सत्ता से संबंध स्थापित करती है। आत्मिक अनुभूतियां और राजयोग की व्यावहारिकता ने सामाजिक स्थित्ति के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन के दार्शनिक बोध के स्वरुप में ढल जाने से व्यक्तिगत स्तर पर होने वाले रोग एवं शोक का मानसिक दबाव लगभग समाप्त हो जाता है ।

स्वयं के जीवन का निमित्त भाव निजता के सन्दर्भ एवं प्रसंग की व्याख्या इस तरह से परिवर्तित कर देता है कि व्यक्तित्व में निर्मलता का भाव पक्ष सहजता से निर्माण चित्त की उच्च स्थिति को हृदयंगम करके आनंद की विशालता में स्थानांतरित हो जाता है । आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता का प्रतिपादन उस अवस्था में उपयोगी बन जाता है जब व्यक्ति के जीवन बंधन से जुड़े – लाभ – हानि, जीवन – मरण, यश – अपयश , के उच्चावचन में भी आत्मा की स्थित्ति ' एक – रस ' अर्थात् ' सम – भाव ' से युक्त रहती है जो मानव जीवन – शैली की गुणात्मकता का जीवंत उदाहरण है ।

जीवात्मा का राजयोग से संबंध : जीवन के वास्तविक अर्थ एवं मान्य अनर्थ के मध्य का झंझावात व्यक्ति को टूटने तथा विवशता पूर्ण स्थितियों के लिए बाध्य करता है जबकि एक आत्मा का राजयोग से संबंध स्वयं को समर्थवान के रूप में गढ़ देता है। सम्पूर्ण अहिंसक जीवन की कल्पना का साकार एवं अव्यक्त स्वरुप इतना उच्च होता है कि जीवात्मा पूर्णतया ' मन – वचन – कर्म ' की पवित्रता के साथ , ' समय – संकल्प – संबंध एवं स्वप्न ' के पवित्रतम भाव को आत्मसात कर लेती है । यदि मानव धर्म के प्रति नैसर्गिक स्वभाव की निष्ठा का पक्ष जुड़ जाए तो चेतना की उत्कृष्टता को मानव की रक्षा का पाठ और मानवता के कर्तव्यबोध से सम्बद्ध जिम्मेदारियां स्वमेव ही पूर्ण हो जाएँगी ।

गुणात्मक जीवन : शैली के मूलभूत पर्याय की खोज करने पर पता चलता है कि व्यक्ति के पास राजयोग के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है क्योंकि मानव अपने जीवन काल में स्थूलता की उत्पत्ति में हर्ष एवं इस भौतिकता की समाप्ति में विषाद को प्रकट करके स्वयं के होने अथवा नहीं होने के गौरव एवं अस्तित्व की उपस्थिति को जाने या अनजाने भाव से प्रकट करता है। स्वयं के जीवन काल में आत्मिक स्वरुप के अंतर्गत स्थित्त होकर राजयोग का व्यावहारिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि निराकारी अवस्था के निर्मित्त हो जाने से जीवन की बोझिलता से मुक्त होकर आत्मा को शक्तिशाली बनाना सहज हो जाता है। मानव जीवन – शैली की उपादेयता एक वृहद दृष्टिकोण को विकसित करने में मददगार होती है लेकिन व्यक्ति एवं वस्तुवाद का दबाव मनुष्य की सुख शांति को छिन्न–भिन्न कर देता है। व्यवहार के स्तर पर अहिंसक जीवन – शैली को अपनाते हुए गुणात्मक परिवर्तन की आवश्यकता के लिए बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रयास किया जाना मानव की स्वभावगत विशेषता होती है । मानव जीवन – शैली को अत्यधिक कुशलता के साथ अपनाते हुए गुण मूलक प्रवृतियों की सहज गतिशीलता का सूक्ष्म परिवेश प्राप्त हो जाना ' जीवात्मा द्वारा राजयोग से संबंध ' स्थापित करने से सुनिश्चित हो जाता है। अतः जीवन में कर्म – बंधन एवं संबंध का लौकिक और अलौकिक स्वरुप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं करता बल्कि पारलौकिक शक्ति का सानिध्य गुण संपन्न रूप से मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ जीवन – शैली के लिए शक्तिशाली बना देता है ।

चेतना के सम्पूर्ण स्वरुप का परिष्कार : इस प्रकार चेतना की उत्कृष्टता से जुड़े संदर्भित पक्ष की विराटता उनके व्यावहारिक स्वरुप के विश्लेषण को मानव जीवन – शैली में गुणात्मक परिवर्त्तन की प्रासंगिक पृष्ठभूमि से रेखांकित करती है जिसमें राजयोग की उपयोगिता समाहित रहती है। आत्मिक परिदृश्य में राजयोग की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए सिद्धांत की पुष्टि को सुनिश्चित किया गया है जिसमें जीवन की भौतिकता के बंधन से व्यक्ति मुक्त हो जाता है तथा धीरे–धीरे जीवन के अभौतिक संबंध से उपराम होकर अत्यधिक सहजता से पराभौतिक भासना की पवित्र अनुभूतियों के आभामंडल को जीवात्मा द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है । मानव जीवन – शैली में पारलौकिक भासना की दिव्यता से आत्म जगत का गुण एवं शक्ति संपन्न बन जाना सुनिश्चित हो जाता है जो आत्मा के लिए गुणात्मक परिवर्तन का आधार स्तम्भ होता है जिससे पवित्र भाव का अभिव्यक्त स्वरुप राजयोग की उपयोगिता को सिद्ध कर देता है ।

श्रीरामकथा के अल्पज्ञात दुर्लभ प्रसंग

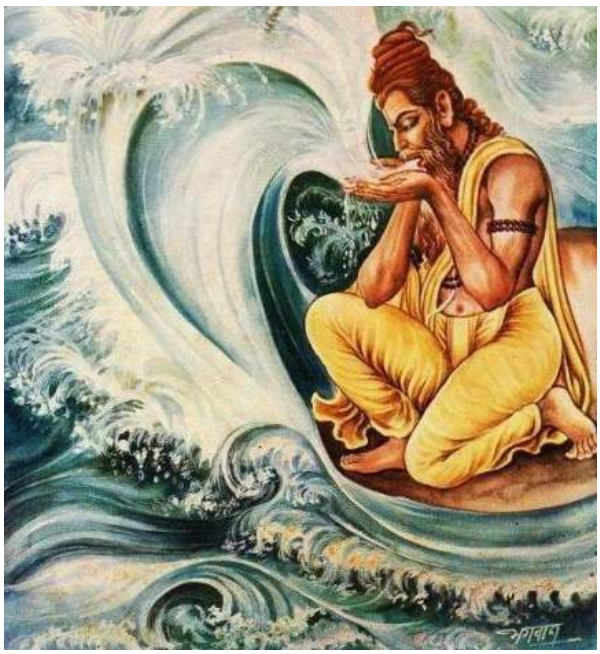

डॉ. नरेन्द्रमेहता
स्वतंत्र लेखन
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

गुजराती गिरधर रामायण में महर्षि अगस्त्य ने समुद्रपान क्यों किया?

जब श्रीराम सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम में गए तब सुतीक्ष्ण ऋषि ने महर्षि अगस्त्य के चरित्र का गुणगान किया। सुतीक्ष्ण ऋषि ने श्रीराम से कहा तीन अत्यन्त ही कपटी असुर भाई थे जो कि इस वन में रहते थे। जिन्होंने कपट करके अनेक मुनिवरों को मार डाला।

आतापी थाय फलरूपे, वातापी थाय दातार,

इल्वन आश्रम कपटी कारमो, रहे तो वनमोझार।

गुजराती गिरधर रामायण अरण्यकाण्ड, अध्याय ६–३

उन तीन राक्षसों में से एक आतापि फल बन जाता था तो दूसरा वातापि दाता (देने वाला) हो जाता था, तो तीसरा राक्षस इल्वल अद्‌भुत सुन्दर आश्रम बनाकर वन में रहता था।

इल्वल आदरपूर्वक मुनियों को बुलाकर अपने आश्रम ले आया करता था। उन्हें वह सुन्दर–मधुर फल खिलाया करता और बड़े ही सुन्दर ढंग से पानी पिलाया करता। तब पेट फाड़कर वह जो कि फल के रूप में रहता था आतापि नामक राक्षस बाहर निकल आता और वे ब्राह्मण (मुनि–ऋषि) मृत्यु को प्राप्त हो जाते।

इस तरह उन्होंने मिलकर बहुत से मुनिवरों को मार डाला था। वे सदा ऐसा आचरण करते रहते थे। तदनन्तर सब मुनिगण इकट्ठे होकर महर्षि अगस्त्य के पास गए और कहा– हे स्वामी! सबकी मौत आई है अब हम कैसे जीवित रहेंगे। इस प्रकार इन पापी राक्षसों ने कपट करते हुए पेट फाड़कर अनेक मुनिगणों को मार डाला है।

उन राक्षसों को शिवजी का वरदान प्राप्त था, अतरू उन्हें कोई भी ऋषि–मुनि के श्राप का प्रभाव नहीं होता था। यह सब बातें सुनकर अगस्त्य उठ गए और उन असुरों के घर (आश्रम) जा पहुँचे। तब पापी राक्षस इल्वल ने उठकर अगस्त्य ऋषि का आदर–सत्कार किया और अनेक प्रकार से उनकी पूजा भी की। तब वह बोला महाराज, अब आप अतिथि के रूप में हमारे आश्रम आज के दिन रहिए। ये फल और जल स्वीकार कीजिए और हमें पावन कर दीजिए। यह सुनकर तब महर्षि अगस्त्यजी ने कहा– मैं आज तुम्हें पावन करने के लिए ही आया हूँ।

तदनन्तर आतापि सुन्दर पका हुआ फल बन गया तो वातापि ने अगस्त्यजी को वहाँ जाकर वे फल प्रदान किए। तत्काल अगस्त्यजी ने उन फलों को खाकर पेट पर हाथ फेरने

लगे। उसी समय वह आतापि राक्षस अगस्त्यजी के पेट में जलने लगा। निश्चय ही आतापि की एक भी नहीं चली।

त्यारे वातापीए हांक ज मारी, बोल्यो उदरथी तेह,

मने जठराग्निमां बाली पचायो, तमने मारथे एह।

गुजराती गिरधर रामायण अरण्यकाण्ड अध्याय ६-१२

तब वातापि ने उसे पुकार ही लिया तो वह (आतापि) अगस्त्य ऋषि के पेट में से बोला- इस मुनि ने मुझे जठराग्नि में जलाकर पचा लिया है, वह तुम्हें मार डालेगा।

ऐसी बातें सुनकर वे दोनों राक्षस हाथों में शस्त्र लेकर उठ खड़े हो गए। तब हाथ में धनुष बाण लेकर युद्ध करते हुए मुनिवर अगस्त्य ने वातापि को मार डाला। तब इल्वल (इल्वण) यह जान गया कि अब महर्षि अगस्त्य उसे मार डालेंगे। अतरू वह धूर्त (छली-ठग) वहाँ से तत्काल भाग गया।

त्रिभुवनमां कोइए नहि राव्यों, अगस्त्य ऋषि नो चोर,

ज्याहां जाय त्यां मुनिवर पूंठे फरता-फरता जोर।

पछे असुर आवी सागरमां पेठो, जलरूपे थई एह,

मुनिवरे आवी माग्यो पण, नव काढी आप्यो तेह।

पछे कलशोद् भव क्रोधातुर थईने, उतार्यु अभिमान,

भरी अंजली मंत्र भणीकर्यु, सागरजलनुं पान।

गुजराती गिरधर रामायण अरण्यकाण्ड अध्याय ६-१५-१६-१७

अगस्त्य ऋषि के उस चोर राक्षस को तीनों लोकों में किसी ने अपने यहाँ आश्रय नहीं दिया फिर वह जहाँ तहाँ जाता वहाँ वहाँ वे मुनिवर बल प्रयोग करते और उसके पीछे-पीछे लगे रहते। तदनन्तर वह असुर आकर समुद्र में जलरूप लेकर प्रविष्ठ हो गया। तब मुनिवर ने आकर समुद्र से उसे माँगा किन्तु समुद्र ने इल्वल (उस असुर) को निकालकर नहीं दिया। महर्षि अगस्त्य ने क्रोध में आकर समुद्र के जल को पी डाला।

वह असुर (इल्बल) भी जलवत मुनि के पेट में आ गया। इस प्रकार तीनों राक्षसों का विनाश हो गया किन्तु अगस्त्यजी के ऐसा करने से समस्त समुद्र सूख गया और जलचर जीव प्यास से व्याकुल हो गए। तब सभी देवताओं ने एकत्रित होकर अगस्त्यजी से प्रार्थना की। तब कहीं जाकर कई दिनों के पश्चात् मुनि ने करूणा करके समुद्र को पानी से भर दिया।

इसलिए वह समुद्र खारा हो गया। उसमें मोती होते हैं। उसमें रत्न उत्पन्न होते हैं इसलिए समुद्र को रत्नाकर कहा गया है। अगस्त्यजी की यह महिमा अपार है। अगस्त्य मुनि की लीलाएँ इसके अतिरिक्त बहुत हैं।

हे राम, वे मुनि महोदय अपने भजन के प्रभाव से बड़े हो गए हैं। हे श्रीरघुराज, उन महर्षि अगस्त्य का वह आश्रम आ गया है। इस प्रकार अगस्त्यजी की कथा सुनकर श्रीराम-लक्ष्मण आनन्दित हो गए।

हम तुम्हें देखा करें

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
अलकापुरी कुर्सी रोड
लखनऊ - 226022

हे मनमोहन श्याम प्यारे हम तुम्हें देखा करें ,
तुम हमें देखो न देखो हम तुम्हें देखा करें।
हे श्रीपति चरणार्वृद में नारायण का जाप करें,
हे राधावर नन्द दुलारे हम तुम्हें देखा करें।

हे वनवारी रासरचौया लीला का नित ध्यान करें,
हे यशुदा के नयन के तारे हम तुम्हें देखा करें।
हे कंसारी जय असुरारी भय भक्तों का दूर करें,
हे वनमाली रसविहारी हम तुम्हें देखा करें।

हे द्रुपदी के लाज बचौया दुःख हमारे दूर करें ,
हे नय नागर हे मधुसूदन हम तुम्हें देखा करें।
हे यदुनंदन मुकुंद माधव दर्शन आठों याम करें,
हे वंशीवट गाय चरैया हम तुम्हें देखा करें।

हे गोकुलवर नागनथैया जगती का कल्याण करें,
हे गुण सागर नटवर नागर हम तुम्हें देखा करें।
हेप्रभु वासुदेव देवकीसुत कोटि नमन स्वीकार करें ,
हे दामोदर गोपीवल्लभ हम तुम्हें देखा करें।

हे गोविन्द भजे गोपालम हरिगुण का गुणगान करें ,
हे ब्रजभूषण लीलाधारी हम तुम्हें देखा करें।
हे करुणाकर मुरलीधारी जीवन नैया पार करें ,
हे कान्हा हे कृष्ण मुरारी हम तुम्हें देखा करें।

ईश्वर की विभूति

मनमोहन कालरा

निदेशक
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
नई दिल्ली, भारत सरकार

बात उन दिनों की है, जब मैं केन्द्रीय सचिवालय में किसी मंत्रालय में कार्यरत था। मेरे कार्यक्षेत्र में मंत्रालय का संसद से संबंधित काम था। यह काम बहुत ही जिम्मेवारी वाला, समयबद्ध और त्रुटिहीन होना चाहिए, अन्यथा मंत्री जी को संसद में आलोचना और अपमान झेलना पड़ सकता है और सम्बद्ध कर्मचारी को अकल्पनीय दंड। अपने काम के सिलसिले में मुझे उच्चाधिकारियों के पास जाना पड़ता था। मंत्रालय के प्रमुख प्रशासनाधिकारी के पास जब मैं जाता तो वह अक्सर कहा करते थे कि मनष्य ईश्वर की सबसे बड़ी विभूति है। उस को ईश्वर ने पृथ्वी पर पशु, पक्षी, पेड़–पौंधों आदि के संरक्षण एवं सेवा के लिए भेजा है। हर मनुष्य को रोज़ कोई शुभ कार्य करना चाहिए और किसी जरूरतमंद इंसान की मदद भी अवश्य करनी चाहिए। वह रोज़ाना मंदिर से होते हुए कार्यालय आया करते थे। माथे पर चन्दन का तिलक भी लगा होता था। दफ्तर मं काम शुरू करने से पहले अगरबत्ती जलाना कभी नहीं भूलते थे। मैं उनके बातों से बड़ा प्रभावित था।

एक दिन मेरे पास एक महत्त्वपूर्ण तारांकित प्रश्न आया जिसकी फाइल तैयार कर शाम तक मंत्री जी के पास अनुमोदन के लिए भेजनी थी। मुझे सुबह से हल्का बुखार महसूस हो रहा था। शाम में 7 बजे तक फाइल तैयार हुई और ऊपर भेज दी गई। मेरा बुखार 104 डिग्री हो गया था और बुखार में मुझे कंपकंपी हो रही थी। मैं लोधी रोड बस टर्मिनल गया वहाँ से आखिरी बस निकल चुकी थी और कोई स्कूटर भी नहीं था। उन दिनों फोन पर टैक्सी सेवा उपलब्ध नहीं थी। मैं वापस मंत्रालय आ गया। किसी ने बताया कि अभी उच्चाधिकारी ऑफिस में बैठे हैं। वह मुझे घर जाते समय सरकारी गाड़ी से केन्द्रीय सचिवालय के पास छोड़ दें, जहाँ से मुझे सीधी बस मिल सकती थी। उन अधिकारी का बंगला केन्द्रीय सचिवालय के पास था। मैंने राहत की सांस ली और भगवान का धन्यवाद किया। मैं उनके कमरे में गया। उन्हें स्थिति समझाकर उनसे निवेदन किया कि मुझे केन्द्रीय सचिवालय तक छोड़ दें। उन्होंने मुझे बताया – 'आज मेरी सरकारी गाड़ी वर्कशाप में ठीक होने गई है। आज मैं अपनी निजी गाड़ी में आया हूँ।' मैं उनका आशय नहीं समझा और चुप खड़ा रह गया। अब उनका अहं जाग उठा और उन्होंने कोधित होकर अंग्रेजी में कहा जिसका आशय था – 'आप की हिम्मत कैसे हुई। क्या मैं आपका ड्राइवर हूँ? आप अपना कोई दूसरा प्रबंध कर लीजिए।' आशा के बिल्कुल विपरीत उनका यह रूप देखकर मैं हक्का–बक्का रह गया और मैं मंत्रालय भवन से बाहर आ गया। ईश्वर की विभूति से निराश होकर मैंने सीधा ईश्वर से प्रार्थना की। तभी मुझे मंत्रालय का डाकवाहक डाक बांटकर वापिस आता हुआ दिखाई दिया। उसने वैन रोक ली और मेरे बारे में पूछा। मैंने अपना सारा हाल उसे कह सुनाया। मेरी खराब तबीयत के बारे में सुनकर वह सरकारी वैन को जल्दी पार्क करके अपना टू–व्हीलर स्कूटर ले आया। पहले मुझे तत्काल सी.जी.एच.एस. डिस्पेंसरी पंडारा रोड ले गया। डॉ. ने मेरी जांच कर दवाईयां दे दी। पास कहीं से चाय–पानी के साथ मुझे दवाई खिलाई और मुझे अपने स्कूटर से केन्द्रीय सचिवालय तक छोड़ने की जगह मेरे घर तक छोड़ दिया। मैं सोचता रहा ईश्वर की विभूति कौन है?

सेवा

एवं श्रेष्ठ मानव व्यवहार के योगदान की पृष्ठभूमि

दया शर्मा
शिलांग, मेघालय

सुबह उठते ही बेहद दुखद खबर सुनने को मिली कि पड़ोस में रहने वाले प्रकाश अंकल जी नहीं रहे। घरवालों को भी पता नहीं चला कि कब सोते हुए उनकी हृदय गति रुक गई।

अभी कल की ही तो बात है जब मैं अपने आफिस जाने के लिए बाहर निकल रही थी तो अंकल बरामदे में खड़े थे। तबीयत तो उनकी काफी दिनों से खराब ही चल रही थी फिर भी बरामदे आकर अक्सर टहलते और वहाँ से गुजरने वालों का हालचाल भी पूछते। अंकल मुझे देखकर बोले, 'अनु बेटा ऑफिस से लौटते वक्त मेरे लिए आधा किलो सेव लेते आना बहुत दिनों से खाने की इच्छा हो रही है' उन्होंने मुझे पैसे देते हुए कहा। 'नहीं अंकल आप पैसे रखिये मैं आपके लिए सेव लेती आऊंगी।' कह कर मैंने अंकल को पैसे लौटा दिए ।

ऑफिस से लौटने के बाद मैंने माँ से कहा कि वे मेरे लिए खाना निकालें तब तक मैं अंकल को सेव दे कर आती हूँ। मैं एक किलो सेव लेकर उनको देने के लिए गई। घर के अंदर घुसते ही सामने उनकी बहु मिल गई हाथ में बैग देखते ही बोली, 'अनु ये क्या लेकर आई हो?' 'भाभी अंकल के लिए सेव लेकर आई हूँ' मैंने जवाब दिया। 'इन्होनें ही तुम्हें लाने के लिए कहा होगा' फिर ससुर की तरफ देख कर बोली 'पड़े-पड़े खाने की आदत जो हो गई है अपने स्वास्थ्य का तो ख्याल रखते नही ये भी नही जानते कि इनके पीछे सबको कितना कष्ट उठाना पड़ता है। जब हम इतनी मंहगी दवाईयां आपके लिए ला सकते हैं तो सेव के लिए भी बोला होता दूसरों के सामने हमें शर्मिन्दा करने की क्या जरूरत है। सुनो अनु फिर कभी ये कुछ लाने के लिए बोलें तो सीधा मुझे कहना। 'नही भाभी आप गलत समझ रही हैं । ये सेव तो मैं अपनी खुशी से अंकल के लिए लाई थी' यह कहकर मैंने अंकल को देखा जो भीगी आँखें लिए दूसरी तरफ देख रहे थे। यह कह कर मैं तुरंत वहाँ से निकल आई। घर आकर जब माँ को सारी बात बताई माँ ने मुझे ही फटकार लगाते हुए कहा 'जब तुम्हें नीरा (भाभी) की आदत का पता है तब क्या जरूरत थी उसके सामने देने की। 'बात भी सही थी इस बात का तो मुझे ख्याल ही नही रहा। मन बहुत खराब हो चुका था। माँ से भूख नही है कह कर खाना भी हटवा दिया। सुबह जब से इस दुखद समाचार को सुना है तब से कल की घटना दिमाग में घूम रही है। कुछ समय बाद जब मैं वहाँ पहुँची तो नीरा भाभी हर आने जाने वालों को घड़ियाली आँसू बहाते हुए कह रही थी 'हमने तो पिताजी की सेवा व उनके अच्छे से अच्छे इलाज में कोई कमी नही रखी फिर न जाने ऐसा क्या हो गया। 'फिर नीरा भाभी मेरी तरफ देखते हुए बोली, 'अनु, तुम तो खुद देखती थी न हमलोग पिताजी का कितना ख्याल रखा करते थे। 'अब मैं क्या कहती। घर के दूसरे कमरे में नजर पड़ी तो पाया कि वहाँ नीरज भैया हाथों से मुँह ढ़क कर सुबक रहे थे और दोनों बेटे उनको चुप करा रहे थे।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

शिक्षा का उद्देश्य

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

कहते हैं विद्यालय शिक्षा अर्जन करने का पावन मंदिर है, जहां से व्यक्ति विशेष के समन्वित विकास की प्रक्रिया शुरू होती है। एक अशिक्षित व्यक्ति के लिए बिखरे अक्षर से लेकर क्रमशः संवरे–सिमटे शब्द और वाक्य महज चंद लकीरें ही तो होती हैं। परंतु एक बार बौद्धिक क्षमता से भरा हुआ मन फिर से अंधकारमय नहीं हो सकता है। स्पष्ट है कि शिक्षा और इसके महत्व से समाज का कोई भी पहलू अछूता नहीं है, यह तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–1966) की निम्नलिखित पंक्तियां भी तो इसी ओर हमारा ध्यान दिला रहीं हैं कि "शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है। शिक्षा राष्ट्रीय संपन्नता एवं राष्ट्र कल्याण की कुंजी है।"

विश्व शिक्षक दिवस जिसे अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में भी जाना जाता है। प्रत्येक वर्ष 5 अक्टूबर को दुनिया भर के शिक्षकों को सम्मान देने के लिए विश्व शिक्षक दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन द्वारा 5 अक्टूबर 1994 को इस विशेष दिवस का उद्घाटन किया गया। इस संगठन के सदस्य एक जन जागरूकता अभियान के माध्यम से विश्व शिक्षक दिवस मनाते हैं जो शिक्षण के पेशे के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालने का काम करते हैं। यह दिन छात्रों, अभिभावकों और संगठन के सामुदायिक सदस्यों को शिक्षकों के लिए अपनी प्रशंसा और समाज पर उनके द्वारा किए गए सकारात्मक प्रभाव को दिखाने की कोशिश करता है। कह सकते हैं कि इस दिन का उद्देश्य ष्दुनिया के शिक्षकों की प्रशंसा, उनके सम्मान, उनका मूल्यांकन और उनके सुधारष पर ध्यान केंद्रित करना है। यह विशेष दिन शिक्षकों और शिक्षण से संबंधित मुद्दों पर विचार करने का एक अवसर प्रदान करता है।

भारत के संदर्भ में अगर हम गंभीरता से विचार कर पाएं तो पाएंगे कि अगर शिक्षा का उद्देश्य मानव समाज का निर्माण करना है तो क्या हम जिस समाज में रह रहे हैं, वह संपूर्ण रूप से ऐसा मानव समाज है क्या ? शायद नहीं। और तो और विडंबना यह है कि हमें इसी उत्तर से संतुष्ट होना पड़ता है और यह अवस्था ही शिक्षा की विकृति है। यह सही है कि शिक्षा का उपयोग करने से इंकार करना किसी भी व्यक्ति को एक संपूर्ण इंसान बनने में बाधा पैदा कर सकता है। इसलिए परिवार, समाज और देश को बड़े स्तर पर ले जाने के लिए मानव के हर स्तर पर शिक्षा की महत्ता को आंकना बहुत आवश्यक है। और ऐसा तब तक नहीं हो पाएगा जब तक प्राप्त ज्ञान का हस्तांतरण करने का प्रयास नहीं किया जाएगा। इसलिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो इसके लिए व्यापक जागृति लाने की जरूरत है तभी हमारी प्राप्त शिक्षा अर्थवान है अन्यथा नहीं। कहा भी गया है कि "शिक्षा का उद्देश्य मात्र बौद्धिक स्वाधीनता नहीं है, इसका उद्देश्य हृदय और अन्तःचेतना की मुक्ति है।

शिक्षा अपने आप में गतिमान प्रक्रिया है। दरअसल शिक्षा नित प्रति अपने इर्द गिर्द उपस्थित चीजों को सीखने की एक निरंतर प्रक्रिया ही तो है। यह तो हमें किसी भी विषय वस्तु या उपस्थित परिस्थिति को आसानी से समझने, जीवन में आए किसी भी तरह की समस्या से निपटने और जीवन पर्यन्त विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है। मतलब स्पष्ट है कि शिक्षा हमें सिर्फ ज्ञान ही नहीं देता है बल्कि उसके सही उपयोग से हमें सरल और सहज जीवन प्रदान करता है, साथ ही समझदार और स्वस्थ समाज के निर्माण में मददगार भी साबित होता है। इसलिए यह सही है कि दुनिया भर के लोगों के अस्तित्व और जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण यंत्र है।

राधा की प्रेम भक्ति

समीर उपाध्याय 'ललित'
जिला सुरेन्द्रनगर, गुजरात

एक बार स्वर्ग लोक में विचरण करते हुए ब्रह्मा, विष्णु और महेश की कृष्ण के साथ मुलाकात हुई। कृष्ण को अपने हाथों में कुछ छिपाते हुए देखकर ब्रह्मा जी बोले– 'हे लीलाधर! आप क्या छिपा रहे हैं?'

कृष्ण– 'मेरे हाथ में आप जो मटकी देख रहे हैं उसमें थोड़ी–सी छाछ लेकर आया हूँ। बड़ी मुश्किल से मिली है।'

विष्णु– 'हे लीलाधर! आप तो प्रेमावतारी, युगावतारी, योगावतारी और पूर्णपुरुषोत्तम है। मिट्टी की इस लघु मटकी में आप छाछ छिपा रहे हैं तो यह बड़ी अनमोल होगी। क्या एक घूँट भी हमें नहीं पिला सकते?'

कृष्ण– 'आप सब स्वर्ग लोक में प्राप्य अमृत पी सकते हैं, किंतु राधा ने दी हुई छाछ को तो मैं ही पीऊँगा। यह छाछ आपके भाग्य में नहीं है।'

महेश– 'हे लीलाधर! इस छाछ में ऐसी कौन सी बात है जो हम इसे नहीं पी सकते?'

ब्रह्मा– 'हे लीलाधर! क्या यह छाछ अमृत से भी बढ़कर है? अमृत से बढ़कर इस दुनिया में और कौन–सी वस्तु हो सकती है?'

देवताओं के मुख से यह बात सुनकर कृष्ण की आँखों में अश्रु की धारा बहने लगी और भावविभोर होकर बोले– 'आप क्या जाने इस मटकी भर छाछ को पाने के लिए मुझे राधा के सामने नाचना पड़ा है। जब मैं उसके इशारे पर नाचा हूँ तब जाकर मुझे यह छाछ मिली है। यह छाछ तो मेरे लिए अमृत से भी बढ़कर है। इस छाछ में राधा के दिव्य प्रेम की मिठास है।'

महेश– 'कुछ तो जादू होगा इस छाछ में जिसे पाने के लिए लीलाधर को राधा इशारों पर नाचना पड़ा।'

सभी देवगण गहरी सोच में पड़ गएं। सचमुच जहाँ राधा जैसा निस्वार्थ, निष्काम और निर्विकार प्रेम होता है वहाँ परमात्मा वशीभूत होकर दौड़े चले आते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश एक साथ बोल उठे– ष्राधा रानी की प्रेम भक्ति को शत–शत नमन, शत–शत नमन, शत–शत नमन।

गोवर्धन पूजा

'गोवर्धन पूजा' हिन्दुओ का प्रसि) त्यौहार है। यह सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है। प्रत्येक साल यह त्यौहार दिवाली के अगले दिन मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा को भारत के कुछ हिस्सों में "अन्नकूट पूजा" के रूप में भी जाना जाता है यह दिन उत्तर भारत से लेकर साउथ इंडिया तक बड़ी ही धूमधाम से मनाया जाता है।

गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है की गाय उसी प्रकार पवित्र होती है जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरुप भी कहा गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृ) प्रदान करती है उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती है।

हिन्दू कैलेंडर में गोवर्धन पूजा एक शुभ दिन है और हर वर्ष मनाया जाता है। लोग भगवान श्री ष्ण की मुर्तिया बनाते है और विभिन्न प्रकार के भोजन और मिठाइयां परोसते है। महिलाए इस दिन पूजा– पाठ करती हैं और भजन गाती है और वे गायों को भी माला पहनाती हैं और उन पर तिलक लगाती हैं और उनकी पूजा भी करती हैं।

इस दिन लोग अपने घर के आंगन में गाय के गोबर से एक पर्वत बनाकर उसे जल, मोली, रोली, चावल, फूल दही तथा तेल का दीपक जलाकर उसकी पूजा करते हैं। इसके बाद गोबर से बने इस पर्वत की परिक्रमा लगाई जाती है।

इसके बाद ब्रज के देवता कहे जाने वाले गिरिराज भगवान को प्रसन्न करने के लिए उन्हें अन्नकूट का भोग लगाया जाता है।

अर्चना शर्मा
अकलतरा, जिला जांजगीर–चाम्पा
छत्तीसगढ़

लड़का ही क्यों ?

वाढेकर रामेश्वर महादेव
जिला सुरेन्द्रनगर, गुजरात

गाँव में सामाजिक परिवर्तन किस तरह से किया जा सकता है, इस संदर्भ में उच्च शिक्षित लड़कों में चर्चा हो रही थी, उसी समय जोर से आवाज आई– 'जीत बेटा जल्द घर आना, काम है तुमसे'माँ ने कहा।

जीत घर दौड़ते–दौड़ते आया, ओर कहने लगा–'बताइए माँ क्या काम है?'

'जीत, पढ़ाई कब तक करनी है?' माँ ने पूछा।

'माँ मुझे बहुत पढ़ना है, सिर्फ नौकरी के लिए नहीं, समाज परिवर्तन के लिए' जीत ने कहा।

'बेटा, पढ़ाई बहुत हुई है तेरी, अब तू डाक्टर बना है साहित्य का' माँ ने कहा।

हाँ, सही है माँ, लेकिन मुझे ओर पढ़ना है, लिखना है। स्त्री समस्या समाज के सामने लानी हैं और समाज सेवा भी!

'तुझे जो करना है वह कर, उसके पहले विवाह कर' माँ ने कहा।

इतना जल्द विवाह, संभव नहीं माँ, मुझे समय चाहिए।

बेटा जीत, मेरी अब उम्र हुई है और हम देहात में रहते है, जल्द विवाह नहीं किया तो समाज ताने मारेगा।

'मुझे कौन लड़की देगा माँ ? मेरे पास क्या है? न नौकरी न घर' जीत ने गंभीर स्वर में कहा।

'तेरे पास शिक्षा है, मेहनत करने की क्षमता भी ओर क्या चाहिए तुम्हें ?' माँ ने कहा।

ठीक है माँ, मैं विवाह करने के लिए तयार हूँ किन्तु मुझे पढ़ी,लिखी लड़की चाहिए।

'पढ़ी, लिखी लड़की है मेरे नजर में' माँ ने आनंदित होकर कहा।

'कौन– माँ?' जीत ने उत्साहपूर्ण भाव से पूछा।

आशा। नाम की तरह जिंदगी में आशावादी है ओर निरंतर रहेगी ।वह गरीब परिवार से है किन्तु संस्कारी। वह मेरी बहू बनने के लिए पात्र है। उसकी शिक्षा स्नातकोत्तर तक हुई है। दोन्हों के विचार भी मिलेंगे। लड़की को देखने के लिए जल्दी जा, जीत।

देखने की जरूरत नहीं है माँ। आप को पसंद हैं,तो मुझे भी। विवाह का मुहूर्त निकाल दीजिए।

विवाह का मुहूर्त निकला। जीत और आशा का विवाह धूमधाम से हुआ। जिंदगी की नई शुरुआत हुई। एक दूसरे से प्रेम बढ़ता गया। सुख, दु:ख के साथ विवाह को तीन साल पुरे हुए।

एक दिन जीत ने कहा–'आशा विवाह होकर तीन साल हुए,अब मुझे लड़का चाहिए।'

'जल्द ही खुशखबरी दूंगी तुम्हें। लेकिन आप को लड़का ही क्यों चाहिए?'आशा ने पूछा।

'घरानों का नाम चलाने के लिए' जीत ने कहा।

'घरानों नाम , सिर्फ लड़का चलता है, यह धारणा सरासर गलत है, लड़की तो दो घरानों का नाम चलाती है, ससु. राल और मायके का' आशा ने कहा।

'मतलब, मैं नहीं समझा' जीत ने कहा।

तो सुनो जीत,'किसी लड़की का विवाह होता है, वह कालांतर से नौकरी के लगती है, तो वह पहले मायके का सरनेम लगाती है और बाद में ससुराल का।'

'तब भी मुझे सिर्फ लड़का चाहिए, मुझे ही नहीं तो मेरे माँ को भी लड़का ही चाहिए' चिल्ला कर जीत ने कहा।

आखरि क्यों जीत? बुढ़ापे की चिंता सताती है क्या तुम्हें? वर्तमान में ज्यादातर लड़कियां ही मां, बाप का सहारा बन रही हैं, उनकी देखभाल कर रही हैं। बहुत से लड़के माँ, बाप को अनाथ कर रहे हैं ओर बाद में आश्रम में डाल रहे हैं, यह वास्तव परिस्थिति तुम्हें स्वीकारनी होगी।

'आप पढ़े, लिखे होकर भी ऐसी बातें कर रहे हो जीत, यह शोभा नहीं देता । आप तो समाज सेवा करते हैं ओर विचार ऐसे...!'

'मुझे प्रेगनेंट रहकर चार माह हुए जीत लेकिन मैंने आप को बताया नहीं' आशा ने शांत आवाज में कहा।

'अच्छा, कोई बात नहीं। हम कल चेकअप

कर लेते है, समझ आएगा लड़का है या लड़की' जीत ने कहा।

'चेकअप तो बंद है' आशा ने कहा।

'पैसों से सब कुछ होता है, प्राइवेट अस्पताल में। चल, काम हो जाएगा' जीत ने कहा।

अस्पताल में चेकअप हुआ, आशा को रूम से बाहर निकाल दिया और जीत को सब बातें बताई गई। अस्पताल के बाहर जीत आने के बाद आशा ने पूछा–'क्या हुआ जीत? डाक्टर साहब ने क्या कहा?'

जीत ने कहा–'जो नहीं होना था वही हुआ।'

मतलब, जीत।

'लड़की है' जीत ने दु:ख भरे स्वर में कहा।

यह किसी के हाथ में नहीं है जीत। लड़की को हम अच्छी तरह पढ़ाएंगे।

'नहीं! नहीं!! गर्भ गिराना होगा' जीत ने तिरस्कार भाव से कहा।

मैं नहीं गिराऊंगी जीत । लड़का या लड़की होना तो पुरुष पर निर्भर रहता है, इसमें स्त्री का क्या दोष ? तब भी स्त्री को दोषी ठहराया जाता है।

'तुझे घर छोड़ना पड़ेगा, आशा' जीत

ने कहा।

मैं कुछ भी करूंगी किन्तु लड़की को जन्म देकर रहूंगी जीत । वह अपने गांव के तरफ गई। वहां, परिवार वाले स्वीकार ने के लिए तैयार नहीं थे। सब स्वार्थी बन गए थे। सब अपने कार्य में व्यस्त थे। मां, बाप का लड़कों के सामने कुछ नहीं चला। आशा दिन भर गांव में घूमती रही । उसी समय सुमन की नजर आशा पर पढ़ी ओर उसने कहा– 'कब आई आशा?'

'आज ही आई हूँ' आशा ने कहा।

'तुम्हारे घर क्यों नहीं गई?' सुमन ने पूछा।

'मेरा कोई घर नहीं रहा, न ससुराल का न मायके का । मैं बेघर हूँ बेघर...! भाई कहते है कि तुम्हारा विवाह हुआ, तुम्हारे अधिकार खत्म हुए यहां के। ओर पति कहता है , मेरे घर में मत रहना। मैं करू तो क्या करू?' निराश भाव से आशा ने कहा।

डरना मत आशा, मैं तुम्हारे साथ हूँ। मेरे घर चल, वह घर तेरा समझ ओर मुझे माँ।

'मैं आती हूँ लेकिन शर्त पर' आशा ने कहा।

'कौन–सी शर्त?' सुमन ने पूछा।

मैं आप के घर के पास रहूंगी, आप के घर में नहीं। मैं तुम पर बोझ नहीं बनना चाहती।

'जो तुझे सही लगे वह कर' सुमन ने कहा।

आशा मेहनत करती रही, खुद के पैरों पर खड़ी हुई। देखते–देखते समय बीत गया और नौ माह पुरे हुए। एक दिन रात को आशा को बहुत तकलीफ होने लगी । आवाज सुनकर सुमन उसके पास गई ओर पूछने लगी– 'क्या हुआ आशा?'

आशा ने कहा–'मुझे बहुत तकलीफ हो रही

है, मुझे अस्पताल लेकर चल, प्राइवेट नहीं सरकारी अस्पताल।'

सुमन ने कहा–'सरकारी अस्पताल में डाक्टर साहब ध्यान नहीं देते। मेरे पास पैसे है, प्राइवेट अस्पताल चलेंगे।'

'नहीं, सरकारी अस्पताल में ही' आशा ने जोर से कहा।

रात के बारह बजे अस्पताल जाने में। वहाँ कोई नहीं था। नर्स थी, वह भी अच्छी तरह बात नहीं कर रही थी। डाक्टर साहब को फोन लगाने के बजाय जोर, जोर से कहने लगी– 'तुझे यही समय मिला क्या आने के लिए? नींद खराब की। खुद भी सुकून से नहीं जीती और दूसरे को भी नहीं जीने देती।'

यह सुनकर सुमन को बहुत गुस्सा आया। उसने बहुत गालियां दी,तब भर्ती कर लिया।

सुमन कहने लगी –'आशा, लोग इस तरह बर्ताव क्यों करते है?'

आशा ने कहा–'जाने दो सुमन, छोटी, छोटी घटनाएं होती रहती है। किन्तु डाक्टर साहब कब आ जाएंगे, मुझे दर्द हो रहा है।'

सुमन ने कहा–'धीरज रख, जल्द आ जाएंगे।'

'मुझे शौचालय के लिए जाना है, मुझे लेकर चल भला' आशा ने कहा।

'यहाँ तो शौचालय नहीं है, कहाँ जाएंगे रात के समय?' सुमन ने कहा।

अस्पताल के बाहर चल सुमन, शौचालय तो जाना ही पड़ेगा ।सरकारी अस्पताल है, इतना तो कष्ट झेलना होगा ।यहाँ पैसे भी कम लगते है...

सुमन ने कहा–'आशा, क्या सरकार उन्हें पैसा नहीं देती, बहुत फंड देती है किन्तु सब मिलबाटकर खाते हैं। सुविधा कुछ नहीं करते। इस कारणवश यह दिन देखने को मिल रहे है। डाक्टर साहब सरकार का पगार लेते है और खुद के प्राइवेट अस्पताल में रहते हैं। उन्हें सरकारी अस्पताल में आने के लिए समय नहीं।

सुमन बस हुआ भाषण, चल जल्दी अस्पताल के अंदर। शौचालय से आने के बाद थोड़ी देर के लिए अच्छा लगा, बाद में दर्द ओर बढ़ा। दर्द सहते, सहते सुबह हुई, तब भी डाक्टर साहब नहीं आए थे। कुछ समय बाद नर्स की आवाज सुनाई दी, डाक्टर साहब सुबह आठ बजे तक आ जाएंगे।

डाक्टर साहब को आते हुए देखकर सुमन ने कहा–ष्आशा अंदर चल, मैं नर्स को बुलाती हूँ।नर्स को बहुत आवाज दी, वह आने के लिए तैयार नहीं क्योंकि उन्हें पैसों की लालसा थी।ष

नर्स ने धीरे आवाज में कहा–'मुझे पाँच सौ रुपये चाहिए, तभी मैं आशा को अंदर लेकर जाऊंगी।'

सुमन कहने लगी–ष्क्या समय आया है, किसी को किसी व्यक्ति की कीमत नहीं है। सब पैसों के पीछे पड़े हैं , यह कहकर पाँच सौ रूपये दिए।'

आशा को अंदर लेकर जाने के बाद बहुत तेजी से तकलीफ शुरू हुई ,खून कम होने के वजह से। दो–तीन घंटों बाद अंदर से आवाज आई–'लड़की हुई है लड़की, बाहर कोई रिश्तेदार हो तो अंदर आइए। वहाँ खून के रिश्तेदार कोई नहीं थे, सुमन दौड़ते, दौड़ते गई ओर आशा को वार्ड में लेकर आई।

आशा को होश आया ओर वह कहने लगी–'मेरी बेटी कैसी है?सब ठीक ठाक है न....

'हाँ,सब ठीक ठाक है' सुमन ने कहा।

आशा ने कहा–'पति, सास, भाई, माँ, बाप आदि में से कोई मिलने आया है क्या?'

सुमन ने कहा–'मैं हूँ न, तुझे किसी की जरूरत नहीं।'

हाँ,वह तो मुझे समझ आया सुमन, तु ही मेरे लिए सब कुछ है। अब मैं मेरी बेटी को लेकर दूर चली जाऊंगी, दूसरे गाँव, शहर में। बेटी ही मेरा सब कुछ है। मैं कभी हार नहीं मानूंगी, जान भी नहीं दूंगी। उसे बहुत पढ़ाऊंगी और स्वावलंबी बनाऊंगी। ओर उसे अन्याय के विरुद्ध लढ़ने के लिए सक्षम बनाऊंगी।

जय गिरजासुत गौरीनन्द

कालिका प्रसाद सेमवाल
उत्तराखंड

जय जय गिरिजासुत गौरीनन्द
जय–जय बुद्धि–विधाता,
जय लम्बोदर शंकर –सुअन
जय–जय जगत्राता।

सिद्धि प्रदाता तुम हो गणपति
जो तेरी शरण में आता,
सुख–सम्पद सब वैभव पाता
चारों फल पा जाता।

मोदकप्रिय सिन्दूर सिर सोहत
कार्तिक है तुम्हारे भ्राता,
मूस सवारी, पिता त्रिपुरारी
पार्वती है मात तुम्हारी।

जग–दुखहर्ता जन–सुखकर्ता
तुम हो मंगल के दाता,
रक्षाकरो गणपति हे जगत की
हे सुख शुभ शांति विधाता।

मेरी अभिव्यक्ति

कविताएं / लघु कथाएं लिखो

पुरस्कार जीतो

सीमित संख्या

प्रथम पुरस्कार
₹11000/-

द्वितीय पुरस्कार
₹5100/-

तृतीय पुरस्कार
₹2500/-

प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि

15 नवंबर 2022

info@gssfoundation.org
74154 10516

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
GORAKSH SHAKTIDHAM SEVARTH FOUNDATION
अध्यात्म | शिक्षा | संस्कृति

www.gssfoundation.org
पंजीकरण फॉर्म साइट पर उपलब्ध है।